अपारशक्ति खुराना भाई आयुष्मान की राह पर

सजग सरस युवा पत्रिका

सितंबर 2021 ₹ 30.00

मुक्ता

J

फ्लर्टिंग करिए खुश रहिए

नए कपड़े पहनते समय रखें ध्यान

इंजीनियर बन कर भी हैं युवा बेरोजगार

औनलाइन गेम्स का जंजाल

मुझे बोल्ड सीन करने से कोई परहेज नहीं वामिका गब्बी

स्टाइल औफ द मंथ

VISIT…

LANZAROTE
Caliente.COM

Piramal
TETMOSOL®
नया
टेटमोसॉल डस्टिंग पाउडर रोज़ लगाना,
मतलब त्वचा के संक्रमण^ को दूर भगाना.
त्वचा के संक्रमण
घमोरियां
खुजली
से राहत दे
TETMOSOL® DUSTING POWDER
Skin Infection Expert^
ANTI-FUNGAL
Fights Skin Infections
TRIPLE SKIN BENEFITS
Controls Itching
Fights Prickly Heat
100 g
Piramal
CMAC - TP/20210301-03

नज़दीकी मेडिकल स्टोर्स पर उपलब्ध।

☎ 1800 22 9898 ✉ consumercare@piramal.com

^टेटमोसॉल डस्टिंग पाउडर का उपयोग फंगल इन्फेक्शन के लिए किया जाता है। यदि संक्रमण तथा खुजली जारी है तो डॉक्टर की सलाह ले। इन्फेक्शन की संभावना बनी रहने तक डस्टिंग पाउडर लगाएं। परिणाम व्यक्तियों के बीच भिन्न हो सकते हैं। आवेदन और अन्य निर्देशों के लिए पैक देखें।

मुक्ता

सितंबर 2021 अंक : 1000

लेख

इंजीनियर बन कर भी हैं युवा बेरोजगार 4
नए कपड़े पहनते समय रखें ध्यान 6
फ्लर्टिंग करिए खुश रहिए 17
प्यार जताने से बढ़ती है रिश्तों की महक 26
प्यार में जरा संभल कर 32
औनलाइन गेम्स का भयावह जंजाल 38
टोक्यो ओलिंपिक 44
टोक्यो पैरालिंपिक में चमके खिलाड़ी 45

बातचीत

अभिनेत्री वामिका गब्बी 35

कथा साहित्य

विद्रोही 10
दो दूनी चार 14
क्यों 18

स्तंभ

मुक्त विचार 9
प्रेम समस्याएं 23

फीचर

Style of the month 28
वैब सीरीज रिव्यू : क्या देखें 30
बौलीवुड buzz 40
Small screen 46

कविता

दो मुट्ठी आसमान 8
तेरा नाम 8

दिल्ली प्रैस
सामाजिक क्रांति की पत्रिकाएं
संस्थापक : विश्वनाथ
(1917-2002)
33 पत्रिकाएं 10 भाषाएं

रचनाओं, स्तंभों व संपादक को पत्रों के लिए ईमेल :
editor@delhipress.biz
8527666772
निमंत्रणों प्रैस सूचनाओं के लिए ईमेल :
invities.pressrelease@delhipress.biz
ग्राहक विभाग के लिए ईमेल :
subscription@delhipress.in

संपादक व प्रकाशक : परेश नाथ

मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय :
दिल्ली प्रैस भवन, ई-8 झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

अन्य कार्यालय : ● 31 ग्राउंड फ्लोर, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, **अहमदाबाद**-380009. फोन : 079-26577845 ● ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, जी.डी. अंबेडकर मार्ग, **वडाला**-400021. फोन : 022-24122661 ● 11, फर्स्ट फ्लोर, बालप्पा गार्डन, शिवाजी नगर, **बेंगलुरु**-560051. फोन : 080-42013076 ● 14, पहली मंजिल, सीसंत कौंप्लैक्स, मांटेअप रोड, **चेन्नई**-600008. फोन : 044-28554448 ● 122, पहली मंजिल चिनाय ट्रेड सैंटर, 116, पार्क लेन, **सिकंदराबाद**-500003. फोन : 040-27896947, 27841596 ● जी-7 पायोनियर टावर्स, 1 मैरीन ड्राइव, **कोच्चि**-682031. फोन : 0484-2371537. ● 16 ए, अमृत बनर्जी रोड, पहली मंजिल, कालीघाट, नजदीक बासुश्री सिनेमा **कोलकाता**-700026. ● 12, ग्राउंड फ्लोर, आशियाना टावर्स, एग्जीबिशन रोड, **पटना**-800001. फोन : 0612-2323840 ● फ्लैट नं. बी-जी/3,4 सप्रू मार्ग, **लखनऊ**-226001. फोन : 05222618856 ● गीतांजली टावर, शौप नं. 114, (डाक्टर व्यास अस्पताल के सामने) अजमेर रोड, **जयपुर**-302006. ● बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क कालोनी 80 फुट्या रोड, पीछे अशोका गार्डन थाना, **भोपाल**-462023. फोन : 0755-2759853, 2573057.

दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन पीटीई लिमिटेड की बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. मुक्ता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.

दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएस पीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 में मुद्रित.
संपादक : परेश नाथ.

वार्षिक मूल्य केवल चैक/ड्राफ्ट/मनीऔर्डर द्वारा ही 'दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड' के नाम से ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते.
Ph.: 91-41398888, Extn. No. 119,221,264.
(Mon to Sat 10 am to 6 pm)
Mobile/SMS/Whatsapp: **08588843408**
Email : subscription@delhipress.in

COPYRIGHT NOTICE
© Delhi Press Patra Prakashan Private Ltd., New Delhi-110055, INDIA. No article, story, photo or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission.

मूल्य : एक प्रति 30.00. एक/दो वर्ष : ₹360/720. विदेशों में मूल्य : एक प्रति : 0.47 (डाक व्यय अतिरिक्त)

International Subscription Price Air mail Charges		Express Delivery Europe & South America		Express Delivery SAARC Countries		Express Delivery Rest of Countries		*(All the Prices given are in US$)*
1 year	50	1 year	210	1 year	120	1 year	140	
2 year	95	2 year	420	2 year	240	2 year	275	

लेख • शैलेंद्र सिंह

सरकार की गलत नीतियों के चलते देश में इंजीनियरिंग की पढ़ाई किए लाखों छात्र बेरोजगार हैं. उन्हें नौकरी मिली भी तो आधेपौने वेतन पर. इंजीनियरिंग सैक्टर का यह हश्र और घटती युवाओं की दिलचस्पी कहीं देश के लिए घातक न साबित हो.

इंजीनियर बन कर भी हैं युवा बेरोजगार

इंजीनियरिंग को देश की प्रगति का हिस्सा माना जाता है. अगर देश में इंजीनियर बड़ी संख्या में बेरोजगार हों तो देश की प्रगति का अंदाजा लगाया जा सकता है. यह हालत उस समय है जब यह कहा जाता है कि देश विश्वगुरु बनने की दिशा में सब से आगे है. बिना इंजीनियरिंग सैक्टर के देश विश्वगुरु कैसे बनेगा, यह सोचने वाली बात है.

नोटबंदी, जीएसटी, कोरोना और केंद्र सरकार की गलत आर्थिक नीतियों के कारण कंस्ट्रक्शन, आईटी, कंप्यूटर और औटोमोबाइल सैक्टर बुरी तरह से प्रभावित हुए. इन के प्रभावित होने का सब से बड़ा प्रभाव इंजीनियरिंग सैक्टर पर पड़ा. इंजीनियरिंग करने के बाद भी छात्रों को नौकरियां नहीं मिल रहीं. सैलरी का पैकेज कम हो गया. कम होते जौब और सैलरी पैकेज के लिहाज से हौट केक कहा जाने वाला इंजीनियरिंग सैक्टर आज अपने सब से बुरे दौर में पहुंच गया है. 7 सालों में बीटैक की सिर्फ 51 फीसदी सीटें रह गईं. पढ़ेलिखे इंजीनियर अब सरकारी चपरासी बनने की होड़ में आवेदन करने लगे हैं.

हर मांबाप की एक इच्छा होती थी कि उन का बेटा पढ़लिख कर आईएएस, डाक्टर या इंजीनियर बने. अगर बेटा है तो इंजीनियर और अगर बेटी है तो डाक्टर बने. आईएएस बनने में लंबा समय लगता था. डाक्टर बनने में भी एमबीबीएस के बाद एमडी और दूसरे

कोर्स करने के बाद ही अच्छे डाक्टर बन सकते थे. ऐसे में सब से अच्छा इंजीनियर बनना होता था. 12वीं पास करने के बाद 4 साल का बीटैक करने के बाद अच्छी नौकरी मिल जाती थी. कम से कम 8 से 10 लाख रुपए सालाना पैकेज मिल जाता था. ऐसे में इंजीनियर बनना ही समझदारी मानी जाती थी.

इंजीनियरिंग पढ़ने वालों की संख्या बढ़ने लगी तो इंजीनियरिग पढ़ाने वाले कालेज पूरे देश में कुकरमुत्ते की तरह उग आए. जिन बच्चों को आईआईटी और एमएनआईटी जैसे कालेजों में एडमिशन नहीं मिलता था, वे प्राइवेट कालेजों में पढ़ाई कर के इंजीनियर बनने लगे. प्राइवेट कालेजों में 4 साल की पढ़ाई में 8 लाख से ले कर 12 लाख रुपए तक का खर्च आने लगा. इतने पैसों का इंतजाम बहुत सारे पेरैंट्स करने लगे. पेरैंट्स को लगता था कि एकदो साल की सैलरी में पूरी पढ़ाई का खर्च निकल आता है.

सरकारी चपरासी से भी कम हो गया वेतन

2014–15 के बाद इंजीनियरिंग की जौब में गिरावट शुरू होने लगी. इंजीनियरिंग में सब से अधिक जौब कंस्ट्रक्शन सैक्टर, आईटी सैक्टर, कंप्यूटर सैक्टर और औटोमोबाइल सैक्टर में थे. इन सभी सैक्टरों में गिरावट के कारण इंजीनियरिंग का जौब संकट के दौर में आ गया है. इस के कारण इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करने के बाद भी जौब नहीं मिल रहा. जो जौब मिल रहा है उस में सैलरी का पैकेज मात्र 3 लाख रुपए का हो गया है.

इंजीनियरिंग के मुकाबले ग्रेजुएट कर के 2 साल बीएड करने के बाद बच्चा टीईटी टीचर्स इलिजिबिलिटी टैस्ट पास कर स्कूल टीचर्स बन सकता है. सरकारी टीचर्स बनने पर 50 हजार रुपए मासिक वेतन मिलने लगता है. वहां प्रमोशन भी होता है. यही नहीं, जौब सुरक्षा की भी गारंटी होती है. इस की पढ़ाई में खर्च कम आता है. बीएड की 2 साल की पढ़ाई में 50 हजार से 1 लाख रुपए का खर्च आता है. ऐसे में अब इंजीनियर बन कर भी बेरोजगार युवाओं की संख्या बढ़ती जा रही है. ऐसे में ये बेरोजगार इंजीनियर सरकारी चपरासी की नौकरी के लिए भी आवेदन करने में पीछे नहीं रह रहे.

बढ़ती बेरोजगारी से बंद होने लगे कालेज

इंजीनियरिंग के बाद भी रोजगार न मिलने की गारंटी के चलते इस के प्रति छात्रों का क्रेज घट रहा है. इसी वजह से इस की सीटें दशक के सब से निचले स्तर तक लुढ़क गई हैं. 2015–16 से लगातार इंजीनियरिंग कालेज बंद होने के लिए आवेदन कर रहे हैं. इंजीनियरिंग सीटें भी कम हो रही हैं. औल इंडिया काउंसिल फौर टैक्निकल एजुकेशन के आंकडों के मुताबिक अब देशभर में अंडरग्रेजुएट, पोस्टग्रेजुएट और डिप्लोमा लैवल की इंजीनियरिंग सीटें घट कर 23.28 लाख रह गई हैं. इस गिरावट के चलते 1.46 लाख सीटें कम हुई हैं.

टैक्निकल एजुकेशन को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने इस में इंजीनियरिंग के साथ ही साथ आर्किटैक्चर, मैनेजमैंट, होटल मैनेजमैंट और फार्मेसी को भी शामिल कर दिया है. बीटैक की सब से ज्यादा सीटें अभी भी हैं. 80 फीसदी सीटें इंजीनियरिंग की हैं.

कमजोर इन्फ्रास्ट्रक्चर, लैब्स व फैकल्टी की कमी के कारण कालेज अच्छी पढ़ाई नहीं करा पा रहे हैं, जिस की वजह से अच्छे इंजीनियर भी नहीं तैयार हो पा रहे. विदेशों में भी इन को जौब नहीं मिल पा रहा.

बंद हो रहे ज्यादा, खुल रहे कम

2014–15 में देशभर के एआईसीटीई से स्वीकृत कालेजों में करीब 32 लाख इंजीनियरिंग सीटें थीं. इंजीनियरिंग को ले कर घटते क्रेज के चलते करीब 7 साल के दौरान 600 से अधिक इंजीनियरिंग कालेज बंद हो गए. वर्ष 2015–16 से ले कर हर साल कम से कम 50 इंजीनियरिंग संस्थान बंद हुए हैं.

इस साल भी 63 संस्थानों को बंद करने की एआईसीटीई से मंजूरी मिल गई. 2016–17 में देशभर के 3291 इंजीनियरिंग कालेजों में 15.5 लाख बीटैक की 51 फीसदी सीटें खाली रह गईं. देशभर में नए इंजीनियरिंग कालेजों के खुलने के आंकड़े देखे जाएं तो 5 साल में सब से कम कालेज खुले हैं. एआईसीटीई ने 2019 से 2020–21 में 54 नए इंजीनियरिंग कालेजों को ही मंजूरी दी है. एआईसीटीई ने 2017–18 में 143, 2018–19 में 158 और 2019–20 में 153 नए संस्थानों को मंजूरी दी थी.

ENGINEERS ACADEMY
Your GATEway to Professional Excellence
IES • GATE • PSUs • JTO • IAS • NET
Enquiry Office
JE || PSUs || RRB-JE || DMRC || iPATE
entral & State Engineering Service Exam (AE/JE)
National Help Line # 80944 41777
7303402028
7210361485
Junior Engineer
Enquiry Office

इंजीनियरिंग सैक्टर को देश के निर्माण का सब से बड़ा सैक्टर माना जाता है. जिस देश में इंजीनियरिंग की पढ़ाई से छात्रों का क्रेज घटने लगे, कालेज बंद होने लगें और पढ़ेलिखे इंजीनियर सरकारी चपरासी की नौकरी के लिए आवेदन करने लगे, उस देश की प्रगति के बारे में अंदाजा लगाया जा सकता है.

गलत सरकारी नीतियों के चलते लाखोंलाख इंजीनियर बेरोजगार हैं. वे 3 से 4 लाख रुपए सालाना के पैकेज पर भी नौकरी करने को तैयार हैं. वे इंजीनियरिंग के काम के अलावा मार्केटिंग और दूसरे क्षेत्रों में काम करने लगे हैं. ●

नए कपड़े पहनते समय रखें ध्यान

नए कपड़े खरीदना व पहनना सामान्य बात है पर जब बात कोरोनाकाल की हो तो खरीदे हुए कपड़े पहनने में सावधानी बरतने की बेहद जरूरत है, वरना अनचाही दिक्कत खड़ी हो सकती है.

लेख • प्रतिभा अग्निहोत्री

हम सभी विभिन्न अवसरों के लिए नए कपड़े खरीदते हैं. भले ही कोरोना के आगमन के बाद से बाजार जाने पर रोक लगी हो पर कपड़ों की शौपिंग तो जारी ही है. कपड़े भले ही औनलाइन लिए जाएं या औफलाइन, हम सभी को उन्हें पहनने की जल्दी रहती है.

इन्हें पहनने के लिए की गई जल्दबाजी कई बार काफी महंगी पड़ जाती है और हम स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से घिर जाते हैं. नए कपड़े पहनने से पूर्व कुछ टिप्स को ध्यान में रखें ताकि आप अनेक समस्याओं से बचे रहें.

धोना है जरूरी

- कपड़ों को बनाए जाते समय अनेक कैमिकलों का प्रयोग किया जाता है. आजकल तो नैचुरल की अपेक्षा कैमिकल रंगों से ही डाई किया जाता है. इन कैमिकल्स के अनेक दुष्प्रभाव होते हैं जिन के कारण इन्हें अवश्य धोएं, अन्यथा कैमिकल के कारण दादखाजखुजली जैसे संक्रमण हो सकते हैं.
- कपड़े स्टोर्स में काफी लंबे समय तक रखे रहते हैं. हमें पता ही नहीं होता कि वे कहां और किस वातावरण में रखे हैं, इसलिए इन्हें धो कर पहनने से इन पर चढ़ी धूलमिट्टी साफ हो जाती है, जिस से किसी भी प्रकार की एलर्जी से बचाव हो जाता है.
- आजकल हर स्टोर में ट्रायलरूम होते हैं, जहां अनेक लोग कपड़ों का ट्रायल करते हैं. ऐसे में उन के शरीर की किसी त्वचा संबंधी बीमारी और पसीना उन में लग जाता है, इसलिए धोना बहुत जरूरी होता है.
- टाई डाई, बंधेज, बटिक तथा बाघ प्रिंट जैसे फैब्रिक को नैचुरल रंगों से बनाया जाता है. इन्हें प्रयोग करने से पूर्व नमक के पानी में भिगो देने से इन का रंग पक्का हो जाता है.

कोरोना से करें बचाव

आप चाहे औनलाइन शौपिंग करें या औफलाइन, कोरोना से बचाव अत्यंत आवश्यक है. कोरोना के आगमन के बाद से यदि ट्रायल करते समय किसी को जरा सा भी संक्रमण है तो कपड़ों के जरिए यह संक्रमण आप तक भी आसानी से पहुंच सकता है.

इस के अतिरिक्त पैकेजिंग करने वाले व्यक्ति या ट्रांसपोर्ट करने वाले व्यक्ति ने छींका या खांस दिया हो तो भी संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है. इसलिए कोरोनाकाल में नए कपड़ों को पहनने से पूर्व गुनगुने पानी में डेटोल या अन्य किसी एंटीसैप्टिक की कुछ बूंदें डाल कर 2 घंटे के लिए भिगो दें. इस से संक्रमण की आशंका पूरी तरह खत्म हो जाएगी. औनलाइन खरीदे कपड़ों के पैकेट्स को पहले सैनिटाइज करें, फिर खोलें.

टैग्स और बिल्स को संभालें

कपड़ों के टैग्स और बिल्स को संभालना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि कई बार साइज के छोटा होने या फैब्रिक और रंग के पसंद न आने पर इन्हें बदलना पड़ता है. बिल्स और टैग्स के होने से इन्हें बदलना या वापस करना आसान हो जाता है.

रखें सावधानी

कई बार घर पर कपड़े ट्राइ करते समय जरा सी असावधानी से कपड़ों पर कुछ गिर जाता है या कपड़ा कहीं उलझ कर फट जाता है तो उस की वापसी असंभव हो जाती है. इसलिए जब तक आप कपड़े को खरीदना सुनिश्चित न कर लें तब तक उन्हें बहुत सावधानी से ट्राइ करें. ●

STOMAFIT®

लिक्विड व टैबलेट

अपच व ऐसीडिटी से तुरंत आराम
New Pack
STOMAFIT LIQUID
STOMAFIT CHEWABLE

450ML, 200ML, 100ML, 90 TABLETS

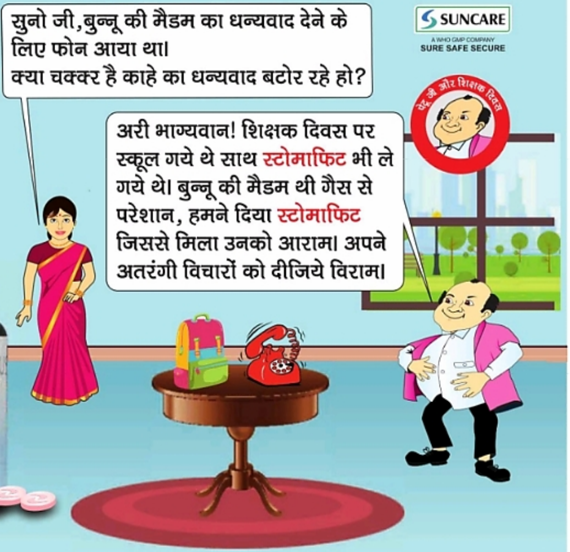
सुनो जी, बुन्नू की मैडम का धन्यवाद देने के लिए फोन आया था। क्या चक्कर है काहे का धन्यवाद बटोर रहे हो?
अरी भाग्यवान! शिक्षक दिवस पर स्कूल गये थे साथ स्टोमाफिट भी ले गये थे। बुन्नू की मैडम थी गैस से परेशान, हमने दिया स्टोमाफिट जिससे मिला उनको आराम। अपने अतरंगी विचारों को दीजिये विराम।
SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

HAEMOCAL®

Delicious Taste

ग्लूकोज़ से भरपूर आयरन टॉनिक

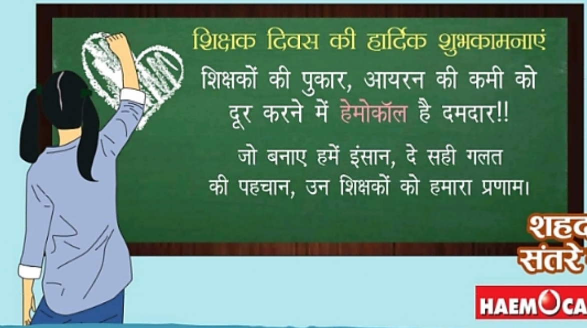

शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षकों की पुकार, आयरन की कमी को
दूर करने में हेमोकॉल है दमदार!!

जो बनाए हमें इंसान, दे सही गलत
की पहचान, उन शिक्षकों को हमारा प्रणाम।

New Pack
HAEMOCAL
Iron Tonic with Folic Acid

शहद सा गाढ़ा
संतरे सा स्वाष्टि

300ML, 450ML

HAEMOCAL-Z जिंक के साथ उपलब्ध(450ml)

SCAN TO BUY HAEMOCAL

Please contact for more information:
SUNCARE FORMULATIONS PVT. LTD.
Ph.: 8447977889/ 999, 011-46108735, Mail: info@stomafit.com
Available on all major Online Pharmacies

SCAN TO BUY STOMAFIT

दो मुट्ठी आसमान

कह सकूं जिस को मैं हक से मेरा अपना,
तुम्हारे दिल में मुझे वैसा एक कोना चाहिए.

खुशी ही नहीं, तुम्हारे गम में भी,
मुझ को मेरा एक हिस्सा चाहिए.

जो होऊं परेशां, टिका सकूं तेरे कंधे पे सिर,
तुम से अपनापन मुझ को कुछ वैसा चाहिए.

मेरी हर बात का राजदां रहे बस तू ही,
मुझ को तुझ में यकीन कुछ ऐसा चाहिए.

जो रहूं तुम्हारे साथ, न हो किसी की ख्वाहिश,
मुझ को हमारे बीच इतना गहरा प्यार चाहिए.

जो मिलूं तुम से कभी, भूल जाऊं दर्द ओ गम,
मुझ को हमारा रिश्ता कुछ वैसा खास चाहिए.

जो जगा दे हर दिल में मोहब्बत,
मुझे कुछ वैसे जज्बात चाहिए.

हो जाए गर अंधेरा, तुम रहो बन कर हमसाया,
हर पल दोगे मेरा साथ, ऐसा एक वादा चाहिए.

बहुत निभाया रिश्तों को दूर से अब तक,
अब तुम्हारा साथ मुझे मेरे पास चाहिए.

बन कर दीवानी ठुकरा दूंगी शान ओ शौकत,
मुझ को तो, बस, अब तुम्हारा इश्क चाहिए.

उतारे से भी जो न उतरे नशा,
मुझे इश्क का वैसा खुमार चाहिए.

जर्राजर्रा वाकिफ हो मोहब्बत से अपनी,
तुम से प्यार मुझ को बेशुमार चाहिए.

अपनी मोहब्बत की मिसाल दे दुनिया,
साथ अपना कुछ ऐसा लाजवाब चाहिए.

कह पाऊं तुम से अपना हर रंज ओ गम,
अपनापन मुझे तुम से कुछ ऐसा चाहिए.

न हो कोई खलिश, न किसी बात की कमी,
मुझे तुम से मोहब्बत इतनी ज्यादा चाहिए.

पूरे क्षितिज को पाने की ख्वाहिश नहीं,
मुझे तो बस दो मुट्ठी आसमान चाहिए

–मोनिका राज ●

तेरा नाम

आवाज को बना कर साज,
होंठों पर जब सजाया था,
दिल की हर धड़कन ने भी,
सुर में सुर मिलाया था.

हमारे होंठों ने भी,
सिर्फ तेरा नाम गुनगुनाया था,
मगर न जाने क्यों,
तुम ने नजरों को झुकाया था.

भुला कर हर गम को हम तो मुसकराए थे,
तुम ने हर दर्द याद दिलाया था,
हमारी सांसों में गजब का नशा छाया था,
जब आप का हाथ मेरे हाथों में आया था.

–मोनालिसा पंवार ●

मुक्ता में नए अंकुर

के अंतर्गत हम नवोदित कवियों को मौका दे रहे हैं कि वे कुछ नए उद्‌गार, नई शैली की कविताएं लिख कर हमें भेजें. कविताओं में कुछ नयापन हो जो युवाओं की सोच को दर्शाए.

संपादक को कविता भेजने का पताः
दिल्ली प्रैस
ई-8, झंडेवाला एस्टेट,
रानी झांसी मार्ग नई दिल्ली-110055
या
editor@delhipress.biz पर ईमेल करें.
आप हमें 8527666772 पर
व्हाट्सऐप या मैसेज भी कर सकते हैं.

प्रेम विवाह पर पहरा

दूसरे धर्म में शादी करना आज 21वीं सदी में भी भारत में आसान नहीं है. सत्ताधारी व भगवाधारी भारतीय जनता पार्टी व उस के कट्टर अंधसमर्थक, जो धर्म और वर्णव्यवस्था को अपना लक्ष्य बनाए हुए हैं, हर तरीका इस्तेमाल करते हैं कि किसी तरह भी अलग धर्मों के युगल शादी न कर पाएं. ये शादियां स्पैशल मैरिज एक्ट के तहत होती हैं.

इस एक्ट में एक नियम है कि नोटिस बोर्ड पर एक सूचना लगाई जाएगी कि ये 2 लोग, जिन के नामपते दिए गए हैं, शादी करना चाहते हैं और किसी को आपत्ति हो तो बता दे. आमतौर पर 100-200 रुपए दे कर यह नोटिस अदालतों में लगा कर उतरवा दिया जाता है ताकि बेकार में झंझट न हो. वैसे, जो शातिर हैं वे लड़केलड़की को ब्लैकमेल करने लगते हैं कि ज्यादा पैसा दो, वरना घर वालों को बता आएंगे. जहां घरों से छिप कर शादी की जा रही हो, वहां पैसे दे ही दिए जाते हैं. कुछ मामलों में मातापिता को पत्र भेज दिया जाता है.

दिल्ली उच्च न्यायालय ने इस धंधे को भांप कर 2009 में एक आदेश दिया था कि सबडिविजनल मजिस्ट्रेट इस बेईमानी को न होने दें और यदि युगल नहीं चाहते कि हंगामा हो तो उन्हें आराम से शादी करने दी जाए.

लेकिन दूसरे धर्मों में शादी को पाप मानने वाले न्यायिक अधिकारी भी कम नहीं हैं. ऐसे न्यायिक अधिकारी किसी तरह मातापिता को बुला कर शादी रोकने की कोशिश करते हैं. इन मामलों में घरों में पत्र भी भेज दिया जाता है और अदालतों में घूमतेफिरते दलालों के पते लीक कर दिए जाते हैं.

दिल्ली उच्च न्यायालय ने इस सिस्टम पर गहरी आपत्ति जताते हुए एक सबडिविजनल मजिस्ट्रेट के खिलाफ कंटैम्प्ट की कार्रवाई शुरू कर दी है.

अदालतें नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करने के लिए भी हैं पर बहुत से मामलों में पहली अदालत का रुख सरकारी रुख भांप कर तय होता है. अगर सरकार उदार है तो अदालतें खुलेतौर पर नागरिकों को हक दिला देती हैं. मगर अगर सरकार आज की जैसी कट्टर है तो जो भी कार्य धर्म की नीति के खिलाफ है उस पर रोकटोक लगा देती हैं.

आज की सरकार पंडों की रोजीरोटी पर मक्खन और हलवापूरी दिलवाने के पक्ष में है, इसलिए अदालती शादी के खिलाफ अड़चनें लगाई जाती हैं. शादी करना हर जोड़े का हक है और उन के घरवालों की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है. अदालत में नोटिस बोर्ड पर नोटिस लगाने से किसी तरह का लाभ नहीं है, यह मौलिक अधिकारों और निजता के अधिकार का हनन है.

……

लड़कियों के मन की भी सुनो

देश के गंदे टौयलेट असल में लड़कियों के खिलाफ एक सामूहिक साजिश के नमूने हैं. जो देश चांद पर चंद्रयान भेज सकता है, राफेल विमान खरीद सकता है, अरबोंखरबों रुपया मंदिरों पर खर्च कर सकता है वह अपने रिहायशी इलाकों में टौयलेट न बनवा सके, यह नहीं माना जा सकता.

जहां सीवर न पड़े हों वहां तो थोड़ी तकलीफ और महंगा काम हो सकता है पर जिन शहरों में सीवर पड़ चुके हों वहां, पब्लिक प्लेसों, बाजारों, स्कूलों आदि में टौयलैट न होना या गंदे होना, बिना पानी के होना लड़कियों और औरतों के खिलाफ एक साजिश है. पुरुषों ने तो इस देश की हर दीवार को टौयलैट बना रखा है. वे कहीं भी पैंट खोल कर खड़े हो सकते हैं. लड़कियां न पेशाब कर सकती हैं, न माहवारी के दिनों में पैड बदल सकती हैं क्योंकि घरों के अलावा कहीं ऐसी जगह नहीं है जहां यह सुविधा मिल रही हो.

प्रधानमंत्री ने केवल वोटों की खातिर शौचालय बनाने की लंबीचौड़ी बात शुरू की थी पर उस में छिपा मतलब था कि दलित और पिछड़े (अछूत और शूद्र) सड़कों पर लैट्रीन न करें जो ऊंचों के पैरों में न आ जाए. शौचालयों को अगर बनाया भी गया तो ऐसा बनाया गया कि पिछड़े, ओबीसी और दलित अछूत अपना शौच अपने घर में करें, उस में कहीं भी लड़कियों और औरतों का खयाल नहीं रखा गया.

शौचालय न होने की वजह से देश की औरतों को आज भी घर से बाहर जाना पड़ता है. उन्हें केवल बंद शौचालय चाहिए और यह न बाजारों में मिलता है, न स्कूलों में, न खेतों में और न मंदिरों में. लड़कियों और औरतों को अपनी सेहत से खिलवाड़ करना पड़ता है जिस का दर्द वे खुद ही भोगती हैं और पौलिसीमेकर इस की बात भी नहीं करते.

देश में सीवर और बहता पानी हर गांव, कसबे, शहरी महल्ले में न हो पाए, यह भला कैसे संभव है. इस में कौन सी तकनीक है, कौन सा बड़ा पैसा लगता है. सीवर का पाइप लाखों किलोमीटर में बन सकता है, पानी के लिए कुएं खोदे जा सकते है, सोलिड वैस्ट मैनेजमैंट के लिए हर चीज मिल रही है. नहीं है तो इच्छा. पुरुष को न तो माहवारी होती है न उस का रेप होने का उसे डर होता है.

वह चिंता ही नहीं करता कि औरतों और लड़कियों को क्या तकलीफ हो रही है. उत्तर प्रदेश की स्कूल टीचर्स ने मांग की है कि उन्हें 3 दिन की मैंसेस लीव दी जाए क्योंकि स्कूलों में टौयलैट नहीं हैं. फिर तो सारी बड़ी लड़कियों को भी छूट देनी होगी क्योंकि 8वीं के बाद की लड़कियों को यह परेशानी शुरू हो जाती है. छोटी लड़कियों को भी पेशाब जैसी छोटी समस्या से जूझना होता है.

वह देश किस काम का जो आम लड़की की इतनी छोटी सी बात को न समझे. वह देश और उस के आका बड़ी बातें कर लें, प्रवचन कर लें, छातियां थपथपा लें पर रहेंगे वही पुराने दकियानूसी. वह देश कभी तरक्की नहीं कर पाएगा जो 50 फीसदी आबादी का इतना भी खयाल न रख सके. ●

विद्रोही

बलराम की परिस्थिति ने विद्रोह को उस का जन्मसिद्ध अधिकार बना दिया था. उस की बातें कड़वी जरूर होती थीं लेकिन सच्ची होती थीं, जिसे पचा पाने की हिम्मत हर किसी में नहीं थी. हर काम में उस का विद्रोह स्वाभाविक था और यह विद्रोह प्रेम में भी अछूता नहीं रहा.

कहानी • कुमुद कुमार

उस को अधिकांशतया अकेला देखा जाता था. उस के जूते फटेपुराने थे. गंदगी लगे और हमेशा धूल से सने रहते थे. कपड़ों के प्रति वह बहुत लापरवाह था. ऐसा लगता था कि जो उसे पहनने को मिल गया, वही पहन लिया. वह मुश्किल से ही कभी उपयुक्त कपड़ों में दिखलाई पड़ता था. अनुमानतया खानेपीने में भी उस का व्यवहार ऐसा ही होता होगा. बाल उलझे और बिखरे से. दाढ़ी अजीब सी. दाढ़ी उस की बढ़ती चली जाती थी और फिर किसी दिन सफाचट. कुल मिला कर उस की हर चीज में रहस्य था, विद्रोह था.

शुरुआत में उस के बारे में किसी को अधिक जानकारी न थी. वह दूसरों से कम ही ताल्लुक रखता था तो दूसरों को भी ऐसे रूखे व्यक्ति से ताल्लुक रखने की लालसा न थी.

लेकिन जल्दी ही पता चल गया कि उस का नाम बलराम था. वह किसी दूरदराज के गांव का रहने वाला था. इसलिए उस के बोलने का लहजा हम शहर वालों से कुछ अलग था. कालेज की लड़कियों के पास वह जरा भी न फटकता था. यदि उस का कोई साथी कक्षा की लड़कियों से बात करने लग जाता था तो वह दस कदम दूर खड़ा होता था. हम लड़कियां उसे डरपोक समझती थीं. कुछ का खयाल था कि वह झक्की और सनकी है.

शाम के समय अकसर उसे सड़कों पर अकेले घूमते देखा जाता. कभी पार्क के वाचनालय में अखबार पढ़ते देखा जाता. कुछ का कहना था कि वह सिगरेट भी पीता है.

खाली समय में वह कालेज की लाइब्रेरी में बैठा मिलता. और जनाब का शौक देखिए, विषय की पुस्तकों को छोड़ कर विवेकानंद, दयानंद, लेनिन, हिटलर, गांधी, नैपोलियन, कार्ल मार्क्स जैसे बड़े लोगों की जीवनियां पढ़ता हुआ मिलता. क्रांतिकारियों को रस लेले कर पढ़ता. इतिहास, विज्ञान, धर्मशास्त्र कोई भी विषय उस से अछूता न था.

हम लड़कियां उसे देख कर अकसर हंसा करती थीं. उस के पहनावे और अजीब

व्यवहार पर टीकाटिप्पणी किया करती थीं. लेकिन उस के व्यवहार से एक दिन हमारा वास्तविक परिचय हुआ.

उस दिन बलराम के एक साथी रजनीश की एक अमीर घराने के लड़के राहुल से भिड़ंत हो गई. राहुल रजनीश का बड़ी बेदर्दी से उपहास उड़ा रहा था. कक्षा के लड़केलड़कियां उन की भिड़ंत का मजा ले रहे थे. कुछ को बुरा भी लग रहा था, लेकिन वे चुप खड़े थे. अति होते देख बलराम रजनीश के समर्थन में राहुल के सामने आ डटा.

''राहुल, तुझे अपनी अमीरी का कुछ ज्यादा ही घमंड हो गया है. क्यों मजाक पर मजाक उड़ाए जा रहा है उस गरीब का?''

''हां, उड़ा रहा हूं उस का मजाक. बोल, तुझ से कोई मतलब, फक्कड़ कहीं के.''

राहुल और उस के दोस्तों को लगा कि कड़क बोल कर और उन के समूह को देख कर बलराम चुप हो जाएगा. लेकिन बलराम के तेवर तो उग्र हो गए. न वह डरा, न भागा बल्कि करारा जवाब देते हुए बोला, ''ओए राहुल सुन, अगर तुझे अपनी अमीरी पर घमंड है तो हमें अपनी गरीबी पर नाज है, नाज. अगर हम तेरे जैसे अमीर नहीं हो सकते तो तू भी हमारे जैसा गरीब नहीं हो सकता.''

बलराम के ऐसे तेवर देख कर हर कोई दंग रह गया. राहुल को कोई जवाब देते नहीं बन रहा था. वह पूरी तरह से उलझन में था कि वह क्या कहे. अपनी भद्द पिटती देख उस ने कहा, ''ओए, यह क्या कह रहा है तू, मैं तेरे जैसा गरीब क्यों हो जाऊं?''

''तभी पता चलेगा न तुझे, गरीबी क्या होती है. फिर कभी तू किसी गांव वाले का मजाक न उड़ाएगा.''

राहुल के दोस्त उस की भद्द पिटते देख, उसे वहां से ले गए. लेकिन उस दिन बलराम की अलग पहचान बन गई. उस ने हमारे दिलों में जगह बनानी शुरू कर दी. कई बार उसे गरीब और मजलूम छात्रों के लिए संघर्ष करते हुए देखा गया. छात्र आंदोलनों में वह जोरशोर से नारे लगाता था. ऐसा लगता था जैसे वह किसी मिशन पर निकला हो.

लेकिन बलराम की हिम्मत का लोहा तो हम लड़कियों ने उस दिन माना जिस दिन उस की भिड़ंत छात्र संघ के अध्यक्ष रूपेश से हुई. 10 दिन पहले हम लड़कियां सहम गई थीं कि आज तो बलराम की अच्छी कुटाई होगी. रूपेश धनबल और बाहुबल में तो बढ़चढ़ कर था ही, रूप और यौवन का भी वह हराभरा सावनभादों था. रूपेश का कालेज में इतना दबदबा था कि उस के लिए छात्र तो क्या, प्रोफैसरों तक को भी सीट छोड़ते हुए देखा गया था.

हुआ यों कि एक दिन रूपेश अपनी गर्लफ्रैंड से मिलने हमारी क्लास में आ गया और उस पर लड़कियां तितली की तरह मंडराने लगीं. वह कन्हैया बना सखियों से घिरा था. तभी वहां बलराम आ गया. उस के आते ही रूपेश से सीट खाली करने को कहा. उस के तल्ख व्यवहार को देख कर रूपेश हत्थे से उखड़ गया और बलराम पर अपनी नेतागीरी झाड़ते बोला, ''तुझे तमीज नहीं है बात करने की. तुझे पता नहीं तू किस से बात कर रहा है?''

''किस से बात कर रहा हूं मैं? तू कोई खुदा है क्या?''

''हां, मैं यहां का खुदा हूं. मैं कालेज का प्रैसिडैंट हूं.''

''कालेज का प्रैसिडैंट है तो क्या हमारी सीटों को कब्जाएगा?''

इतना गर्म वार्त्तालाप रूपेश को भड़काने के लिए काफी था. लड़कियों के सामने उसे अपनी इज्जत उतरती महसूस हो रही थी. उस ने सब के सामने बलराम पर रोब गांठते हुए कहा, ''आ, तू बाहर चल, मेरे इतने पड़ेंगे कि अपना चेहरा पहचानना भूल जाएगा.''

बलराम भी कम न था. उस ने नहले पर दहला जड़ते हुए कहा, ''चल, देखते हैं किस पर कितने पड़ते हैं? कौन अपना चेहरा पहचानना भूलता है?''

रूपेश को यह उम्मीद न थी कि बलराम उस के साथ मुकाबले के लिए चल पड़ेगा. वह तो यह सोचता था कि बलराम डर कर शांत हो जाएगा और उस से सौरी बोलेगा. वे दोनों साथसाथ गलियारे में जा रहे थे और हम सब लड़केलड़कियां किसी अनहोनी के अंदेशे से मन ही मन डर रहे थे. रूपेश के एक इशारे पर कई लड़कों की भीड़ वहां आ सकती थी और बलराम की अच्छी कुटाई कर सकती थी.

लेकिन कुछ दूर गलियारे में आगे आ कर दोनों रुक गए. दोनों में कुछ वार्त्तालाप हुआ. इस के बाद रूपेश आगे चला गया और बलराम वापस आ गया. हम सब ने बलराम से उत्सुकतावश पूछा कि क्या हुआ. बलराम ने बताया कि रूपेश यह कह रहा था कि आज तो छोड़े दे रहा हूं, आगे से ऐसी हरकत मत करना.

हम ने पूछा, ''तो बलराम, तुम ने क्या कहा?''

मैं ने कहा, ''तो तू भी आज के बाद मेरी सीट पर मत बैठना.''

''फिर उस ने क्या कहा?'' हम ने पूछा.

उस ने कहा कि तेरी सीट पर नहीं बैठूंगा यार. लेकिन लड़कियों के सामने अपने कालेज के प्रैसिडैंट का कुछ तो खयाल रखा कर और फिर मुसकराता हुआ चला गया.

इस घटना से हम सब बलराम की हिम्मत के कायल हो गए. जिस प्रैसिडैंट की सब चमचागीरी करते थे, उस के सामने बलराम निर्भीक हो कर डटा था. विद्रोही तेवर उस की रगरग में रचेबसे थे. वह हमारा नायक बन कर उभर रहा था.

एक दिन बलराम कालेज के एक गुंडे से ही भिड़ गया. वह गुंडा अपने साथी गुंडों के साथ लड़कियों पर अश्लील फब्तियां कस रहा था. साथी गुंडे हंसहंस कर मजा ले रहे थे. जैसे ही हमारी क्लास की एक लड़की वहां से गुजरी, उस गुंडे ने उस पर भी अश्लील फब्ती कस दी. बलराम ने आव देखा न ताव, एक झन्नाटेदार तमाचा उस गुंडे के गाल पर रसीद कर दिया. वह गुंडा बलराम से गुत्थमगुत्था हो गया.

प्रधानाचार्य का कार्यालय समीप ही था. वे छात्रों में झगड़े की बात सुन कर दौड़ते हुए आए. उन्हें देख कर गुंडे के साथी डूबते जहाज के चूहों की तरह भाग खड़े हुए. प्रधानाचार्य ने बलराम को गुंडे से अलग किया. बलराम को चेतावनी दे कर छोड़ दिया गया और उस गुंडे को 10 दिनों के लिए कालेज से निलंबित कर दिया गया. उस दिन के बाद से उस गुंडे ने कभी किसी लड़की को नहीं छेड़ा.

इस झगड़े के बाद बलराम का नाम चर्चित हो गया. यह उस की ही हिम्मत थी जब सारे लड़के मूकदर्शक बने खड़े थे लेकिन उस ने गलत बात को सहन न करते हुए गुंडों से भिड़ने की हिम्मत दिखाई थी. इस झगड़े में उस की शर्ट भी फट गई थी लेकिन वह उस फटी शर्ट को ही सिल कर कालेज पहन कर आने लगा. उस की निर्धनता का अनुमान तो हमें पहले से ही था लेकिन इतना निर्धन, इस की कल्पना न थी.

अब सब की नजरें बलराम पर रहने लगी थीं. उस की एकएक हरकत हमारी नजरों में कैद होती थी. हम सब लड़कियों की जिज्ञासा थी कि उस से बातें करें लेकिन वह 'हां' 'न' में जवाब दे कर चलता बनता.

एक दिन मैं ने बलराम को कालेज की लाइब्रेरी में भूदान आंदोलन के प्रणेता विनोबा भावे की जीवनी पढ़ते हुए देख लिया. वह अकेला था. मेरी उस से बातें करने की जिज्ञासा हिलोरें मारने लगी. मेरे दिल में भी बलराम को ले कर उथलपुथल मची हुई थी. मैं उस की पास वाली सीट पर जा कर बैठ गई. मैं ने धीमे से पूछा, ''बलराम, क्या पढ़ रहे हो?''

''ओह, रजनी तुम. मैं तो विनोबा भावे के भूदान आंदोलन के बारे में पढ़ रहा हूं. क्या संत आदमी थे विनोबा भावे.''

इस से पहले कि बलराम भूदान आंदोलन का नीरस वृत्तांत मुझे सुनाना शुरू करता, उस की बात काटते हुए मैं ने कहा, ''बलराम, तुम हमेशा ऐसी ही किताबें पढ़ते हो. अरे इस उम्र में कुछ रोमांटिक पढ़ा करो.

दुष्यंतशकुंतला, लैलामजनू, हीररांझा आदि की प्रेम कहानी.''

''रजनी, तुम भी क्या मजाक करती हो? गरीब आदमी रोमांस के चक्कर में पड़ेगा तो हो गया काम. उसे अपनी रोजीरोटी से फुरसत नहीं. प्यारव्यार वह क्या करेगा? इश्कमिजाजी भी तब अच्छी लगती है जब पेट में अन्न हो और शरीर पर वस्त्र.''

बलराम के विचारों से ऐसा लगता था जैसे उस ने इश्क के सारे दरवाजे बंद कर रखे हों. अपने दिल पर पहरेदार बैठा रखा हो. मैं ने कुछ रूमानी अंदाज में कहा, ''बलराम, यदि कोई लड़की तुम से इश्कविश्क करने लगे तब.''

''प्रकृति बचाए उस लड़की से. मैं तो हाथ जोड़ लूंगा. घर में अनपढ़ मांबाप हैं, छोटी बहन है. 4 बीघा जमीन जोतबो लेते हैं. उन की चिंता करना ही मेरा इश्क है. मैं जानता हूं कोई ज्यादा पढ़ीलिखी शहर की लड़की मेरे गांव के झोंपड़े में न रहेगी. इसलिए यह इश्कविश्क मेरे जेहन में आता ही नहीं. अच्छा, अब चलता हूं, एक काम याद आ गया.''

लड़कियों को लड़कों से पिंड छुड़ाते तो बहुत देखा था. लेकिन यहां तो उलटा हो रहा था. बलराम मुझ से ही पिंड छुड़ा कर जा रहा था. लेकिन मुझे इस बात से संतुष्टि हुई कि उस की जिंदगी में अभी कोई नहीं है और मेरे लिए कोशिश के रास्ते खुले हैं. मुझ पर एकतरफा इश्क परवान चढ़ने लगा.

बलराम को गरीब छात्रों के लिए अकसर संघर्ष करते हुए देखा गया. वह मेरे लिए एक पहेली था जो सुलझने और समझने में ही नहीं आता था. उस की हर बात में विद्रोही तेवर. वह ऐसा लगता था जैसे उलटा बोलने के लिए ही पैदा हुआ हो. लेकिन बंदे में दम था, इंसानियत थी, जुझारूपन था.

एक दिन छात्रछात्राओं में देश में बेरोजगारी को ले कर बहस छिड़ी हुई थी. हर कोई इस बात पर सहमत था कि देश में बड़ी बेरोजगारी है. लेकिन बलराम तपाक से उलटा बोला, ''नहीं, देश में बिलकुल बेरोजगारी नहीं. देश में तो काम करने वालों की कमी है. काम करने वाले तो मिलते ही नहीं. देश नकारा लोगों से भरा पड़ा है. हर जगह मांगने वालों की लंबी लाइन लगी है. ऐसा लगता है जैसे हिंदुस्तान में मुफ्तखोरी का मेला लगा हो. हिंदुस्तान में काम और पैसा बिखरा पड़ा है, काम करने वालों और पैसा बटोरने वालों की कमी है.''

''तो फिर ये जो सरकारी नौकरी के एकएक पद के लिए हजारों आवेदन आते हैं, उन का क्या?'' छात्रों में से एक ने पूछा.

''सरकारी नौकरी में आराम ही आराम है और पगार तगड़ी. रिश्वतखोरी और हरामखोरी ऊपर से. हम मूलतया बेईमान हैं, आरामपसंद हैं, इसलिए सरकारी नौकरी के पीछे दौड़ते हैं. अपना स्वतंत्र काम करना नहीं चाहते. गुलामी की आदत पड़ी हुई है, वही करेंगे. एक छोटी सी सरकारी नौकरी पाने के लिए हम कर्जा ले कर भी 15-20 लाख रुपए रिश्वत देने का जुगाड़ कर लेते हैं, लेकिन उन 15-20 लाख रुपयों से अपना कोई स्वतंत्र रोजगार सृजित नहीं करना चाहते.''

बात बलराम की कड़वी थी, मगर सच्ची थी. कई के दिलों में उस की बात नश्तर की तरह चुभी. इसलिए आधे छात्र उसे 'पागल' कह कर वहां से खिसक लिए. उस के अगले ताने पर बचेखुचे भी खिसक गए. वह आगे बोला, ''अरे, हम पढ़लिख कर डिग्रियां संजोने के सिवा करते क्या हैं? हमारे विश्वविद्यालय डिग्री बांटने के कारखाने बन गए हैं. कुछ अच्छे विश्वविद्यालयों की बात छोड़ दें तो आधे से अधिक छात्र परीक्षाओं से महीनेदोमहीने पहले मौडल पेपर पढ़ कर पास हो रहे हैं. ऐसे छात्र क्या ज्ञान अर्जित करते होंगे. बस, डिग्री ले कर बेरोजगारों की कतार में खड़े हो जाते हैं. हर किसी को साहब वाली कुरसी चाहिए.''

बलराम के अंतिम वाक्य कहने तक उस की बात सुनने के लिए केवल मैं बची थी. लेकिन ऐसा लगता था जैसे बलराम की बात अभी पूरी न हुई हो. न जाने क्यों मुझे उस का बोलना अच्छा लग रहा था. उस के विद्रोही तेवरों में कसक थी.

''देखो रजनी, ये सब मेरी खरीखरी बातें सुन कर इधरउधर खिसक गए. ये सब ऐसे ही हैं. दिनभर कालेज में आवारागर्दी करते हैं, क्लास छोड़ते हैं और एग्जाम टाइम में पास होने का जुगाड़ बैठाते हैं. बताओ रजनी, कौन देगा इन को रोजगार? बूढ़ेबूढ़े लोग रिकशा पेल कर अपने परिवारों का भरणपोषण कर रहे हैं लेकिन इन को चाहिए शाहजहां का तख्तेताऊस.''

मैं बलराम की बातों को बड़े ध्यान से सुन रही थी. ऐसा लग रहा था जैसे उस के अंदर का विद्रोही ज्वालामुखी फूट पड़ा हो और उस के अंदर से गरमगरम लावा बह निकला हो.

''देखो रजनी, मुझ को देखो, मैं रात में एक प्लाईवुड फैक्ट्री में नाम बदल कर और अनपढ़ बन कर चौकीदारी करता हूं. रात में चोरी से वहीं पढ़ भी लेता हूं. सेठजी मेरे काम से बहुत खुश हैं. देखो, मैं पढ़तेपढ़ते ही रोजगार करने लगा कि नहीं. करने की लगन होनी चाहिए, काम तो मिल ही जाता है.''

बलराम की इस बात ने मुझे चौंका दिया. मैं सोचने लगी कि प्लाईवुड की फैक्ट्री तो मेरे पापा की भी है. कहीं यह बलराम वहीं तो चौकीदारी नहीं करता. मैं ने जिज्ञासावश पूछा, ''बलराम, तुम कौन सी प्लाईवुड फैक्ट्री में चौकीदारी करते हो?''

''ओह रजनी, यह तो भावावेश में मेरे मुंह से निकल गया. चलो छोड़ो, मैं इस बात को गुप्त ही रखना चाहता हूं. बंद मुट्ठी लाख की, खुली मुट्ठी खाक की.''

बलराम तो यह कह कर चलता बना. लेकिन अब मुझे चैन कहां. घर पहुंच कर मैं ने पापा से फैक्ट्री के चौकीदार के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया, ''रजनी, वह किसी गांव का अनपढ़ सीधासादा लड़का है. एक दिन रोजगार मांगने आ गया, चौकीदार की जगह खाली थी. उस की मजबूरी और अपनी आवश्यकता देख मैं ने उसे चौकीदार रख लिया. गोपाल बड़ा ही अच्छा लड़का है, कभी नागा भी नहीं करता और ईमानदार भी है. दोतीन महीनों में गांव हो आता है. मैं तो उस भले लड़के को कभी हटाऊंगा नहीं, बड़े विश्वास का लड़का है, अपना सा लगता है.''

पापा की बात सुन कर रजनी की आंखों की नींद उड़ गई. वह रातभर बलराम के बारे में सोचती रही, 'हमें सब सुखसुविधाएं हैं, किंतु पढ़ना नहीं चाहते. इस उम्र में जब हमें रोमांस की बातें अच्छी लगती हैं, हमारी कल्पनाओं में भी रासलीलाएं चलती हैं, तब वह पढ़ भी रहा है और रोजगार भी कर रहा है. उस के संघर्ष ने उसे इस छोटी उम्र में ही परिपक्व बना दिया है, तभी वह ऐसी बड़ीबड़ी बातें करता है.'

बलराम की इन्हीं खूबियों ने उसे मेरे दिल का नायक बना दिया. रातदिन वह मेरे मनमस्तिष्क पर छाया रहता. एक रात मैं बहाना बना कर पापा के साथ कार में बैठ कर बलराम की शिनाख्त करने के लिए फैक्ट्री गई. वास्तव में बलराम ही गोपाल था. लेकिन न तो बलराम को पता चला कि मैं उस की शिनाख्त करने के लिए फैक्ट्री आई हूं और न ही पापा को भनक लगी कि मैं उन के चौकीदार को देखने आई हूं.

कालेज में मैं बलराम से इतनी जरूर घुलमिल गई थी कि बेझिझक उस से अपनी बात कह सकूं और एक दिन मौका देख कर उस के सामने अपने दिल की बात कह दी. लेकिन उस ने बिना लागलपेट के सीधा जवाब दिया, ''रजनी, मैं ने तुम से पहले ही कहा था कि मैं प्रेम करने के लिए नहीं बना हूं. तुम किसी उच्च घराने की लगती हो. मेरी गरीबी तुम से निभ नहीं पाएगी. संबंध बराबर के घरानों में ही अच्छे लगते हैं.

''कुछ दिनों के बाद ही तुम मेरी गरीबी से ऊब जाओगी. उलाहनों और तकरारों के

बाद हमारे संबंध खराब होते देर न लगेगी. तुम्हारी जिंदगी तो तबाह होगी ही, मेरी आजादी और जिंदगी भी तबाह हो जाएगी.''

ऐसा उपदेश झाड़ कर बलराम चलता बना. लेकिन मेरे प्रेम प्रस्ताव को इस तरह ठुकराने पर मैं जलभुन गई. मेरे अंदर भी विद्रोह की चिनगारी जली, 'यह गरीब है तो गरीब ही रहेगा. मैं तो इसे अपनी दौलत का मालिक बनाना चाहती थी. लेकिन यह नाली का कीड़ा नाली का ही रहेगा.' मेरी जवानी का अक्खड़पन और नासमझी मुझ पर हावी होते चले गए. मैं ने ठान लिया कि बलराम को उस की औकात से रूबरू करा कर रहूंगी.

बलराम को उस की औकात जताने के लिए एक रात मैं खुद कार चलाती हुई अपनी प्लाईवुड फैक्ट्री गई. गेट पर पहुंच कर मैं ने आवाज लगाई, ''गोपाल, गेट खोल.''

लेकिन गेट खोलने से पहले वह चौकीदारी का धर्म निभाने लगा. वह यह जानना चाहता था कि आंगतुक है कौन? जब चालक सीट पर उस ने मुझे बैठे हुए देखा तो वह चौंक गया. इस से पहले कि वह मुझ से कुछ कहता, मैं ने कड़क कर कहा, ''ऐसे क्या देख रहा है, गोपाल? गेट खोल. मैं तुम्हारे सेठ की बेटी और इस प्रौपर्टी की इकलौती वारिस हूं.''

उस ने यह सुन कर गेट तो खोल दिया लेकिन उसे जलील करने से अभी मेरा मन कहां भरा था. उसे जलील करने के लिए मैं ने कहा, ''गोपाल, कार में से मेरा हैंडबैग उठा कर ला.''

बलराम (गोपाल) मेरे पीछेपीछे आज्ञाकारी नौकर की तरह हैंडबैग उठा कर ला रहा था. यह विद्रोही व्यक्ति इतना विनम्र और आज्ञाकारी हो सकता है, मैं हतप्रभ थी. उस ने हैंडबैग को औफिस की मेज पर रखने के बाद कहा, ''कोई और सेवा, मेमसाहिबा.''

उस के यह कहते ही मेरा धैर्य जवाब दे गया. मैं उसे जलील पर जलील किए जा रही थी, लेकिन वह जरा भी आवेश में न आया. मैं ने औरत के अंतिम हथियार का प्रयोग किया. मैं ने आंखों में आंसू भर कर कहा, ''बलराम, तुम मानते क्यों नहीं? यह सबकुछ तुम्हारा ही तो होगा.''

''मेमसाहिबा, मैं यहां गोपाल हूं, बलराम नहीं. तुम्हारा नौकर, तुम्हारा चौकीदार. मैं टूट सकता हूं, लेकिन बिक नहीं सकता. कुछ और कहना चाहती हो तो कह लो.''

मैं जानती थी कि वह मेरे आंसुओं से पिघलने वाला नहीं. न वह टूटने वाला था, न बिकने वाला. वह चट्टान की तरह मजबूत था. मैं ने अपने खराब व्यवहार के लिए आंसू पोंछते हुए उस से क्षमा मांगी, ''सौरी बलराम.''

''मेमसाहिबा, मैं यहां बलराम नहीं, सिर्फ गोपाल हूं, आप का सेवक. मैं यहां सिर्फ और सिर्फ आप का चौकीदार हूं और मेरा भविष्य क्या होगा. मैं खुद नहीं जानता. इसलिए भावनाओं की लहर में बहना मेरी आदत नहीं.''

इतना कह कर वह गेट की तरफ बढ़ गया. मैं ने अपना हैंडबैग उठाया और कार को स्टार्ट किया. बलराम ने गेट खोल दिया था. मैं रूमाल से आंसू पोंछती हुई घर की ओर चल पड़ी. मेरा अंतिम दांव भी बेकार गया.

कितने ही अमीर घरानों के लड़के मेरी खूबसूरती पर मरते थे. मेरी प्रौपर्टी पर ललचाते थे. मुझ से रिश्ता बनाना चाहते थे. लेकिन मेरा दिल एक गरीब पर आ गया था, लेकिन वह गरीब दिल और स्वाभिमान का इतना अमीर था कि मैं उस का दिल जीतने में नाकाम रही. सोच रही थी कि यह सब धनदौलत किस काम की जो एक दिल को भी न जीत सके.

ऐसा लगता था कि बलराम ने विद्रोह को ही अपना जन्मसिद्ध अधिकार बना लिया था. हर काम में उस का विद्रोह स्वाभाविक था. प्रेम भी इस से अछूता नहीं था. मुझे लगता था कि वह मुझ से प्रेम करता है, लेकिन उस का विद्रोह आड़े आ रहा था. मन में आया कि मैं भी विद्रोही हो जाऊं.

20 वर्षों बाद सांसद बलराम महोदय एक सार्वजनिक समारोह में मिले तो देखते ही बोले, ''अरे रजनी, यह तुम हो. मैं तो सोच रहा था कि तुम्हारी शादी किसी दूसरे शहर में हो गई होगी. मुझे क्षमा करना, उस समय परिस्थितिवश मैं तुम्हारा प्रस्ताव स्वीकार न कर सका था.''

फिर स्पष्टीकरण देते हुए उस ने कहा, ''रजनी, देखो मैं आज भी कुंआरा हूं. शादी के लिए फुरसत ही नहीं मिली. समाजसेवा करतेकरते कब राजनीति के रथ पर सवार हो गया, पता ही नहीं चला. बस, यह समझ लो गरीबों और मजलूमों के दुखदर्द से ही शादी कर ली. इन की सेवा को ही परमोधर्म मानता हूं.''

''हांहां, सब को अपनाअपना धर्म निभाना चाहिए, सांसदजी. आप अपना धर्म निभा रहे हो, मैं अपना. लेकिन शायद आप ने निमंत्रणपत्र ठीक से पढ़ा नहीं.''

''रजनी, निमंत्रणपत्र को छोड़ो. वह तो मेरा पीए मेरा कार्यक्रम लगा देता है. अपने परिवार के बारे में बताओ, पति... बच्चे...?''

तभी मंच से संचालक की आवाज आई, ''अब मैं आज के कार्यक्रम की संयोजिका सुश्री रजनीजी को मंच पर आमंत्रित करता हूं कि वे आएं और इस कार्यक्रम के संबंध में कुछ कहें.''

संचालक के संबोधन को सुन कर सांसद बलराम चौंक गए. वे आश्चर्य से बोले, ''रजनी, तुम सुश्री? मतलब तुम ने शादी नहीं की.''

''विद्रोही तेवर जनाब क्या सिर्फ आप के हो सकते हैं? क्या हमें विद्रोही होने का अधिकार नहीं? अभी तो सिर्फ 20 वर्ष गुजरे हैं, हम किसी का इंतजार ताउम्र भी कर सकते हैं. यह कोई अनहोनी नहीं. सच्चा प्यार सिर्फ ताउम्र नहीं, मौत के बाद भी इंतजार करता है.''

इतना कह कर मैं अपनी बात कहने के लिए मंच पर चली गई. सांसद बलराम हतप्रभ से एकटक मुझ को देख रहे थे. अपनी बात कहने के बाद मैं मुसकराती हुई उन के पास आ कर बैठ गई. उन की नजरें कह रही थीं कि आज उन्होंने मुझे स्वीकार कर लिया है. मेरा विद्रोह धीरेधीरे शांत हो रहा था. विद्रोही भी शांत और खुश था. ●

मासिक पत्रिका कीमत 40 रु.
हिंदी की लोकप्रिय कथा पत्रिका
मनोहर कहानियाँ
1 साल के लिए 440 रु. 2 साल के लिए 880 रु.
विशेष छूट
रजिस्टर्ड डाक खर्च फ्री
दिल्ली प्रैस कार्यालय फोन नं. : 011-41398888, एक्सटेंशन नं. : 221, 281, टोल फ्री फोन नं. : 1800-103-8880
ईमेल - subscription@delhipress.in / circulation@delhipressgroup.com

छोटी सी जिंदगी में निर्णय सोचसमझ कर लिए जाएं तो मुश्किलें आसान हो जाती हैं. वेदिका ने शरद के साथ विवाह करने का निर्णय ले कर क्या सही किया था?

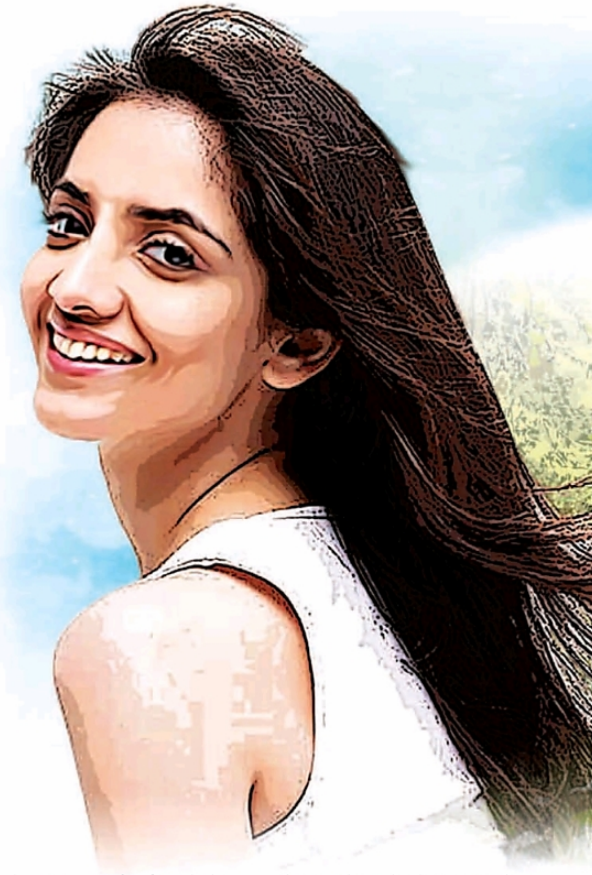

दो दूनी चार

कहानी • शकुंतला सिन्हा

अमेरिका का एक समृद्ध राज्य कैलिफोर्निया है. यह हौलीवुड फिल्म इंडस्ट्री और सिलिकौन वैली के लिए विख्यात है. पिछले 3 सालों से यहां न के बराबर बारिश हो रही थी, लगभग सूखे की स्थिति थी. 2016–2017 दिसंबरजनवरी में अच्छी बारिश हुई थी. यहां तक कि मोबाइल फोन पर रहरह कर फ्लैश फ्लड की चेतावनी का संदेश आ रहा था. उसी वर्ष 8 जनवरी को इस का परिणाम भी सुनने को मिला. मोबाइल फोन पर न्यूज फ्लैश आया कि टनल ट्री बारिश व तूफान के चलते गया था.

कैलिफोर्निया के रैडवुड नैशनल पार्क में लगभग एक हजार वर्ष पुराना यह एक विशाल पेड़ था. इसे पायोनीर टनल ट्री कहा जाता था. जमीन पर इस का व्यास 33 फुट था. इसे काट कर एक सुरंग बनाई गई थी. इस के अंदर सड़क बनी थी जिस से कार आसानी से जा सकती थी. यह पेड़ 'टनल ट्री' के नाम से विख्यात था और सैलानियों के लिए आकर्षण का केंद्र भी.

वेदिका ने जब अपने बच्चों बेटी जूली और बेटे यश को यह बात बताई तो दोनों ने नैशनल पार्क जा कर उक्त पेड़ को देखने की जिद पकड़ ली. वेदिका के पति शरद ने कहा, ''हां, जल्दी ही चलेंगे रैडवुड नैशनल पार्क, यश ने तो अभी तक उस पेड़ को देखा भी नहीं है.''

वेदिका बोली, ''नैक्स्ट वीकैंड लौंग वीकैंड है. सोमवार को भी बंद है, 16 जनवरी मार्टिन लूथर किंग डे है.''

रविवार 15 जनवरी को शरद और वेदिका दोनों बच्चों के साथ रैडवुड नैशनल पार्क पहुंच गए. कार पार्क कर जैसे ही सभी पेड़ की ओर बढ़ने को हुए शरद बोला, ''वेदिका, याद करो आज से करीब डेढ़ साल पहले हम इसी जगह मिले थे. तब हम अजनबी थे.''

वेदिका को भी वह अविस्मरणीय दिन याद आया. अतीत की परतें एकएक कर प्याज के छिलकों की तरह खुलने लगी थीं.

वेदिका भारतीय मूल की अमेरिकी थी. वह जब 7 साल की थी, अमेरिका आ गई थी. उस के मातापिता दोनों मल्टीनैशनल आईटी कंपनी में इंजीनियर थे. जब वह 5 साल की थी, तभी उस के मातापिता अमेरिका आ गए थे. 2 साल तक वह अपने नानानानी के साथ इंडिया में ही रही थी.

अमेरिका में ही पढ़लिख कर बड़ी हुई और स्कूल में टीचर बनी. उस ने अपनी पसंद के लड़के से शादी की थी. उस का पति नरेन भी भारतीय मूल का अमेरिकी था. वह भी एक जूनियर हाईस्कूल में टीचर था. शादी के 2 सालों बाद उन के घर में बेटी ने जन्म लिया था जूली. जूली 6 साल की थी, अपनी मां के साथ सैन होजे में रहती थी. वहीं के एक एलिमैंट्री स्कूल में फर्स्ट ग्रेड में पढ़ती थी.

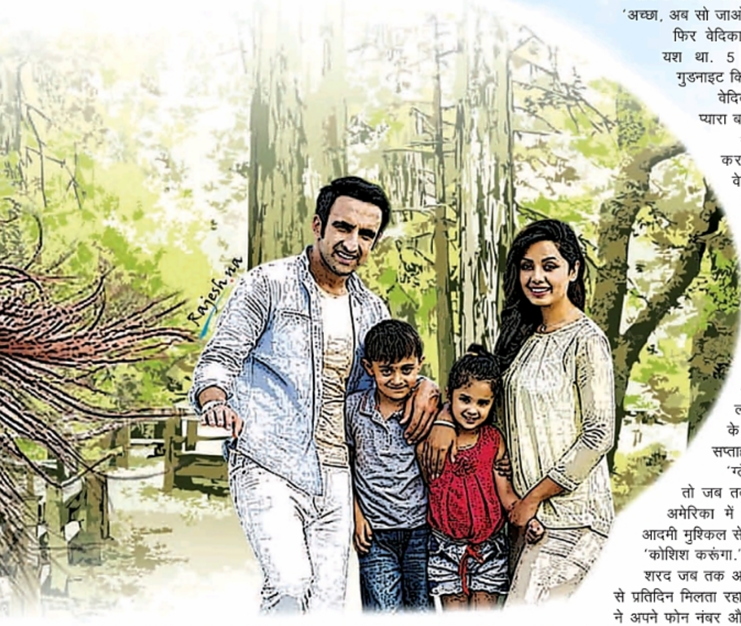

वेदिका के बचपन के 7 साल भारत में बीते थे. नानानानी के संसर्ग से उस में भारतीय संस्कार भी थे पर नरेन अपने को पूरा अमेरिकन समझता था. शराब बहुत ज्यादा पीता था और फुजूलखर्च भी करता था. इस के चलते पतिपत्नी में अकसर झगड़े होते थे. नरेन गालीगलौज भी करने लगा था. वेदिका ने नरेन से तलाक ले लिया. वह अपनी बेटी जूली के साथ एक अपार्टमैंट में रहती थी. उस के मातापिता सैन होजे में ही अपने घर में रहते थे.

वेदिका शनिवार को अपनी बेटी जूली के साथ रैडवुड नैशनल पार्क गई थी. उस दिन मौसम साफ था. थोड़ी ठंडक थी, पर धूप भी कड़ी थी. वेदिका ने कार पार्क कर बेटी के साथ टनल ट्री की ओर प्रस्थान किया. पेड़ के आसपास दर्शकों की भीड़ थी. कार पार्किंग की जगह पेड़ से काफी दूर थी. वेदिका बेटी के साथ घूमतेघूमते टनल ट्री के पास आ गई थी. तभी जूली ने पानी मांगा. वेदिका ने अपना बैग खोल कर देखा, पर पानी की बोतल कार में छूट गई थी. जूली बारबार पानी मांग रही थी.

पास ही एक भारतीय खड़ा था. उस ने अपने बैकपैक से पानी की एक छोटी बोतल निकाल कर जूली को देते हुए कहा, ''मम्मा को बोलो सील खोल कर तुम्हें देगी.''

वेदिका ने कहा, 'थैंक्स. मेरा पानी कार में रह गया है. आप जब पार्किंग में चलेंगे, मैं आप को एक बोतल दे दूंगी.'

उस ने कहा, 'इस की कोई जरूरत नहीं है. मैं शरद, मुंबई से हूं.'

वेदिका ने बेटी को पानी की बोतल देते हुए कहा, 'मैं वेदिका, भारतीय थी, अब अमेरिकन हूं. और यह मेरी बेटी, जूली.'

'हैलो बेटे, तुम बहुत क्यूट हो.'

ठीक उसी समय शरद के फोन की घंटी बजी. इंडिया से उस के बेटे का फोन था. वह बोला, 'बेटे, इतनी रात तक तुम क्यों जग रहे हो?'

उधर से बेटे ने कहा, 'मैं ने अभी तक आप को गुडनाइट नहीं कहा है. आज शनिवार है, दादी से कहानियां सुन रहा हूं. मुझे स्काइप पर गुडनाइट बोलना है.'

शरद ने स्काइप औन कर उसे पार्क का दृश्य दिखाया. फिर वेदिका और जूली से भी संक्षिप्त परिचय कराया. उस के बाद बोला, 'अच्छा, अब सो जाओ. गुडनाइट.'

फिर वेदिका से कहा, 'मेरा बेटा यश था. 5 साल का है. बिना गुडनाइट किए सोता ही नहीं है.'

वेदिका बोली, 'बहुत ही प्यारा बच्चा है.'

थोड़ी देर में दोनों लौट कर पार्किंग में आए. वेदिका ने कार में से कुछ कूकीज और जूस निकाल कर शरद और जूली को दिए. कुछ देर तक बातें करते रहे. वेदिका ने पूछा, 'कब तक अमेरिका में हैं?'

शरद बोला, 'मैं अगले सप्ताह इंडिया लौट जाऊंगा. कंपनी के काम से सिर्फ 2 सप्ताह के लिए आया था.'

'ग्लैड टू मीट यू. हो सके तो जब तक यहां हैं मिलते रहें. अमेरिका में बात करने के लिए आदमी मुश्किल से मिलते हैं.'

'कोशिश करूंगा.'

शरद जब तक अमेरिका में रहा वेदिका से प्रतिदिन मिलता रहा. जाने के पहले दोनों ने अपने फोन नंबर और ईमेल एकदूसरे को दिए. शरद इंडिया लौट आया था.

इंडिया आने के बाद भी दोनों में फोन पर और स्काइप पर वीडियो चैटिंग होती थी. शरद ने उसे अपने परिवार के बारे में पूरी जानकारी दी. शरद की पत्नी का देहांत हो चुका था. वह अपने मातापिता के साथ रहता था. यश की देखभाल उस के दादादादी करते थे. वेदिका ने भी अपने बारे में सबकुछ बता दिया था. जूली को भी टूटीफूटी हिंदी आती थी. वह भी यश से अकसर बात करती थी. दोनों बच्चे भी घुलमिल गए थे.

देखतेदेखते 6 महीने गुजर गए थे. शरद और वेदिका एकदूसरे को चाहने लगे थे. शरद ने वेदिका के बारे में मातापिता को भी बताया.

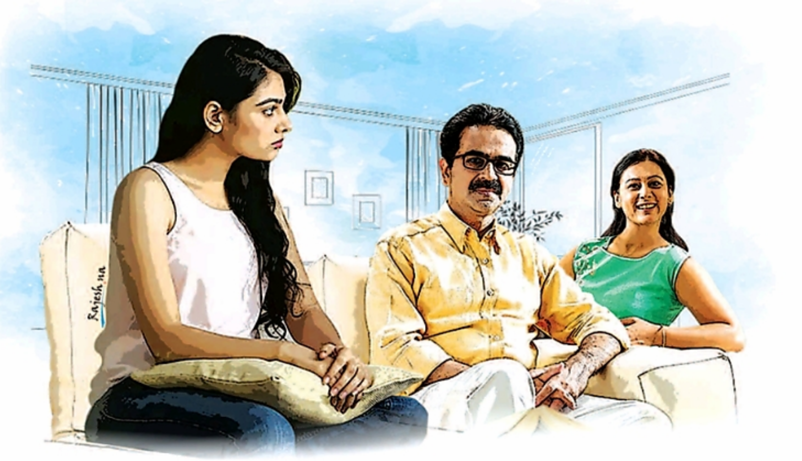

शरद के मातापिता तो वेदिका से शादी के लिए तैयार थे. पर वेदिका के पिता बिना शरद से मिले अपनी सहमति नहीं दे रहे थे.

उस के पिता ने कहा, 'ऐसा करो उसे 'के वन' वीजा पर बुला लो. उस से मिलने के बाद ही मैं अपनी राय दूंगा.'

वेदिका बोली, 'सिर्फ 'के वन' नहीं, 'के टू' वीजा भी लेना होगा.'

'इस का मतलब उस के भी बच्चा है. तब तो, मुझे ठीक नहीं लगता.'

'क्यों?'

'पता नहीं जूली को प्यार करेगा या नहीं? आखिर सौतेला बाप ही होगा.'

'वाह, पापा. मैं भी तो यश की सौतेली मां ही रहूंगी. अगर मैं यश को प्यार करूंगी तो वह भी जूली को प्यार करेगा. मुझे उस पर पूरा भरोसा है.'

'ठीक है, बुलाओ उसे, मिल कर देखते हैं.'

शरद फिआन्सी वीजा पर अमेरिका आया. यह वीजा कोई अमेरिकी नागरिक अपने विदेशी मंगेतर के लिए ले सकता है. इस के नियमानुसार अमेरिका में आने के 90 दिनों के अंदर शादी हो जानी चाहिए, वीजा खुद ही रद्द हो जाता है और इस का कोई एक्सटैंशन नहीं मिलता. शादी होने के बाद मंगेतर और उस का बच्चा दोनों ग्रीन कार्ड के हकदार हो जाते हैं और दोनों अमेरिका के स्थायी निवासी हो जाते हैं.

शरद अमेरिका आने के बाद वेदिका के पिता से मिलने गया. उन्होंने उस के परिवार की पूरी जानकारी ली. शरद से मिलने के बाद उन्होंने बेटी से कहा, 'शरद एक इंडियन मिडिल क्लास परिवार का लड़का है. तुम अमेरिका में पलीबढ़ी हो. शरद का परिवार इंडियन मैंटेलिटी का है. तुम उस के साथ एडजस्ट कर सकोगी? मुझे तो कोई खास दिलचस्पी नहीं है इस लड़के में.'

वेदिका बोली, 'शरद इंडियन मिडिल क्लास का हो कर भी इंजीनियर बना. अमेरिकी कंपनी उस की कद्र करती है. मैं उस से और उस के मातापिता सभी से काफी दिनों से बात कर रही थी. मुझे तो अच्छे लोग लगते हैं. और उस तथाकथित संभ्रांत अमेरिकी परिवार का नरेन कैसा निकला, वह भी आप देख चुके हैं.'

वेदिका चाहती थी कि मातापिता की सहमति से ही वह शादी करे. परंतु उस के पिता तैयार नहीं हो रहे थे, हालांकि मां को शरद पसंद था. 70 दिन बीत गए. इस बीच वेदिका शरद से लगभग रोज ही मिला करती थी. यश तो ज्यादातर वेदिका के साथ ही रहता था. दोनों बच्चे काफी घुलमिल गए थे.

शरद को वेदिका के पिता के व्यवहार से आभास हो गया था कि उन्हें यह रिश्ता पसंद नहीं है. तब उस ने वेदिका से कहा, 'मैं अगले सप्ताह इंडिया लौटने की सोच रहा हूं क्योंकि वीजा खत्म होने जा रहा है.'

वेदिका बोली, 'तुम ऐसा नहीं कर सकते हो. अगर तुम इंडिया जाओगे तो मैं भी अमेरिका में नहीं रहूंगी. तुम्हारे साथ इंडिया मैं भी चलूंगी और जूली भी. हम लोग इंडिया में शादी कर लेंगे. मैं इमरजैंसी वीजा के लिए अप्लाई कर देती हूं.'

'नहीं, ऐसा ठीक नहीं होगा. तुम एक बार फिर अपने पिता से बात कर लो. मेरे लिए उन का दिल नहीं दुखाना.'

वेदिका ने जब पिता से इंडिया जाने की बात कही तो वे काफी गंभीर हो गए. उन की पत्नी ने उन्हें शांति से बात समझाते हुए कहा, 'आखिर वेदिका की खुशी में ही हमारी खुशी है. अगर वेदिका शरद के साथ खुश है तो हमें भी इस रिश्ते को सहर्ष स्वीकार कर लेना चाहिए.'

कुछ देर खामोश रहने के बाद पिता के चेहरे पर भी मुसकान थी. उन्होंने शरद को बुला कर अपनी सहमति बताई. एक सप्ताह के अंदर ही शरद ने वेदिका को एक कार्यक्रम में मंगलसूत्र पहनाया. सादगी के साथ विवाह संपन्न हुआ. इस के बाद कोर्ट में भी शादी रजिस्टर कराई गई. शरद के मातापिता भी शादी के अवसर पर आए थे.

वेदिका के पिता ने अपने ट्रैवल एजेंट को फोन पर कहा, 'मेरी बेटी के परिवार के लिए होनोलुलु का पैकेज बुक कर दो, तुरंत.' एजेंट बोला, 'ओके सर, मैं अभी 2 की पैकेज बुक कर आप को ईमेल करता हूं.'

'नो, लिसिन, 2 नहीं, 4 की पैकेज चाहिए. 2 एडल्ट्स एंड 2 चिल्ड्रन. मैं ने चारों की डिटेल्स तुम को ईमेल कर दी हैं. चैक करो.'

'नो प्रौब्लम. मैं आधे घंटे में एयर टिकट्स और पैकेज डिटेल्स मेल करता हूं,' एजेंट बोला.

अगले दिन शरद और वेदिका ने बच्चों के साथ हवाई द्वीप के लिए उड़ान भरी थी.

तभी यश और जूली दोनों हल्ला करने लगे, ''मम्मा, डैड, क्या हो गया आप लोगों को, हम फालेन टनल ट्री देखने आए हैं. यहां खड़ेखड़े समय क्यों बरबाद कर रहे हैं?''

चारों पेड़ के पास पहुंच गए.

जूली बोली, ''मम्मा, अगर हिलेरी क्लिंटन जीततीं तो शायद यह पेड़ नहीं गिरता.'' यश बोला, ''हां, मुझे भी ऐसा ही लगता है.''

बच्चों की बातें सुन कर शरद और वेदिका के साथ आसपास के दर्शक भी हंस पड़े थे. ●

फ्लर्टिंग बातचीत करने की एक कला है, जिस के लिए अच्छे सैंस औफ ह्यूमर की जरूरत होती है. यह मन को खुश रहना सिखाता है. इसे सैक्सुअल हैरासमैंट से दूर रखे जाने की जरूरत है.

फ्लर्टिंग करिए, खुश रहिए

''हुजूर इस कदर भी न इतरा के चलिए...,' 'सारे शहर में आप सा कोई नहीं...' कहने को तो हिंदी फिल्मों के लोकप्रिय गीत हैं पर ये फ्लर्टिंग का एक अच्छा उदाहरण हैं. इस दुनिया का हर व्यक्ति चाहता है कि लोग उसे नोटिस करें, उस से आकर्षित हों और इस के लिए वह तमाम तरीके अपनाता है.

दुनियाभर की सभी सभ्यताओं और संस्कृतियों में स्त्रीपुरुष एकदूसरे को रिझाने का प्रयास करते आए हैं. इसे सामान्य भाषा में हम फ्लर्टिंग कहते हैं. लड़केलड़कियों का आपस में फ्लर्ट करना एक आम बात है. सब से अच्छी बात यह है कि यह एक स्वस्थ तरीका है जिस से हम किसी में अपने प्रति रुचि जगा सकते हैं.

यह सैक्सुअल हैरासमैंट से एकदम अलग है. इस के लिए आप में सैंस औफ ह्यूमर और बातचीत करने की कलात्मकता होनी चाहिए. कई लोग फ्लर्टिंग को खराब मानते हैं पर सच तो यह है कि इस से व्यक्ति का न सिर्फ मानसिक स्वास्थ्य ठीक रहता है बल्कि अवसाद से बाहर आने में इस से मदद मिल सकती है. फ्लर्टिंग एक कला है और यह कहीं भी काम आ सकती है, चाहे आप को कोई साथी ढूंढ़ना हो या अपने साथी के साथ अपने रिश्ते में गर्माहट बनाए रखनी हो.

▼ **फ्लर्टिंग पर शोध :** वाशिंगटन यूनिवर्सिटी में एक अध्ययन के दौरान यह देखा गया कि औफिस में काम करने वाले लोगों में फ्लर्टिंग से क्या असर होता है? क्या इस से काम करने वाले लोग तनावमुक्त हो सकते हैं. इस शोध में सैकड़ों लोगों को शामिल किया गया. मजे की बात यह थी कि शोध स्वस्थ फ्लर्टिंग पर किया गया था न कि ऐसी फ्लर्टिंग पर जो सैक्सुअल हो क्योंकि वह फ्लर्टिंग जो सैक्सुअल हो, वह लोगों में तनाव का कारण बनती है जबकि स्वस्थ फ्लर्टिंग लोगों को तनावमुक्त करती है.

▼ **अलग है फ्लर्टिंग और सैक्सुअल हैरासमैंट :** स्वस्थ फ्लर्टिंग और सैक्सुअल हैरासमैंट में जमीनआसमान का अंतर होता है. एक शोध के दौरान जब लोगों से सैक्सुअल हैरासमैंट के बारे में पूछा गया तो वे तनावग्रस्त हो गए और चुप्पी छा गई, पर जब फ्लर्टिंग के बारे में पूछा गया तो सब के चेहरे पर हंसी और मुसकराहट आ गई और लोगों ने बढ़चढ़ कर प्रतिक्रियाएं दीं.

▼ **फ्लर्ट करने वाले होते हैं पौजिटिव :** अकसर फ्लर्ट करने में माहिर लोग बहुत ही हंसमुख और सुलझे स्वभाव के होते हैं. ये लोग अपने बारे में स्पष्ट होते हैं और जहां कहीं भी जाते हैं, अपने आसपास लोगों की भीड़ जमा करने का माद्दा रखते हैं. हर कोई इन से बात करना चाहता है. कुल मिला कर ये स्वयं तो सकारात्मक होते ही हैं, आसपास के माहौल को भी सकारात्मक बनाए रखते हैं.

▼ **रिश्ते में नयापन बनाए रखती है फ्लर्टिंग :** ऐसा नहीं है कि सिर्फ दोस्तों या सहकर्मियों में ही फ्लर्टिंग की जाती है. अगर आप अपने साथी से भी फ्लर्टिंग करते रहते हैं तो आप के रिश्ते में खुशहाली बरकरार रहती है. एकदूसरे की अहमियत जताने का यह एक अच्छा तरीका साबित होता है. इस से रिश्ते में नयापन बना रहता है और एकदूसरे के प्रति प्यार का एहसास भी होता रहता है. इस से शरीर में एड्रिनिलिन नामक हार्मोन का स्राव होता है जो हमें खुश रखता है. कुल मिला कर फ्लर्टिंग आप के रिश्ते में गर्माहट बनाए रखने में मददगार होती है.

▼ **फ्लर्टिंग करने के कुछ और लाभ :** फ्लर्टिंग आप को तनाव से दूर रखती है और आप का आत्मविश्वास भी बढ़ाती है. यह आप की स्वयं के प्रति सोच भी बनाती है. फ्लर्टिंग करने से आप लोगों की आदतों के बारे में बेहतर जान पाते हैं. इस से हम एकदूसरे को यह बता पाते हैं कि हमारे उस के बारे में क्या विचार हैं. इस से आप लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर सकते हैं.

तो सीधी सी बात है– फ्लर्ट करिए और खुश रहिए.

–प्रेक्षा सक्सेना ●

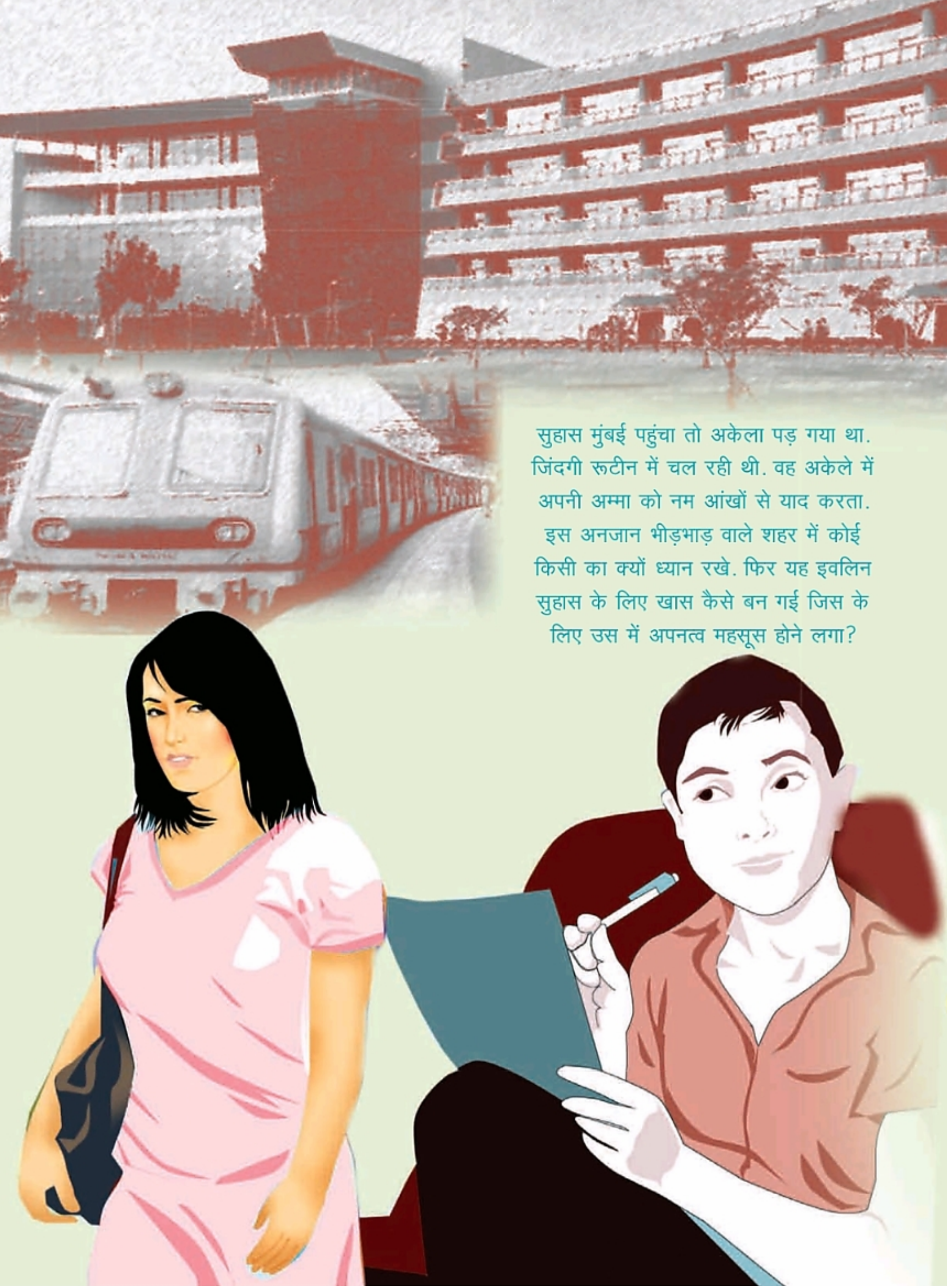

सुहास मुंबई पहुंचा तो अकेला पड़ गया था. जिंदगी रूटीन में चल रही थी. वह अकेले में अपनी अम्मा को नम आंखों से याद करता. इस अनजान भीड़भाड़ वाले शहर में कोई किसी का क्यों ध्यान रखे. फिर यह इवलिन सुहास के लिए खास कैसे बन गई जिस के लिए उस में अपनत्व महसूस होने लगा?

क्यों

कहानी • जया आनंद

ट्रेन सबकुछ पीछे छोड़ती हुई अपनी द्रुत गति से आगे बढ़ चली. पीछे सब छूटता जा रहा था. आगे बढ़ने की प्रसन्नता और पीछे छूटने का दर्द एकसाथ.

सुहास सैकंड क्लास के रिजर्व कूपे में बैठ कर चल पड़ा है अपनी मंजिल को पाने. रंग गोरा, दुबलापतला, लगभग 5 फुट 8 इंच लंबा, अपनी मां का लाड़ला. सुहास सीधा है, आजकल के लड़कों जैसा नहीं जो बहुत सारी गर्लफ्रैंड्स होने पर गर्व करते हैं. पढ़ने में वह शुरू से ही बहुत अच्छा रहा है, इसलिए 12वीं करतेकरते ही उसे इंजीनियरिंग में दाखिला मिल गया और इंजीनियरिंग पूरी होतेहोते कैंपस सलैक्शन हो गया.

अब सुभाष चल पड़ा था महोबा से सीधे मुंबई. उस के अंदर कुछ घबराहट थी लेकिन वह प्रदर्शित नहीं कर रहा था. ट्रेन में बैठो तो कुछ न कुछ खाने की इच्छा होती है. सुहास को अम्मा के बनाए लड्डू की याद हो आई. हिलतीडुलती ट्रेन में ऊपर रखे बैग से लड्डू निकाला तो सोचा सामने बैठे यात्री से पूछे 'क्या आप भी लेंगे?' पर नहीं बोल पाया संकोची जो ठहरा.

लड्डू खातेखाते सुहास को अम्मा की याद आ गई.

उस दिन कितने प्यार से बड़ी की सब्जी बनाई थी. कितने गुस्से में बोल पड़ा था वह, 'क्या बनाया है, दाल क्यों नहीं बनाई?'

'खा ले ना भैया, बहुत ही जायकेदार सब्जी है,' अम्मा ने कहा था.

'काहे को यह सब्जी बनाई, किस को पसंद है?' सुहास देसी और शहरी बोली का घालमेल करते हुए बहुत ही ऊंची आवाज में बोला था.

'क्यों ऐसा बोला मैं ने, पता नहीं क्या हो जाता है,' सुहास मन ही मन विह्वल हुआ जा रहा था. अम्मा के लिए जान तक देने को तैयार और वहीं दूसरी ओर उन्हें इस तरह से बोल देना.

पापा के बाद अम्मा बिलकुल अकेली हो गई थी. सुहास अम्मा का एकमात्र सहारा था. कई सारे सपनों की लड़ी अम्मा ने सुहास के लिए पिरो रखी थी. सुहास यह भलीभांति जानता है, फिर भी वह क्यों अम्मा से ऐसे बोल जाता है. ट्रेन में चढ़ने के पहले भी तो अम्मा कह रही थी.

'भैया, यह पूरीसब्जी के साथ अचार और मठरी भी रखे देते हैं.'

'काहे अम्मा सामान बढ़ा रही हो. मुंबई में सब मिलता है. बस करो, देर हो रही है,' लगभग चीखते हुए सुहास ने कहा था.

'क्यों ध्यान नहीं रखता मैं? अम्मा से धीरे नहीं बोल सकता, अम्मा से प्यारा कौन है मुझे इस दुनिया में. और उन्हीं पर इतना जोर गुस्सा पड़ता हूं,' सुहास मन ही मन पश्चात्ताप का अनुभव कर रहा था.

रात के साढ़े 11 बज रहे थे. सब ने अपनीअपनी बर्थ बिछा दी. सुहास ने भी अपनी बर्थ पर चादर बिछाई और कुछ सोचते हुए सो गया.

अगले दिन शाम 7 बजे मुंबई सीएसटी पर गाड़ी रुकी. एक छोटे शहर और मुंबई महानगर का अंतर साफ दिख रहा था. भागतेदौड़ते लोग, स्टेशन की आपाधापी, मुंबई भेलपूरी, वड़ापाव के स्टौल सब में सुहास महानगर की झलक देख पा रहा था. वह आया तो था महानगर में, पर सपने उस के छोटे और प्यारे ही थे. उस में कहीं भी महत्त्वाकांक्षा की सुगबुगाहट तक न थी.

कुछ दिन अपनी कंपनी के गैस्टहाउस में रुकने के बाद उस ने मुंबई महानगर के दादर इलाके में किराए का एक फ्लैट लिया. एक कमरा, एक छोटी सी बालकनी, बालकनी में ऊपर लगी रौड जिस में ऊपर कपड़े सुखाए जा सकें. अंदर कमरे में सुकून लेकिन बाहर वही शोरशराबा. दादर स्टेशन के पास ही था उस का फ्लैट जिस से आनेजाने में उसे परेशानी न हो.

वाशी में था उस का औफिस. दादर से कुर्ला, कुर्ला से वाशी दौड़ कर लोकल ट्रेन बदल कर औफिस पहुंचना. सोचा नहीं था अम्मा के लाड़ले सुहास ने कि अकेलेअकेले यह सफर तय करना होगा. इंजीनियर तो बन गया था लेकिन अम्मा के कहने पर. क्या करना है, क्यों करना है, इन बातों से वह बेफिक्र था.

सामान्य लड़कों की सोच से अलग. अगर सोचता भी तो अम्मा के इर्दगिर्द. अपनी इच्छाओं का उसे ठीकठीक पता न था.

औफिस जाना सुहास को अच्छा लग रहा था. वहां की कैंटीन में सुबह का नाश्ताखाना मिल जाता था पर रात बहुत भारी हो जाती थी. बाहर का खाना ज्यादा खाने की आदत नहीं सुहास को, इसलिए खुद ही कभीकभी सब्जी बना कर या मैगी उबाल कर खा लिया करता था.

''अरे सुहास, आओ देखो ये कुछ नए ट्रेनी जो इंटर्नशिप के लिए आए हैं. उन्हें तुम्हें ट्रेंड करना है,'' औफिस के बौस ने आदेशात्मक स्वर में कहा.

''ओके सर,'' सुहास ने मुसकान बिखेरते हुए उत्तर दिया.

सुहास की मुसकान जिस में कोई बनावट नहीं, निश्छल, स्नेहिल मुसकान. इस मुसकान को देख कर कोई भी आकर्षित हो जाए और कोई सचमुच आकर्षित हुआ. कौन? इवलिन.

HEMODEX®
Family Tonic
SUPERIOR HAEMATINIC WITH ANTI-OXIDANTS
BALANCED NUTRITIONAL FORMULA
VITAMIN & PROTEIN

आपके सेहत का सच्चा साथी

Growmed उत्पादित आयरन टॉनिक लाल रक्तकण बढ़ाने एवं उत्तम स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है। इसमें है भरपूर आयरन, फोलिक एसीड, B_{12} तथा सौर्बीटॉल 70% जो कि चेहरा, जीभ आँख के पीलापन, चलने पर चक्कर आना या दम फूलना, उम्र से ज्यादा दिखना जैसे गम्भीर रोगों में अत्यधिक लाभदायी है।

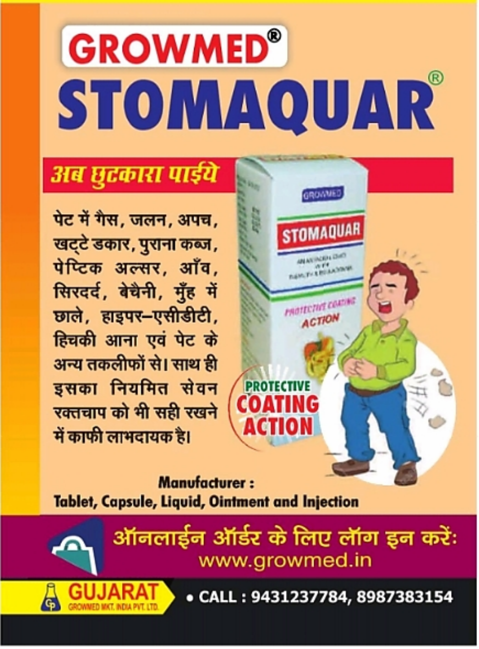

अब छुटकारा पाईये

पेट में गैस, जलन, अपच, खट्टे डकार, पुराना कब्ज, पेप्टिक अल्सर, आँव, सिरदर्द, बेचैनी, मुँह में छाले, हाइपर–एसीडीटी, हिचकी आना एवं पेट के अन्य तकलीफों से। साथ ही इसका नियमित सेवन रक्तचाप को भी सही रखने में काफी लाभदायक है।

Manufacturer :
Tablet, Capsule, Liquid, Ointment and Injection

ऑनलाईन ऑर्डर के लिए लॉग इन करें:
www.growmed.in

GUJARAT
GROWMED MKT. INDIA PVT. LTD.
• CALL : 9431237784, 8987383154

हां, इवलिन नाम था उस का. उन इंटर्नशिप करने आए लोगों में एक ट्रेनी. इवलिन सुहास को एकटक देखे जा रही थी. सुहास एक पल को हड़बड़ा सा गया या कहूं घबरा गया.

''हां, कल से आप सब की ट्रेनिंग शुरू हो जाएगी,'' सुहास ने खुद को संभालते हुए कहा.

ट्रेनिंग के दौरान हर दिन जब भी एकदूसरे से टकराते तो बस दोनों के चेहरों पर लजाई सी मुसकान बिखर जाती थी.

इवलिन तेज दिमाग की लड़की थी. अपने काम में चुस्त. किसी भी काम को बड़ी जल्दी समझ जाती थी. दिखने में साधारण नयननक्श, गेहुआं रंग लेकिन चेहरे पर लावण्य. यह साधारण सी दिखने वाली इवलिन अपने लावण्य और द्रुतबुद्धि के कारण लोगों के बीच जगह बनाती जा रही थी. सुहास के मन का एक कोना भी कहीं इवलिन की जगह तलाश रहा था.

सुहास अपने काम को ले कर बहुत जागरूक था और काम के प्रति दूसरों की लापरवाही उसे असहनीय थी.

''क्या कर रहे हैं आप सब, इन दिस वे यू औल डू योर जौब,'' सुहास गुस्से से तिलमिला कर उन ट्रेनियों से बोला.

''सर, आप... ऐसे,'' इवलिन की आवाज गले के अंदर ही घुट कर रह गई. वह अवाक थी कि सुहास सर को इतना गुस्सा आता है.

''सर, ये लीजिए,'' इवलिन ने अगले दिन सुहास को एक कार्ड दिया.

''यह क्या?'' सुहास कुछ आश्चर्य और छिपे हुए भय के साथ बोल पड़ा.

''सर, देखिए तो...'' इवलिन बस मुसकराए जा रही थी.

अनेक आशंकाओं से सुहास का मन घिर गया, 'क्या दे रही है, क्यों दे रही है, कहीं कुछ ऐसावैसा तो नहीं लिखा है इस में.' कुछ असहज होते हुए सुहास ने कार्ड खोला था.

''डियर सर,

''डोंट गेट एंग्री, औलवेज स्माइल प्लीज. यौर स्माइल इंक्रीजेज यौर फेस वैल्यू.

''इवलिन''

पढ़ते हुए सुहास की आंखें नम हो आईं और होंठों पर मुसकान बिखर गई. इवलिन ने उस मुसकान को भी पढ़ा और नमी को भी महसूस किया.

फ्लैट पहुंच कर सुहास कार्ड को पलटपलट कर बारबार देखता और पढ़ता जा रहा था. इवलिन का चेहरा सुहास की आंखों के आगे नाचने लगा. साधारण सी दिखने वाली इवलिन सुहास को अपनी ओर खींच रही थी. साधारण सुंदर हो सकता है क्योंकि सुंदरता आंखों में विराजती है.

''हैलो फ्रैंड्स, औल आर प्रैजेंट हीयर,'' अगले दिन सुहास ने खुद को सहेजते हुए ट्रेनियों को संबोधित किया.

आखिर सुहास भावनाओं में बहने वाला व्यक्ति नहीं. वह हर कदम सोचसमझ कर रखता है.

''हाउ आर यू सर?'' इवलिन ने मुसकराते हुए पूछा.

''या, आई एम फाइन,'' सुहास ने गंभीरता ओढ़ कर उत्तर दिया. अब हर दिन अपनी समयसारणी के अनुसार गुजरने लगा. सुबह 8 बजे सुहास कमरे में चायबिस्कुट खा कर दादर से फास्ट लोकल पकड़ कर कुर्ला और कुर्ला से वाशी साढ़े 8 बजे तक पहुंच जाता. वहां से औफिस पैदल 10 मिनट चल कर 8.40 तक औफिस पहुंच जाता. साढ़े 9 बजे तक ट्रेनिंग के विद्यार्थी आ जाते. उस समय तक सुहास औफिस कैंटीन में नाश्ता कर लेता और फिर शुरू होता ट्रेनिंग प्रोग्राम. हां, इन सब के बीच हर दूसरे दिन सुहास पीसीओ से अम्मा को फोन करना नहीं भूलता. मोबाइल उस समय तक नहीं था.

इवलिन से गुडमौर्निंग होती पर सुहास थोड़ा रूखा ही बना रहता.

''क्या सुहास, कुछ आगे भी बोलेगा या बढ़ेगा,'' औफिस के एक सहयोगी ने हंस कर पूछा. सुहास का उत्तर बस उस की मुसकराहट होती है जो समझना चाहे समझ ले.

बारिश का मौसम शुरू हो चुका था. मुंबई की बारिश से सभी परिचित हैं. पर सुहास का परिचय अब हो रहा था. वह लगभग रोज ही भीग कर औफिस पहुंचता. फिर थोड़ी देर में पहनेपहने ही उस के कपड़े सूख जाते.

गर्माहट लाने के लिए सुहास दोतीन बार चाय ले लेता. पर हर दिन का भीगना नुकसान पहुंचा रहा था. घर पर होता तो अम्मा गरम तेल की मालिश कर देती. अदरक, तुलसी का काढ़ा बना कर, हल्दीदूध दे कर सारे घरेलू इलाज कर उस की तबीयत ठीक कर देती. पर यहां तो अम्मा है नहीं.

''अम्मा... अम्मा,'' सुहास अम्मा को याद कर रोए जा रहा था. सुहास फ्लैट में अकेला था. साथ में रहने वाला भी अगले दिन आने वाला था. सुहास को तेज बुखार हो गया. खांसी भी आ रही थी. पूरे बदन में दर्द था. अकेले तबीयत खराब होने पर अपनों की याद आती है. फिर सुहास तो पहली बार इतनी दूर अम्मा से अलग. क्या करे, क्या न करे, इसी बेचैनी में रात काटी. कुछ बुखार की गोलियां पड़ी थीं, उन्हें खा कर, मुंह में अदरक दबा कर सुहास किसी तरह रात बिता पाया.

''अरे यार, तू तो बुखार से तप रहा है,'' अजय ने सुहास का माथा छू कर कहा. अजय सुहास के साथ फ्लैट में रहता था. उस दिन ही टूर से वापस आया था, ''बुखार की दवाई ली?''

''हां, ली थी. पर कोई असर नहीं हुआ,'' सुहास धीरेधीरे बुदबुदाते हुए बोला.

''कुछ खाया भी नहीं होगा,'' अजय ने सुहास का चेहरा देखते हुए चिंतित स्वर में पूछा और आगे बोला, ''यार, मेरी आज एक अर्जेंट मीटिंग है. मैं भी नहीं रुक सकता तेरे साथ, ऐसा करता हूं तुझे औफिस के पास के अस्पताल में भरती करा देता हूं. ठीक है न?''

सुहास ने हां में सिर हिला दिया.

''वहां नर्सें भी रहती हैं, तेरी देखभाल अच्छे से हो जाएगी,'' अजय ने आंख मारते हुए चुटकी ली. सुहास के बीमार चेहरे पर मुसकराहट की रेखा खिंच गई.

''यह हुई न बात,'' अजय ने सुहास की पीठ पर एक मुक्का धीरे से जमाया. उस पल सुहास के मन के किसी कोने में इवलिन का चेहरा उभर आया.

''गुडमौर्निंग सर,'' फूलों का गुलदस्ता ले कर इवलिन कमरे में आई.

''इवलिन, तुम?'' सुहास आश्चर्य से भर गया.

''हां सर, मुझे पता चला आप की तबीयत के बारे में तो...'' इवलिन ने गुलदस्ता बैड के पास रखी टेबल पर सजा दिया. पास ही रखी कुरसी पर इवलिन बैठ गई. फूलों की खुशबू और इवलिन के लगा परफ्यूम की महक सुहास को एक अलग दुनिया में लिए जा रही थी जहां सिर्फ हृदय जुड़ते हैं, दुनियादारी की सारी दीवारें ध्वस्त हो जाती हैं.

''सर, यह दवा ले लीजिए, नर्स आई है,'' इवलिन ने जोर से कहा.

''आ... आ... ओके,'' सुहास अचकचा सा गया. उस की आंखें मानो लुकाछिपी खेलने लगीं.

इवलिन ने नर्स के हाथों से दवा ली और सुहास को खिला दी. दवा खाते हुए सुहास इवलिन को कनखियों से देख रहा था.

''सर, अब मैं चलती हूं. कल आऊंगी, टेक केयर,'' इवलिन अपना बैग टांग कर मुसकराती हुई चली गई.

सुहास उसे न नहीं कह सका. क्यों नहीं कह सका, यह वह स्वयं भी नहीं समझ पा रहा था.

बच्चों के सम्पूर्ण शारीरिक विकास एवं विशेष इम्युनिटी बढ़ाने में सहयोग करता है।

GROWMED®

नक्कालों से सावधान ग्रोमेड देखकर ही लें।

AD VITAMIN बेबी ऑयल

ग्रोमेड AD Vitamin Baby Oil बच्चों की हड्डियों एवं मांसपेशियों की मजबूती एवं सम्पूर्ण शारीरिक विकास के लिए जरूरी है।

इसमें है Vitamin A 20000 I.U, Vitamin D 4000 I.U, Archis Oil, Olive Oil + Vitamin E

अब चंदन एवं गुलाब के खुशबू में भी

GROWMED®

PAIN RELIEF Gel & Tablet

आपको दर्द से दिलाए... मिनटों में आराम

ग्रोमेड पेन रिलीफ जेल के इस्तेमाल से कमर दर्द, घुटनों का दर्द, कंधे का दर्द, एड़ी दर्द तथा स्लिप डिस्क दर्द से तुरंत आराम मिलता है।

Manufacturer : Tablet, Capsule, Liquid, Ointment and Injection

ऑनलाईन ऑर्डर के लिए लॉग इन करें: www.growmed.in

GUJARAT GROWMED MKT. INDIA PVT. LTD.

• CALL : 9431237784, 8987383154

अभी तक सुहास की दुनिया उस के गांव, लखनऊ का इंजीनियरिंग कालेज, पढ़ाई और अम्मा तक ही सिमटी थी. इन सब के बीच में कोई अपनी जगह बनाने की कोशिश कर रहा था. क्यों? यह प्रश्न सुहास नहीं समझ पा रहा था या कोशिश नहीं कर रहा था समझने की.

वाशी के हौस्पिटल की खिड़की से थोड़ा सा आकाश और एक बड़ी सी टंकी दिखाई पड़ती थी. सुहास का मन जब हौस्पिटल के कमरे में ऊबता तो थोड़े से आकाश में बादलों की विभिन्न आकृतियां बनाता रहता.

आज सुबह उठा, तो 2 मैना दिखाई पड़ीं. थोड़ी देर में एक मैना उड़ गई. सुहास का मन अनमना सा हो गया.

''गुडमौर्निंग सर.''

''कौन? अरे इवलिन तुम,'' सुहास के बीमार चेहरे पर चमक आ गई. आज उस के हाथ में ढेर सारे फल थे.

''सर, ये सफरचंद खाइए.''

''सफरचंद?''

''सर, यहां मुंबई में सेब को सफरचंद कहते हैं.''

इवलिन ने सेब का टुकड़ा सुहास की ओर बढ़ा दिया और उस का पूरा चेहरा भी गुलाबी होने लगा.

''सर, यू आर लुकिंग बैटर टुडे. आज आप के चेहरे पर पीलापन नहीं है,'' उस के चेहरे की ललाई सेब के कारण थी या कारण कुछ और था.

''सर, अब आप जल्दी से औफिस आइए,'' सुहास बिना कुछ बोले इवलिन को बस सुने जा रहा था.

वह दवा लेने के लिए उठा तो तुरंत ही इवलिन ने एक पल की देरी किए बिना दवा उठा कर सुहास को दे दी.

''थैंक्स इवलिन.''

''ओके सर, अब मैं चलती हूं. गेट वेल सून, ओके बाय एंड प्लीज स्माइल.''

''बाय इवलिन,'' सुहास मुसकराते हुए बोला पर उस की आंखें नम हो गई थीं. इस अनजान भीड़भाड़ वाले शहर में कोई किसी का क्यों ध्यान रख रहा था, यह कैसा अपनत्व है.

हौस्पिटल से तीसरे दिन सुहास को डिस्चार्ज मिलने वाला था. आज सुहास की आंखें बाहर खिड़की पर नहीं दरवाजे पर किसी का इंतजार कर रहीं थीं. शायद उसे किसी का इंतजार था.

''गुडमौर्निंग सर,'' मुसकराते हुए हाथों में रजनीगंधा के फूलों के साथ इवलिन कमरे में आ गई. इस बार उस ने फूलों को सीधे सुहास के हाथों में थमा दिया. रजनीगंधा की सुगंध में सुहास खोने सा लगा.

''सर, आज आप को डिस्चार्ज मिलने वाला है न?''

''हां,'' सुहास ने कुछ झेंपते हुए कहा.

''सर, कल से आप औफिस आ जाएंगे न?''

''कल... शायद कल नहीं, कल फ्लैट में बिखरे हुए सामान को थोड़ाकुछ समेटूंगा, परसों से जौइन कर लूंगा.''

''ओके सर, आप जल्दी जौइन कीजिए. हमारी ट्रेनिंग भी तो आप को करवानी है. केवल 15 दिन बचे हैं ट्रेनिंग के,'' इवलिन की आवाज कुछ फीकी सी पड़ गई थी.

''हां इवलिन,'' सुहास के स्वर में भी कुछ उदासी टपक रही थी.

''सर, आप ने दवा ली?''

''न... न नहीं, आज डिस्चार्ज होने की खुशी में भूल ही गया. सुबह से नर्स भी नहीं आई.''

''नो प्रौब्लम सर, मैं देती हूं.''

इवलिन ने 2 कैप्सूल और टेबलेट जो सुहास रोज सुबह लेता था उस के हाथों में रख दीं और दूसरे हाथ में वहीं रखा पानी का गिलास पकड़ा दिया.

सुहास की आंखें डबडबा गईं, बस, छलकीं नहीं. सुहास अच्छी तरह जानता है अपनी इच्छाओं को दबाना, अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त होने से रोकना.

''सर, मैं आप की पैकिंग कर देती हूं. अभी आप ठीक फील कर रहे हैं न.''

''टुडे आय एम फीलिंग बैटर, मैं पैकिंग कर लूंगा,'' पर इवलिन ने हौस्पिटल के छोटे से कमरे में सुहास के बिखरे सामान को समेट दिया. सुहास इवलिन को मना नहीं कर पाया.

''ओके सर, आप से औफिस में कल मिलती हूं, औल आर वेटिंग फौर यू,'' इवलिन मुसकराती हुई चली गई.

सुहास उस कमरे में अकेला रह गया. पर रजनीगंधा के फूलों की खुशबू उस पर छा गई थी. क्यों? यह प्रश्न बारबार उस के आगे खड़ा हो जाता और वह उस से भागता रहता. उस ने कभी इवलिन का चेहरा गौर से नहीं देखा था. वह नहीं बता सकता उस की आंखें कैसी हैं, उस के होंठ कैसे हैं. दुबलीपतली छरहरी भी नहीं कि वह एक पल में अपने आकर्षण में किसी को बांध ले. पर हां सुहास इतना जानता है कि इवलिन जब आती है तो उस की दुनिया भी मुसकराने लगती है. सीधेसपाट शब्दों में इवलिन सुहास को अच्छी लगती है और इस महानगर की अजनबीयत में इवलिन एक ऐसा चेहरा बन कर उभर रही थी जिस में उसे अपनेपन की खुशबू आती थी. हौस्पिटल में इवलिन का हर दिन आना, उस की देखभाल करना, यह सब याद करते हुए उस की आंखें आंसुओं की नदी में डूब गईं. आंखें अकेलेअकेले छलछला रही थीं और उन्हें थामने वाला कोई न था.

हौस्पिटल से डिस्चार्ज होने के बाद सुहास को अपने फ्लैट में अकेलापन घर करने लगा. 'अम्मा... अम्मा...' सुहास चीखचीख कर रोने लगा. बहुत देर तक वह सुबकता रहा. अम्मा को उस ने अपनी बीमारी के विषय में नहीं बताया था. नाहक ही अम्मा परेशान होंगी. उसे इस बात का बहुत ध्यान रहता था और फिर फोन करने के लिए पीसीओ जाना पड़ता था या औफिस से फोन करो और लगभग एक हफ्ते से तो वह औफिस भी नहीं गया था.

सुबह चिड़ियों की चहचहाहट ने सुहास को जगा दिया. सुहास रोतेरोते कब सो गया था, उसे पता ही नहीं चला था. सूरज की छनती हुई किरणें और रजनीगंधा के फूलों की खुशबू सारे कमरे में फैल गई थी. सुहास के अकेलेपन को रजनीगंधा की खुशबू ने भर दिया था. सुहास मंदमंद मुसकरा रहा था.

सुहास को कल औफिस जौइन करना था. उस ने अपने फ्लैट के सामान को सिरे से रखना शुरू किया.

एक स्फूर्ति झलक रही थी उस के काम में. अचानक सुहास की नजर बाहर लटके लैटरबौक्स पर गई. यह क्या? इंटिमेशन लैटर निकाला और पढ़ा. उसे तो कल सुबह फ्लाइट से दिल्ली निकलना है. सुहास अनमना सा हो गया. रजनीगंधा के फूलों की ओर उस की नजर गई और फिर वह अपना सूटकेस संभालने लगा.

''सुहास सर, आज नहीं आए?'' इवलिन ने औफिस में कुणाल से पूछा.

''अरे यार, तुम्हें पता नहीं, सर तो एक महीने के लिए दिल्ली गए हैं और सुना है उन का वहीं ट्रांसफर हो रहा है.''

''ओके, ओके,'' इवलिन का स्वर बुझ सा गया.

समय कब हाथों से फिसल जाता है, पता ही नहीं चलता. रह जाते हैं, बस, कुछ पल यादों में लिपटे हुए.

समय बीता. सुहास की शादी हुई. इवलिन से नहीं. वह लड़की साधारण सी हलकी मोटी और गेहुएं रंग की थी. शायद, कुछ इवलिन जैसी.

''सुहास, यह कार्ड, ये सूखे फूल देखो तो,'' सुरेखा ने सुहास को देते हुए कहा, ''योर स्माइल इंक्रीजेज योर फेस वैल्यू, रजनीगंधा के सूखे फूल?''

सुहास ने उन पलों में लिपटी यादों को सहेज कर रखा था... क्यों, आखिर क्यों? ●

प्रेम समस्याएं

मेरी उम्र 31 वर्ष हो गई है. शादी नहीं की लेकिन रिलेशनशिप में हूं पिछले 7 साल से. वह मुझ से 18 साल बड़ी है. उस के 2 बच्चे हैं जो मुझ से उम्र में 10–12 साल ही छोटे होंगे. अब वह मुझ से रिलेशन खत्म करना चाहती है क्योंकि उसे लगता है कि उस के बच्चे बड़े हो गए हैं और उन्हें यदि उस के रिलेशनशिप के बारे में पता चलेगा तो ठीक नहीं होगा. वह अपने बच्चों की नजर में गिरना नहीं चाहती. लेकिन मेरा दिल नहीं मान रहा कि मैं इस रिलेशनशिप से पीछे हटूं. कैसे दिल को समझाऊं?

आप दोनों के रिलेशनशिप का कोई भविष्य नहीं है. क्या आप में इतनी हिम्मत है कि अपने से 18 साल बड़ी अपनी पार्टनर के साथ शादी कर सकें, अपने मातापिता को इस शादी के लिए राजी कर सकें. जवाब आप का नहीं में है तो बात यहीं पर खत्म हो जाती है.

देखिए, आप की पार्टनर अच्छी तरह समझती है कि न तो आप उस से शादी करेंगे और न ही वह आप से शादी कर अपने बच्चों के भविष्य से खिलवाड़ करना चाहती है. इसलिए वह पिछले 7 वर्षों से सिर्फ रिलेशनशिप में आप के साथ है क्योंकि हर किसी को अपनी फिजिकल नीड और फीलिंग्स शेयर करने की जरूरत होती है.

7 वर्षों से आप दोनों एकदूसरे को मैंटली और फिजिकली सपोर्ट करते रहे और अब आप की पार्टनर यह रिलेशनशिप खत्म करना चाहती है क्योंकि वह अपने बच्चों के सामने अपनी फेयर इमेज रखना चाहती है या मां के रूप में बच्चों के आगे उन की जो तसवीर बनी हुई है, उसे वह वैसी की वैसी रखना चाहती है.

अगर ऐसा है तो उन का साथ दीजिए. स्वार्थी मत बनिए. जो वह चाहती है उसे करने दीजिए. वह अगर रिस्पैक्टफुल लाइफ जीना चाहती है और अकेले अपने बच्चों के साथ खुश रहना चाहती है तो उसे फ्री कर दें.

आप की उम्र अभी ज्यादा नहीं है. अब अपनी आगे की लाइफ के बारे में सोचें. जीवन में स्थिरता चाहते हैं तो शादी के बारे में सोच सकते हैं. एक परफैक्ट जीवनसाथी लाइफ में खुशी लाती है. इसलिए लाइफ को कौंप्लीकेटिड न बना कर एक अच्छी लाइफ के बारे में विचार करें.

मेरी गर्लफ्रेंड और मैं दोनों साथसाथ एक ही कालेज में पढ़ते थे. चांस की बात है कि हमारी दोनों की जौब सेम औफिस में लग गई. कालेज में हम अच्छे फ्रेंड थे, इसलिए हमारी बातें सभी विषयों पर होती थीं लेकिन प्यारमोहब्बत की बात जब शुरू होती थी तो हम दोनों ही चुप लगा लेते थे. लेकिन अब हम दोनों की लाइफ सैट हो गई है, मैं उसे प्रपोज कर के जता देना चाहता हूं कि मैं उस से कितना प्यार करता हूं और सारी जिंदगी के लिए उस का साथ चाहता हूं शादी कर के.

वैसे तो फिल्मों में प्रपोज करते बहुत देखा है लेकिन हकीकत में यह करते हुए मेरे हाथपांव फूल रहे हैं. कैसे व क्या करूं, समझ नहीं पा रहा.

अकसर बहुत लड़कों में यह प्रौब्लम देखने को मिलती है कि वे लड़की से नौर्मल बातें तो बहुत करते हैं लेकिन जब उस लड़की से अपने प्यार का इजहार करने की बारी आती है तो वे हिम्मत नहीं कर पाते हैं. वे बहुत नर्वस हो जाते हैं जबकि उन को पूरा पता होता है कि लड़की भी उन से प्यार करती है. इस के बावजूद वे लड़की से अपने दिल की बात शेयर नहीं कर पाते हैं.

जहां तक आप का केस है, आप को 100 प्रतिशत यकीन है कि वह भी आप से प्यार करती है तो आप को डरना नहीं चाहिए. वह लड़की आप के प्रपोजल का इंतजार कर रही होगी.

एक सिंपल सी बात हम आप से कहना चाहते हैं कि यदि वह लड़की आप से प्यार करती है तो इस से कोई फर्क नहीं पड़ता है कि आप कहां पर और उस को क्या दे कर प्रपोज कर रहे हो.

यदि उस के दिल में आप के लिए भी लव है तो आप केवल सच्चे दिल से बिना कोई गुलाब का फूल दिए भी 'आई लव यू' बोलोगे तो वह लड़की आप को हां ही बोलेगी.

आप कोई उस लड़की को इंप्रैस नहीं कर रहे हैं, आप ने उस लड़की को पहले से ही इंप्रैस कर लिया है, इसलिए आप को प्रपोज करने के लिए ज्यादा टैंशन लेने की कोई जरूरत नहीं है.

मैं स्कूलगोइंग गर्ल हूं. मैं फिल्मों में जब भी 'किस' सीन देखती हूं तो सोचती हूं कि क्या प्यार में किस करना जरूरी होता है. मैं किसी लड़के को किस करूं, यह सोचना भी अजीब लगता है. क्या किस करने से कोई फायदा होता है?

आप जिस उम्र के दौर से गुजर रही हैं उस में इस तरह के सवाल दिमाग में आते ही हैं. यह कोई अजीब या नई बात नहीं है. उम्र बढ़ने के साथसाथ इन सवालों के जवाब खुदबखुद मिल जाते हैं.

जब किसी से प्यार होता है तब उस की हर चीज अच्छी लगती है. फिर 'किस' तो प्यार को जताने का बेहतरीन तरीका है. और 'किस' का फायदा यह है कि मस्तिष्क में हैप्पी हार्मोंस का स्राव होता है जिस से आप को खुशी मिलती है. इन हार्मोंस में औक्सीटोसिन, डोपामाइन और सेरोटोनिन शामिल हैं, जो आप के प्यार और फीलिंग्स को बढ़ाते हैं.

मेरी उम्र 24 साल की है. मम्मीपापा मेरे लिए लड़का ढूंढ़ रहे हैं शादी के लिए. जो भी लड़का आता है उस की उम्र 27–28 तक की होती है जबकि मुझे बड़ी उम्र के 35 साल तक पुरुष पसंद हैं? मम्मीपापा से कहती हूं तो वे डांटते हैं कि उम्र का इतना ज्यादा गैप अच्छा नहीं. शादी में आगे चल कर दिक्कतें आ सकती हैं. आप ही बताएं क्या करूं. मन मार के शादी कर लूं क्या, यह ठीक रहेगा क्या?

शादी का चलना या न चलने की गारंटी उम्र से नहीं बल्कि पाट्नर्स के बीच की बौंडिंग से होती है. शादी में अपनी पसंद का पार्टनर न हो तो वैसे ही गृहस्थी की गाड़ी मजे में नहीं चलती. साथी अपनी पसंद का हो, चाहे ज्यादा उम्र का ही क्यों न हो. शादी में प्यार बना रहता है.

30 की उम्र के बाद लड़कों में मैच्योरिटी आ जाती है. धीरगंभीर व्यक्तित्व उन्हें आकर्षक बनाता है. लेकिन 27–28 साल के लड़के भी अच्छे समझादार होते हैं. यदि आप उन से मिलें, बातचीत करें, हो सकता है वे भी आप को पसंद आ जाएं. किसी को बिना जानेपरखे आप कुछ नहीं कह सकतीं. इसलिए सोचविचार कर शादी करें. ●

SMS/WHATSAPP +918527666772

आप अपनी प्रेम समस्याएं, संपादकीय विभाग, मुक्ता, दिल्ली प्रैस भवन, **ई–8**, रानी झांसी मार्ग, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली–110055 पर भेजें. SMS/Whatsapp से भी भेज सकते हैं. ईमेल द्वारा mukta@delhipress.in पर भेजें. नाम गुप्त रखा जाएगा.

सभी देशवासियों को

75वें स्वतंत्रता दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएँ

जय हिंद

कण-कण में,
हर धड़कन में... **पहले देश**

लाल किले की
प्रात:6:25 बजे

75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव

सत्यमेव जयते
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

> “ देश की आज़ादी का अमृत महोत्सव कोटि-कोटि भारतवासियों का पर्व है, जिसमें पूरे भारत की परंपरा भी है, स्वाधीनता संग्राम की परछाई भी है और आज़ाद भारत की गौरवान्वित करने वाली प्रगति भी है। यह आयोजन हमारे इन 75 वर्षों की उपलब्धियों को दुनिया के सामने रखने का और अगले 25 वर्षों के विकास की रूपरेखा और संकल्प के लिए प्रेरणा लेने का अवसर है। ”
>
> \- **नरेन्द्र मोदी**

davp 22201/13/0010/2122

प्राचीर से स्वतंत्रता दिवस समारोह का
से दूरदर्शन द्वारा सीधा प्रसारण

#AmritMahotsav

क्यूआर कोड स्कैन करें और
आज़ादी के अमृत महोत्सव में भाग लें

प्यार ऐसी चीज है जिसे जताना जरूरी है, अन्यथा उस की अहमियत समझ नहीं आती. पतिपत्नी हों या प्रेमीप्रेमिका, उन्हें अपने प्यार का इजहार करना चाहिए और खुल कर अपने दिल की बात बता देनी चाहिए.

लेख • किरण बाला

प्यार जताने से बढ़ती है रिश्तों की महक

अकसर देखा गया है कि पुरुष अपनी पत्नी या प्रेमिका से प्यार करते हैं या स्त्रियां अपने पति या प्रेमी से करती हैं लेकिन जबां से 'आई लव यू' कहने में संकोच करती हैं. जबकि, पार्टनर इस शब्द को सुनने हेतु बेताब रहता है. ढाई अक्षर के शब्द प्रेम को जाहिर करने/बोलने से इस का जादुई असर होता है.

यदि पतिपत्नी के संबंधों की बात करें, तो उन में असीम प्यार हो सकता है लेकिन वे उसे जताना भूल जाते हैं. केवल शारीरिक संबंध बना लेना ही प्यार नहीं है और न ही यह उस की परिणति. प्यार उस से सर्वाधिक भिन्न है. प्यार भावनात्मक होता है. शारीरिक मिलन गौण होता है. जो दंपती केवल शारीरिक संबंध को ही प्यार समझते हैं, उन्हें अपनी यह धारणा दूर कर लेनी चाहिए.

अंतरंग संबंधों के दौरान जब तक प्यार का इजहार नहीं करेंगे, उस का कोई अर्थ नहीं है. विशिष्ट अवसरों पर तो उसे जाहिर करना बहुत जरूरी है. जैसे वेलैंटाइन डे पर एकदूसरे को गुलाब दे कर अपने प्यार का इजहार कर सकते हैं. पार्टनर के जन्मदिन या शादी की वर्षगांठ पर भी प्यार का इजहार करना जरूरी है.

प्यार के इजहार के लिए जरूरी नहीं कि आप एकदूसरे को महंगे तोहफे ही दें. बिना किसी तोहफे के भी शब्दों से उस का इजहार कर सकते हैं. आप की बौडी लैंग्वेज से भी वह प्रकट होना चाहिए. जब आप अपना प्यार प्रकट करते हैं तो इस से एकदूसरे के प्रति भरोसा बढ़ता है. इस से रिश्तों की नींव मजबूत होती है.

जब आपस में प्यार होता है, तो वे कोई भी बात एकदूसरे से छिपाते नहीं हैं, अपितु उन्हें शेयर करते हैं. दुरावछिपाव की कोई जगह नहीं होती.

यदि पतिपत्नी के बीच अटूट प्यार है, तो उन के बीच कभी कोई तीसरा नहीं आ सकता. उन के विवाहेतर संबंध होने की आशंका नहीं रहती. वे एकदूसरे के प्रति पूर्ण समर्पित रहते हैं. तन और मन दोनों से वे एकदूसरे के होते हैं.

जिन पतिपत्नी के बीच हद दर्जे का प्यार होता है, उन का दांपत्य बड़ा ही सुखद और दीर्घायु होता है. परिवार में सुखशांति बनी रहती है. परिणामस्वरूप, तनावजनित बीमारियों से वे दूर रहते हैं.

यदि पतिपत्नी के बीच प्रेम है, तो वे एकदूसरे की इच्छाओं और भावनाओं को बिना कहे ही समझ जाते हैं. एकदूसरे का सम्मान करते हैं, उन के बीच ईगो टकराता नहीं है. यह ईगो ही पतिपत्नी के बीच दरार पैदा करता है.

पतिपत्नी को आपस में यह जताना चाहिए कि वे उन की जिंदगी में कितने अहम हैं. उन के बगैर रहने की कल्पना नहीं की जा सकती.

यदि पति या पत्नी किसी काम से कहीं गए हों, तो वहां से भी वे वीडियो कौल, एसएमएस आदि के जरिए प्यारभरी बातें कर सकते हैं. अब से कुछ दशकों पहले जब स्मार्टफोन, कंप्यूटर नहीं थे, तब लव लैटर्स या प्रेमपत्रों के माध्यम से ही पतिपत्नी या प्रेमीप्रेमिका अपने प्यार का इजहार करते थे.

पुरुष अपनी पत्नी या प्रेमिका से प्यार तो करते हैं, लेकिन उसे जताना नहीं आता. वे अपने कामधंधे या नौकरी में इतने व्यस्त रहते हैं कि पत्नी के लिए समय नहीं निकाल पाते. सुबह कह कर जाते हैं कि शाम को तैयार रहना, फिल्म देखने जाएंगे. लेकिन ऐन वक्त पर व्यस्तता के कारण मना कर देते हैं. इस से गलत संदेश जाता है.

लड़कियां या महिलाएं अपने प्रेमी या पति से प्यार तो करती हैं, लेकिन नारीसुलभ लज्जा की वजह से वे उस की पहल नहीं करतीं. उन्हें इस में शर्म आती है. उन्हें अपनी सोच बदलनी चाहिए. समय बदल रहा है. जब वे अपने पति या प्रेमी को उस के नाम से बुला सकती हैं, तो उन के साथ प्यार का इजहार करने में संकोच क्यों करती हैं? पति या प्रेमी तो इस की प्रतीक्षा में ही रहता है कि कब आप इस की पहल करती हैं.

यदि आप अपने पार्टनर के साथ प्यार का इजहार नहीं करते, तो इस से वे अपनी उपेक्षा समझेंग, जबकि सामने वाले की ऐसी मंशा नहीं होती.

पतिपत्नी को अपना प्यार जताने के लिए कभीकभी एकदूसरे को सरप्राइज भी देना चाहिए. महीने में एकाध बार मूवी देखने जा सकते हैं या किसी होटल, रैस्तरां में लंचडिनर कर सकते हैं. प्यार का इजहार करने के लिए किसी रोमांटिक स्थल का चुनाव कर वहां जाया जा सकता है.

पतिपत्नी की शादी को भले ही कितने दशक बीत जाएं, उन के बीच प्यार कम नहीं होना चाहिए. उन का प्यार ही एकदूसरे का सहारा होता है.

यदि आप को प्यार जताना नहीं आता है, तो इसे सीखना होगा. इस के लिए मैरिज काउंसलर से परामर्श ले सकते हैं. अपने यारदोस्त, सखीसहेलियों से भी प्यार जताने व इजहार के तरीके सीख सकते हैं. इसी से रिश्तों की महक बनी रहती है.

यदि आप अपने पार्टनर से प्यार से पेश आते हैं, तो इस का दोनों की सेहत पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है. उन्हें स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं कम से कम होती हैं. सुखी दांपत्य के लिए यह जरूरी भी है.

यदि आप अपने पार्टनर से प्यार करते हैं, तो उस की छोटीमोटी गलतियों को नजरअंदाज करना चाहिए, न कि बात का बतंगड़ बनाना चाहिए. प्यार करने वाले कभी लड़तेझगड़ते नहीं. और कभी ऐसा मौका आ भी जाता है, तो उस के सुलझाने का अंदाज अलग उन का होता है. दूसरे ही पल वे एक हो जाते हैं.

प्यार एक एहसास है जिसे पैसे से खरीदा नहीं जा सकता. पैसे से आप भौतिक साधन, सुविधाएं जुटा सकते हैं, लेकिन किसी को प्यार करने के लिए बाध्य नहीं कर सकते. यह तो दिल की बात है. प्यार दिल से होता है. आप का दिल आप के पार्टनर के नाम से ही धड़कना चाहिए. ●

मासिक पत्रिका
मुक्ता
सजग सरस युवा
एक प्रति की कीमत 30 रु.
1 साल के लिए 288 रु.
2 साल के लिए 540 रु.
दिल्ली प्रैस कार्यालय फोन नं. : 011-41398888, एक्सटेंशन नं. : 221, 281, टोल फ्री फोन नं. : 1800-103-8880
ईमेल - subscription@delhipress.in / circulation@delhipressgroup.com

सुहाना खान की मदमस्त अदा

बौलीवुड के बादशाह, जानेमाने अभिनेता शाहरुख खान और गौरी खान की बेटी सुहाना खान बौलीवुड इंडस्ट्री में सब से ज्यादा चर्चा में रहने वाले स्टारकिड्स में से एक हैं. बौलीवुड में बेशक सुहाना ने डैब्यू नहीं किया है लेकिन उन के फैंस की लिस्ट काफी लंबी है.

सुहाना खान इस समय न्यूयौर्क यूनिवर्सिटी से एक्टिंग की ट्रेनिंग ले रही हैं. ये फुटबौल की बेहतरीन खिलाड़ी हैं. डांस, लेखन इन का शौक है. इन को पौप म्यूजिक काफी पसंद है और इंगलिश सिंगर जायन मलिक के गाने सुनना काफी पसंद करती हैं. इटालियन फूड की शौकीन हैं.

हाल ही में पुर्तगाल में वैकेशन पर चिल करती सुहाना ने इंस्टा पर अपनी फोटो पोस्ट की है जिस में एक क्लासिक एलबीडी पहने हुए काफी खूबसूरत दिख रही हैं. सुहाना के इंस्टाग्राम पर 2 मिलियन फौलोअर हैं. ●

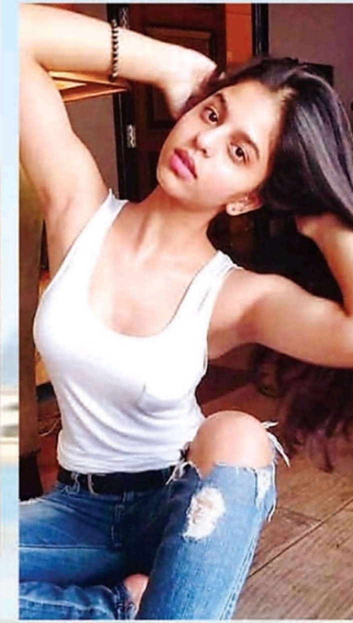

le OF THE MONTH

वैब सीरीज रिव्यू

क्या देखें

नेवर हैव आई एवर

क्रिएटर–मिंदी कलिंग, लांग फिशर
स्टारकास्ट–मैत्री रामकृष्णन, डैरेन बर्नेट, जरेन लेव्सेन, रिचा मूरजानी, पूरना जगन्नाथन.
प्लेटफौर्म–नैटफ्लिक्स
जौनर–कौमेडी ड्रामा.

भारत के बाहर हौलीवुड में इंडियन ट्रेडिशन को मुख्य रूप से केंद्र में रख कर बनाई गई यह पहली सीरीज है. यह एक इंडो–वैस्टर्न कल्चर पर बेस्ड कौमेडी ड्रामा सीरीज है. इस सीरीज की मुख्य कैरेक्टर देवी विश्वकुमार है जो भारतीय है, लेकिन उस का परिवार कैलिफोर्निया में रहता है.

इस सीरीज का पहला सीजन पिछले साल अप्रैल में आया था जिसे पूरी दुनिया में बेहद पसंद किया गया था, खासकर देवी विश्वकुमार के किरदार को. जिस के बाद अब सीजन 2 आया है जो यकीनन दर्शकों को पसंद आएगा.

देवी एक इंडियन अमेरिकन गर्ल है, जो कालेज में अपनेआप को बदलना चाहती है. वह रोमांस करना चाहती है, पारिवारिक बंधनों से आजाद होना चाहती है और खुल कर जीवन का आनंद उठाना चाहती है. पर हर बार कुछ न कुछ दिक्कत उस के साथ घट ही जाती है.

सीजन 1 की तरह ही इस सीजन में भी देवी के चटकपटक किरदार को भुनाया गया है बल्कि पिछली बार से ज्यादा देवी के किरदार को बोल्ड अंदाज में दिखाने की कोशिश की गई है. भारत से ताल्लुक रखने वाली इस लड़की का क्रेज कालेज में भले ही कम हो लेकिन इस को लड़कों की आंखों में बने रहना है. इस के लिए यह तमाम कोशिशें करती रहती है. देवी की मां, जिन्हें इस सीरीज में एक ओवर प्रोटैक्टिव मां के किरदार में दिखाया गया है, ने दर्शकों को हंसाने व अपना किरदार निभाने में कोई कसर नहीं छोड़ी.

इस सीजन में देवी के साथ उन की दादी भी चैन्नई से रहने आ चुकी हैं. जहां पहले कहानी महज स्कूल से घर तक ही हुआ करती थी, अब इस सीजन में देवी के रिश्तेदारों को भी जोड़ा गया है, जो भारतीय दर्शकों को बहुत रिलेट करेगा. यकीनन भारतीय दर्शक होने के नाते आप को यह सीरीज जरूर पसंद आने वाली है.

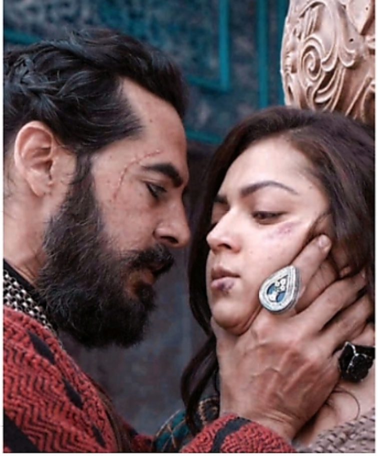

द एम्पायर

क्रिएटर–निखिल अडवाणी
स्टारकास्ट–कुणाल कपूर, डीनो मोरिया, शबाना आजमी, दृष्टि धामी व अन्य.
प्लेटफौर्म–डिज्नी प्लस हौटस्टार
जौनर–पीरियड ड्रामा थ्रिलर.

पहले तो यह जान लें कि यह सीरीज एलैक्स रेदरफोर्ड की लिखी बुक सीरीज 'एम्पायर औफ द मुगल्स' की पहली किताब 'एम्पायर औफ द मुगल्स : रेडर्स फ्रौम द नौर्थ' पर आधारित है. इस बुक सीरीज को 6 किताबों में मुगल साम्राज्य को समेटा हुआ है. भारत में मुगल साम्राज्य की शुरुआत बाबर से होती है, इसलिए यह पूरी सीरीज बाबर की जीवनयात्रा को दिखाती है.

सीरीज के विवादों से थोड़ा परे हट कर सोचें तो यह बात माननी पड़ेगी कि भारत में मुगल सल्तनत के दौरान ऐसे एम्पायर खड़े हुए जिन का लोहा पूरी दुनिया ने माना और जिस की गाथा ही किसी महाकाव्य से कम नहीं. जाहिर है इस सीरीज को भारतीय वर्जन के 'गेम औफ थ्रोन' के रूप में भी देखा जा रहा है.

जैसा पहले भी बताया गया है कि यह सीरीज मुगल सल्तनत के शुरुआत की है तो आज से तकरीबन 500 वर्ष पहले सन 1500 के आसपास यह सीरीज हमें पहुंचाती है. जहां एक 14 साल के लड़के बाबर को तख्त पर बैठा दिया जाता है.

फिर वह राजनीति, षड्यंत्र और दांवपेंच सीखता है और उज्बेकिस्तान का शहर समरकंद जीत लेता है. लेकिन इस जीत को ज्यादा समय नहीं होता कि उसे मोहम्मद शयबानी के हाथों गंवाना पड़ता है, जिस के बाद कई उठापटकों के साथ उसे गुजरना पड़ता है. इसी जद्दोजेहद में अपनेपराए का फर्क, आतंरिक राजनीति इस सीरीज में दिखाया गया है.

समझा जा सकता है कि कम बजट का प्रभाव इस सीरीज में दिख जाता है. लेकिन सीरीज को 'लार्जर दैन लाइफ' जैसे बनाने की अच्छी कोशिश की गई है. इस तरह के आलीशान और रौयल विषयों पर सीरीज बनाना बड़ी बात है. एक समय में बी आर चोपड़ा की 'महाभारत' में यह दमखम देखा गया था. अच्छी बात यह है कि सीरीज में अनर्गल चीजें कम दिखाई गई हैं, हर किसी किरदार में डार्क और वाइट के बीच ग्रे की गुंजाइश बनाई गई है.

जिन्हें इतिहास के मामलों में खासी दिलचस्पी है और इस तरह के हाई किरदारों में दिलचस्पी रखते हैं वे इस सीरीज का लुत्फ उठा सकते हैं.

द लास्ट आवर

क्रिएटर–अमित कुमार
स्टारकास्ट–करमा तपाका, संजय कपूर, शाहाना गोस्वामी, शैली क्रिशेन, मन्दाकिनी गोस्वामी व अन्य.
प्लेटफौर्म–अमेजन प्राइम
जौनर–क्राइम थ्रिलर.

भारत में पिछले 3–4 सालों में सिनेमा को ले कर जो बदलाव आया है वह यह कि अब व्यूअर्स बड़े स्टार की खोज की जगह अलग कहानी और कलाकारों की कला को देखना पसंद कर रहे हैं. नतीजतन, निर्देशक भी कुछ अलग करने की कोशिश कर रहे हैं. सो, कहानी में फिट बैठने वाले कलाकारों की डिमांड भी बढ़ रही है चाहे वे नया ही क्यों न हों.

इस सीरीज में भी अधिकतर किरदार बिलकुल नए हैं, यहां तक कि किरदार कहानी के असल ओरिजिन से मेल खाते हैं, जैसा कि फिल्म के लीड कैरेक्टर की भूमिका में ही करमा तपाका हैं. चूंकि अलग हट के कहानी और कलाकारों ने ठीकठाक काम किया है तो सीरीज एक बार देखने लायक बन जाती है.

हां, सीरीज में संस्कृति के नाम पर अंधविश्वास परोसने का काम किया गया है पर नई संस्कृति को जानने के लिए इसे एक बार समझा जा सकता है. इस के अलावा यह एक सस्पैंस थ्रिलर सीरीज है तो जो रहस्यमयी थ्रिलर सीरीज के दीवाने हैं उन्हें यह सीरीज पसंद आ जाएगी.

सीरीज हिंदुस्तान के अनछुए हिस्से 'सिक्किम' में बनाई गई है. सीरीज को देखने के बाद जेहन में यह सवाल उठा कि भारत के इतने सुंदर हिस्से की तरफ क्यों किसी डायरैक्टर की नजर नहीं दौड़ती. सिक्किम की खूबसूरती देखने लायक है. पहाड़ियां, नदी, घुमावदार रास्ते, पहाड़ों पर बने केबिन और सिक्किम की फिजा में ठंडक 6 बाई 4 के मोबाइल स्क्रीन में भी महसूस की जा सकती है.

वैब सीरीज 'द लास्ट आवर' कहानी एक शामन की है जिसे झाखरी भी कहा जाता है. स्थानीय लोककथा के मुताबिक ये लोग मौत के ठीक घंटाभर पहले की घटनाएं मरे हुए इंसान के शरीर के जरिए जान सकते हैं.

शामन/झाखरी जैसे लोगों को नौर्थ इंडिया में तांत्रिक, ओझा या सोखा भी कहा जाता है. ऐसा माना जाता है कि ऐसे लोगों के पास सुपरनैचुरल पावर होती है, जिस के जरिए वे कुछ भी कर सकते हैं. यह कहानी तांत्रिकों के बीच अपनी परंपरा को ले कर भी है. किस के पास कौन सी विधा रहेगी और उस का उपयोग वह कैसे करेगा, इस वर्चस्व को भी दिखाया गया है.

–रोहित ●

प्यार में जरा संभल कर

लेख • डा. विनोद गुप्ता

रिलेशनशिप में सैक्स के इतर प्यार जताने के बहुत से तरीके हैं. लेकिन लड़की पर हमेशा दबाव होता है कि जब तक वह अपना तन समर्पित नहीं करती तब तक वह सच्चा प्यार ही नहीं करती. आखिर प्यार में सैक्स की शर्त क्यों?

अर्पिता और मोहित एक ही महल्ले में रहते हैं. इस कारण उन का परिचय पहले से ही था. जब दोनों ने स्कूल की पढ़ाई पूरी कर के एक ही कालेज में एडमिशन लिया, तो उन में दोस्ती हो गई. यह दोस्ती धीरेधीरे प्यार में बदल गई.

शुरुआत में वे लुकछिप कर मिलते थे, फिर एकांत में मिलने लगे. इस के बाद दोनों रैस्तरां में जाने लगे. फिल्में भी कक्षा बंक कर के देखने लगे. यहां तक तो ठीक था. दोनों ही एकदूसरे को चाहने लगे थे. चूंकि आग दोनों ओर से लगी थी, इसलिए वे सैक्स के लिए उतावले होने लगे.

दोनों ने प्लान बनाया और एक होटल में दिनभर के लिए कमरा बुक कराया. मोहित, अर्पिता को अपनी पत्नी बना कर ले गया. दोनों ने एकदूसरे को बांहों में लिया, किस की बौछारें होने लगीं और अंत में वह क्षण आ ही गया जिस के लिए दोनों बेकरार थे.

अंतरंग क्षणों की शुरुआत के पहले अर्पिता ने उसे कंडोम लगा कर संबंध बनाने को कहा. लेकिन मोहित जल्दबाजी में उसे लाना भूल गया था. बिना कंडोम के संबंध बनाने से अर्पिता डरने लगी. इस पर मोहित ने यह कह कर चुप करा दिया कि एकदो बार बिना कंडोम के संबंध बनाने से कुछ नहीं होगा. आखिरकार, अर्पिता ने सहमति दे दी. दोनों को ही इस में असीम आनंद मिला.

कुछ दिनों बाद जब अर्पिता का मासिकधर्म नियत समय पर नहीं आया तो उसे चिंता हुई. उस के मन में शंका हुई कि कहीं वह प्रैग्नैंट तो नहीं हो गई? उस ने इस संबंध में मोहित को बताया.

मोहित ने दवाई की दुकान से उसे एक प्रैग्नैंसी किट ला कर दी. परीक्षण करने पर उस का शक सही निकला. इस पर वह मोहित को ले कर लेडी डाक्टर के पास गई. डाक्टर ने भी जांच और परीक्षण के बाद उस के प्रैग्नैंट होने की पुष्टि की. अर्पिता के पैरोंतले जमीन खिसक गई. मोहित ने उस का गर्भपात करा दिया.

अर्पिता समय पर चेती, तो उस ने प्रैग्नैंसी से छुटकारा पा लिया. लेकिन कई लड़कियां ऐसी भी हैं जो अपने प्रेमी के साथ असुरक्षित संबंध बनाती हैं और जब वे गर्भपात के लिए डाक्टर के पास जाती हैं, तब तक बहुत देर हो चुकी होती है.

ऐसे में डाक्टर गर्भपात करने से इनकार कर देते हैं, क्योंकि इस से उस की जान को खतरा हो सकता है. वैसे भी कानूनन एक निश्चित अवधि का गर्भ ही नष्ट किया जा सकता है. इस वजह से बच्चे को जन्म देने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता.

लड़कियों की एक छोटी सी भूल या नासमझ उन की जिंदगी में कई प्रश्न खड़े कर देती है. घरपरिवार वाले भी उसे ही दोषी मानते हैं. लड़के के मातापिता ऐसी लड़की को अपनी बहू बनाने से साफ इनकार कर देते हैं.

जो प्रेमी अपनी प्रेमिका को सब्जबाग दिखा कर शारीरिक संबंध बनाता है, मौका आने पर वह चुप्पी साध लेता है. ऐसे में प्रेमिका को कितनी कोफ्त होती है, यह बताने की आवश्यकता नहीं है.

आज भी समाज में बिना ब्याही लड़की के मां बनने को हेय दृष्टि से देखा जाता है. उसे चरित्रहीन समझा जाता है. उधर, प्रेमी बच्चे की जिम्मेदारी लेने से इनकार कर देता है. यहां तक कि बच्चे को अपना मानने से भी इनकार कर देता है.

कितनी लड़कियां अपने प्रेमी का डीएनए टैस्ट करा कर उसे अपनी जिम्मेदारी का एहसास कराती है? वैसे भी कोर्ट की अनुमति के बगैर किसी का डीएनए टैस्ट कराना आसान नहीं है.

यदि किसी कारणवश लड़की की शादी अन्यत्र हो गई तो उस के मन में यह डर बैठ जाएगा कि कहीं सुहागरात को उस के बनाए संबंधों की पोल न खुल जाए. यदि पति को इस बात का पता न भी चले तो भी वह अपने अपराधबोध से सदैव ग्रसित रहेगी तथा उसे अपने किए पर आत्मग्लानि होगी.

लड़के शारीरिक संबंध बनाने के लिए उतावले रहते हैं. वे येनकेन प्रकारेण अपनी प्रेमिका से संबंध बनाने के इच्छुक रहते हैं. इस के लिए वे झूठेसच्चे वादे करते हैं, उसे बहलातेफुसलाते हैं और उस की रजामंदी ले लेते हैं.

पहली बार कोई लड़की शारीरिक संबंधों के लिए हिचकिचाती है. लेकिन एक बार बना लेने के बाद दोनों के भीतर आग भड़क जाती है और यह सिलसिला चल निकलता है. जब तनमन में आग लगी हो, तो सुरक्षा उपकरण यानी कंडोम की परवा कौन करता है? कुछ पलों का यह मजा जिंदगीभर की त्रासदी बन जाता है.

लड़कियां किसी भी स्थिति में प्रेमी के भुलावे में न आएं. कई बार प्रेमी खड़े हो कर संभोग करने की बात करता है कि इस से गर्भधारण का खतरा नहीं रहेगा. लेकिन यह गलत है. संभोग चाहे किसी भी स्थिति में किया जाए, लड़की गर्भवती हो सकती है.

कई लड़कियों की सोच होती है कि संभोग के तुरंत बाद पेशाब करने से गर्भवती नहीं होगी. लेकिन उन की यह धारणा भी गलत है. ध्यान रहे, मूत्र मूत्राशय से निकलता है. इसलिए वह अपने साथ योनि के किसी भी शुक्राणु को बाहर नहीं निकालता.

कई बार प्रेमी यह भरोसा दिलाता है कि संभोग के दौरान वीर्यपात होने से पूर्व ही अपने लिंग को योनि से बाहर निकाल लेगा, इसलिए गर्भवती होने का खतरा नहीं रहेगा. उस के भुलावे में न आएं.

कई बार प्रेमी योनि के ऊपर या आसपास वीर्यपात करता है और कहता है कि इस से गर्भधारण नहीं होगा. लेकिन कुछ शुक्राणु योनि मार्ग से अंदर जा सकते हैं और गर्भवती होने की संभावना रहती है.

जब कोई लड़की पहली बार संभोग करती है तो उस की सोच होती है कि पहली बार करने से वह गर्भवती नहीं होगी. लेकिन वह गर्भवती हो सकती है.

कई बार संभोग के दौरान कंडोम फट भी जाता है और शुक्राणु गर्भाशय में पहुंच सकते हैं और लड़की गर्भवती हो सकती है.

अधिकांश प्रेमिकाएं अपने प्रेमी द्वारा उत्साहित या विवश करने पर संबंध बनाने हेतु तैयार हो जाती हैं. कुछ लड़कियां सैक्स का मजा लेने के लिए भी प्रेमी के साथ हमबिस्तर होती हैं. कुछ प्रेमी का विश्वास पाने के लिए संबंध बनाती हैं. इसी प्रकार कुछ, न

कैसे कहें, इस पेसोपेश में हां कर देती हैं. इस के अलावा तनाव दूर करने के लिए भी लड़कियां संबंध बनाती हैं. जिन की नजर में शादी के पूर्व सैक्स जायज होता है और वे इस में कोई हर्ज नहीं मानतीं, ऐसी लड़कियां स्वयं आगे हो कर प्रेमी को इस के लिए उत्तेजित करती हैं.

प्यार में संभलना बहुत जरूरी है. लड़कियों का आचरण ऐसा न हो कि बाद में उन्हें अपने किए पर पछतावा हो. यदि लड़की भी शारीरिक संबंध के लिए उत्सुक हो तो इस में पर्याप्त सावधानी और सतर्कता बरतनी चाहिए.

- बगैर कंडोम के संबंध बनाने का जोखिम न लें. यदि प्रेमी कंडोम नहीं लगाता है तो संबंध बनाने से स्पष्ट इनकार कर दें. वैसे आजकल महिलाओं के इस्तेमाल के लिए भी अलग से कंडोम आ गए हैं जिन का इस्तेमाल कर वे अनचाहे गर्भ से बच सकती हैं.

- यदि गर्भपात कराने की नौबत आए तो हमेशा सरकारी अस्पताल को चुनें. अप्रशिक्षित या नीमहकीम डाक्टर से गर्भपात कराना खतरे से खाली नहीं है. इस से संक्रमण का खतरा रहता है. बच्चेदानी भी फट सकती है. पूरी तरह गर्भपात न होने के कारण कई बार खून का बहाव अधिक हो जाता है जिस से जान जोखिम में आ जाती है.

- किसी लड़की का किसी लड़के से प्यार करना बुरा नहीं है. बुरा है मर्यादा की सीमा को लांघना. प्यार एकदूसरे के प्रति समर्पण का नाम है. यह समर्पण मन से होना चाहिए. तन के समर्पण का वक्त अभी नहीं है. उस का सही समय शादी के बाद ही है. तब तक दोनों को धैर्य रखना चाहिए.

लड़कियों को चाहिए कि वे अपने प्रेमी या बौयफ्रैंड के साथ एक निश्चित दूरी बनाए रखें. इस के लिए आत्मसंयम की जरूरत है. जवानी के जोश में इतनी न बह जाएं कि सबकुछ बरबाद हो जाए.

- अपने प्रेमी के संग शराब कदापि न पिएं. क्योंकि इस से यौन उत्तेजना ज्यादा आसानी से आ जाती है. ऐसे में लड़की स्वयं यौनसंबंधों के लिए आतुर हो जाती है. नशा उतरने या होश में आने पर इस गलती का एहसास होता है. लेकिन इस के लिए क्या लड़की स्वयं दोषी नहीं है?

- लड़कियों को चाहिए कि वे अपने प्रेमी से कहें कि अगर वह सच्चा प्यार करता है तो सैक्स के लिए उस को मजबूर न करे. लड़कियों के साथ सैक्स करने के लिए लड़के दबाव डालने के लिए लड़की को कहते हैं कि 'अपने प्यार को प्रमाणित करो.'

इस का एक ही उत्तर है, 'यदि तुम मुझे सचमुच प्यार करते हो तो मुझ पर दबाव न डालो' या 'मैं यह नहीं करना चाहती.'

- प्रेमी बारबार एक ही बात कहते हैं लेकिन उसे खोने से डरो मत. यकीन मानिए, वह आप को छोड़ कर कहीं नहीं जाएगा. आप को अपनी सीमाएं नहीं लांघनी चाहिए. क्योंकि इस से न केवल आप की, बल्कि आप के परिवार की भी बदनामी होती है.

- लड़कियां कदापि यह न सोचें कि किसी से प्यार प्रकट करने का एकमात्र तरीका संभोग है. आप को यह अधिकार है कि यौन संबंधों से इनकार कर दें. यह न सोचें कि इस से प्रेमी बुरा मान जाएगा.

प्यार प्रकट करने के और भी कई तरीके हैं जिन में शारीरिक समीपता तो होती है, पर संभोग नहीं होता. जैसे एकदूसरे का हाथ अपने हाथ में लेना, बांहों में भरना, चूमना, स्पर्श करना आदि. ●

दिल्ली प्रैस

क्या कोरोना वायरस के प्राकृतिक प्रकोप ने भक्ति की पोलपट्टी खोल दी है. आखिर क्यों मंदिर-मसजिदों की जगह आज अस्पतालों, डाक्टरों, वैंटिलेटरों और औक्सीजन सिलैंडरों के पीछे भाग रहे हैं?

इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर आप के सुख व स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है. आप इन्हें किसी और पर नहीं टाल सकते. इन स्थितियों से निबटने के लिए आप को तथ्यों को समझना होगा.

दिल्ली प्रैस की पत्रिकाएं आप को हर सामाजिक, राजनीतिक, व्यक्तिगत और पारिवारिक उलझन को सुलझाने में मदद करती हैं और वह भी मनोरंजक तरीके से तर्क, तथ्य और दिल को छूने वाले शब्दों में. आज ही से पढ़िए.

सरिता ₹ 50 गृहशोभा ₹ 50 मुक्ता ₹ 30 सरस सलिल ₹ 10 मनोहर ₹ 50 सत्यकथा ₹ 40

आज ही समाचार विक्रेता से मांगें या वार्षिक ग्राहक बनने की सूचना पाने के लिए ईमेल भेजें. circulation@delhipress.in

डिजिटल एडिशन भी उपलब्ध

“मुझे बोल्ड सीन करने से परहेज नहीं” -वामिका गब्बी

बातचीत • शांतिस्वरूप त्रिपाठी

शोहरत रातोंरात नहीं मिलती, इस के लिए तपना पड़ता है, अलग राह बनानी पड़ती है. ‘ग्रहण’ सीरीज देखने के बाद जिस भूरी आंख वाली खूबसूरत मनु यानी वामिका गब्बी की ऐक्टिंग पर सब की नजर टिकी, वह यों ही यहां तक नहीं पहुंची.

वैब सीरीज ‘ग्रहण’ की वजह से शोहरत बटोर रहीं अभिनेत्री वामिका गब्बी परिचय की मुहताज नहीं. मूलतया पंजाबी मगर हिंदी, तमिल, तेलुगू, मलयालम व पंजाबी भाषा की 20 फिल्मों तथा 10 म्यूजिक वीडियोज में वे अपने अभिनय का जलवा दिखा चुकी हैं.

वामिका ने अपने कैरियर की शुरुआत चंडीगढ़ में रहते हुए टीनएज उम्र में फिल्म ‘जब वी मेट’ से की थी. फिर हिंदी फिल्म ‘सिक्सटीन’ में वे हीरोइन बन कर आई थीं और काफी बोल्ड दृश्य किए थे. लेकिन इस फिल्म के बाद वे पंजाबी फिल्में करने लगी थीं. फिर उन्हें मलयालम फिल्म ‘गोधा’ मिली, जिस ने उन्हें स्टार बना दिया और तब वे दक्षिण भारत में व्यस्त हो गई थीं. उन्होंने अब तक 20 से अधिक फिल्मों में अभिनय कर अपनी अलग पहचान बनाई है. लेकिन वैब सीरीज ‘ग्रहण’ से बौलीवुड में उन की शानदार वापसी हुई है.

आप ने हिंदी फिल्म ‘जब वी मेट’ से कैरियर की शुरुआत की थी. तीनचार हिंदी फिल्मों में अभिनय करने के बाद आप ने हिंदी फिल्मों से दूरी बना ली थी. कोई खास वजह?

क्योंकि फिल्म ‘सिक्सटीन’ के अलावा सभी फिल्में बतौर बाल कलाकार थीं. उस वक्त मैं टीनएज थी. मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करना चाहिए, तो मैं थिएटर करने लग गई. पढ़ाई भी कर रही थी. जब फिल्म ‘सिक्सटीन’ मिली, तो लगा कि अब कुछ होगा लेकिन फिल्म ‘सिक्सटीन’ के बाद भी कुछ अच्छा हुआ नहीं. उस के बाद मैं पंजाबी फिल्में करने लगी. दक्षिण की फिल्में करती रही.

अब जब मैं फिर हिंदी वैब सीरीज व फिल्में कर रही हूं, तो मैं बहुतकुछ सीख कर आई हूं. मैं ने हिंदी फिल्मों से दूरी नहीं बनाई थी, बल्कि अपने काम को एंजौय करने लगी थी. अपने काम से जो जुड़ाव होता है, उस से भी दूर हो गई थी. अब जो कुछ मेरी जिंदगी में हो रहा है वह अपनेआप हो रहा है.

मेरे मन में ऐसी कोई इच्छा नहीं थी कि अब मुझे इतनी शोहरत पानी है. न ही मेरे जेहन में कभी पैसे कमाने की बात थी और न आज है. और मैं यही चाहूंगी कि ऐसा कभी न हो. मैं सिर्फ यही चाहूंगी कि मेरे पास जो आ रहा है उस में जहां मुझे लगेगा कि इस में मुझे कुछ सीखने को मिलेगा, वह काम मैं करना चाहूंगी.

जहां कुछ उत्साहजनक नहीं लग रहा है मगर पैसे अच्छे मिल रहे हैं, वैसा काम कर के मैं ने देख लिया. घर में बेकार बैठे हैं और किसी फिल्म का औफर आ गया, तो कहानी पसंद न होने पर भी बेमन कर ली. क्योंकि उस वक्त मेरे सामने चौइस नहीं थी. काम करने में

मजा भी नहीं आ रहा था. मगर अब हालात बदल गए हैं. अब मेरे पास चौइस है, अब मैं बहुत अच्छे ढंग से चयन कर पा रही हूं.

आप ने हिंदी फिल्म 'सिक्सटीन' में काफी बोल्ड दृश्य किए थे. क्या इस पर आप के मातापिता ने एतराज जताया था?

फिल्म 'सिक्सटीन' में काफी बोल्ड दृश्य नहीं थे. ठीकठाक बोल्ड दृश्य ही थे. मेरे पिता ने शूटिंग से पहले ही पटकथा पढ़ी थी, इसलिए एतराज वाली बात नहीं उठी.

मुझे बोल्ड सीन करने से परहेज नहीं है बशर्ते वह किरदार ही बोल्ड हो. बिना किसी मतलब के बोल्ड सीन भरे जाएं तो मैं नहीं कर सकती. जिन दृश्यों का कहानी से संबंध नहीं है वे दृश्य महज दर्शकों को लुभाने के लिए रखना गलत है. मैं ऐसे दृश्य नहीं कर सकती. यदि कहानी को आगे बढ़ाने के लिए बोल्ड दृश्य की जरूरत है अथवा किसी रिश्ते की अहमियत के लिए वह दृश्य जरूरी है तो उसे करना मेरे काम का हिस्सा है. आखिरकार, मैं फिल्म के अंदर किसी न किसी इंसान व उस के अंदर के गुस्से, उस के प्यार वगैरह सबकुछ को निभाती हूं.

अब तक आप ने जो भी फिल्में या वैब सीरीज की हैं, उन में से किसे देख कर लगता है कि वह आप को नहीं करना चाहिए था?

हंसते हुए... ऐसा कुछ नहीं है. किसी फिल्म को करने का यदि मेरा अनुभव बुरा रहा तो उसी बुरे अनुभव से मैं वह बात सीख पाई, जो न सीख पाती. मैं ने सब से अधिक अपने बुरे अनुभवों से ही सीखा है. मैं यह नहीं चाहती कि आगे बुरे अनुभव न हों. मुझे अभी बहुतकुछ सीखना है तो मैं बुरे अनुभवों के लिए तैयार हूं.

आप दक्षिण में 'गोधा' सहित कई बेहतरीन फिल्में कर रही थीं तो फिर हिंदी वैब सीरीज 'ग्रहण' करने की वजह क्या रही?

मैं पंजाबी फिल्मों में काम कर के खुश नहीं थी क्योंकि पंजाबी फिल्मों में हीरोइन के हिस्से में करने को कुछ नहीं आता. यह फिल्म इंडस्ट्री पूरी तरह से पुरुषप्रधान है. मगर यह मेरी मातृभाषा है, इसलिए कर रही थी. लेकिन मलयालम फिल्म 'गोधा' से मुझे दक्षिण भारत में बेहतरीन काम करने के अवसर मिले. फिर भी मैं हिंदी फिल्में ही करना चाहती थी. पर हिंदी में अच्छा अवसर नहीं मिल रहा था.

कोरोना की पहली लहर के समय मैं चंडीगढ़ में थी, तब मेरे पास वैब सीरीज 'ग्रहण' के निर्देशक रंजन चंदेल का फोन आया. वीडियो कौल पर हमारी बात हुई और उस वक्त उन्होंने जो कहानी सुनाई वह मुझे रोचक लगी. फिर मैं मुंबई आई और उन से मिली.

निर्देशक रंजन चंदेल ने 1984 के दंगे पर सत्य व्यास की किताब 'चौरासी' से मेरे किरदार को पढ़ कर सुनाया. मनु व रिषी की कहानी इतनी खूबसरत लगी कि बीचबीच में मेरी आंखों से आंसू आ रहे थे. सत्य व्यास ने मनु व रिषी की प्रेमकहानी को जिस अंदाज में लिखा है वह कमाल का है. यह बहुत खूबसूरत है. मैं तो इसी बात से उत्साहित थी कि मैं मनु का किरदार निभाऊंगी. मैं ने उसी वक्त सोच लिया था कि मुझे मनु को निभाना है. वर्तमान पीढ़ी तो मनु जैसे प्यार की बात सपने में भी नहीं सोच सकती. मनु व रिषी के बीच जिस तरह का क्यूट प्यार व रोमांस इस में दिखाया गया, मैं तो उसी की दीवानी हो गई थी.

आप को लगता है कि 'ग्रहण' में सिखों के साथ जो कुछ हुआ था, उसे सही ढंग से पेश किया गया है?

देखिए, मैं तो चंडीगढ़ में रही हूं, जहां सिख दंगों का असर नहीं था. पर मेरे सिख दोस्त हैं और वे जो कुछ बताते हैं, उसे सुन कर लगता है कि वैसा वीभत्स रूप वैब सीरीज में दिखाया नहीं जा सकता था. वह खौफनाक वक्त था, जो कभी नहीं आना चाहिए. जो हुआ था, जितना खौफ था, वह सब दिखाना संभव न था. उस वक्त की इंसानी शैतानपने को पेश करना संभव नहीं. फिर भी 'ग्रहण' में काफी कुछ दिखाया गया है.

'ग्रहण' में मनु अपनी नवजात बेटी को रिषी को सौंप देती है. इसे आप कितना सही मानती हैं?

मनु के साथ जो कुछ हुआ, वह बहुत दुखदायी था. हर इंसान की किसी भी ट्रौमा को लेने की अपनीअपनी ताकत होती है. मेरी राय में मनु इनोसैंट लड़की है. उस का पहला प्यार है. उस की जिंदगी में जो कुछ खूबसूरती से होना चाहिए था, वह सब उस की जिंदगी में बहुत भयावह तरीके से हुआ. बिना प्यार, सिर्फ नफरत से जो चीज उस के साथ हुई थी, उस ने मनु को बहुत खोखला बना दिया था.

उस की समझ में नहीं आ रहा है कि अब वह उस बेटी का क्या करे? मगर मैं यह नहीं कहना चाहती कि हर लड़की को ऐसा ही करना चाहिए. पर मनु नहीं कर पाई. जबकि रिषी के लिए उस लड़की को प्यार दे पाना संभव हुआ क्योंकि यह बेटी उस के प्यार मनु और उस के जिगरी दोस्त झंडू का अंश है. झंडू दुनिया से जा चुका था. मनु पूरी तरह से बदल चुकी थी. ऐसे में इस बेटी में रिषी को दोनों यानी कि मनु व झंडू मिल रहे थे. जो प्यार रिषी ने अमृता को दिया है, शायद वह प्यार मनु, अमृता को न दे पाती. मनु के मन में हमेशा बच्ची को ले कर एक ट्रौमा रहता.

आप की निजी जिंदगी में प्यार के क्या माने हैं?

मुझे लगता है कि प्रेम एक ऐसी खूबसूरत चीज है, जिसे आप अपना लें तो जिंदगी खूबसूरत हो जाएगी. प्रेम का मतलब सिर्फ एक लड़के व लड़की के बीच का प्रेम नहीं होता. आप अपनी जिंदगी में प्रेम ले आएं, तो बहुतकुछ प्रेममय हो जाए. मैं उसी रास्ते पर चल रही हूं. मुझे वह जिंदगी जीनी है, जहां मेरी जिंदगी में ढेर सारा प्यार हो. प्यार ही सब से बड़ा हथियार है.

आजकल के जमाने में इतनी नफरत फैली हुई है कि अब मनु व रिषी जैसा प्रेम नहीं हो सकता. मनु रिषी जैसा प्रेम होने के लिए इंसान के मन में प्रेम का होना बहुत जरूरी है. मुझे लगता है कि हर इंसान के मन से प्यार खत्म हो चुका है. अब परेशानियां ज्यादा हैं. जानकारियां ज्यादा हैं.

बौलीवुड में नैपोटिज्म?

मैं नैपोटिज्म को ले कर कंफ्यूज्ड रहती हूं. मेरी राय में अपने बच्चों या दोस्त के बच्चों को फिल्मों में ब्रेक देने में बुराई नहीं है बशर्ते उन के अंदर प्रतिभा हो. यदि बच्चे में क्षमता नहीं है तब तो उसे ब्रेक देना गलत है. काम करने का अवसर काबिलीयत पर मिलना चाहिए.

2007 यानी कि फिल्म 'जब वी मेट'

से अब तक के आप के कैरियर के अनुभव क्या रहे?

कई तरह के अनुभव रहे. जब मैं छोटी थी तो मेरे दिमाग में एक ही बात थी कि मुझे हीरोइन बनना है. शाहरुख खान और ऐश्वर्या राय बच्चन की फिल्म 'देवदास' देखने के बाद तो मैं ने रट लिया था कि मुझे हीरोइन बनना है. वैसे भी, मेरी आंखों की वजह से लोग मुझे ऐश्वर्या कह कर बुलाते थे. इस के अलावा स्कूल दिनों से ही मैं थिएटर करने लगी थी. पर मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मैं सिनेमा के परदे पर हीरोइन बन कर कैसे पहुंचूंगी.

एक वक्त ऐसा आया कि मुझे टीनएज उम्र में 'जब वी मेट' सहित कुछ फिल्में करने का अवसर मिला. फिर मुझे उस मानसिकता से भी गुजरना पड़ा, जहां मैं सोच रही थी कि मैं छोटी भी नहीं थी और बड़ी भी नहीं हूं. टीएनएज चल रहा था. मैं सोच रही थी कि क्या मैं वह कर पाऊंगी जो मैं करना चाहती हूं क्योंकि मैं फिल्मी पृष्ठभूमि से तो हूं नहीं.

मेरे पिता लेखक व मां शिक्षाविद हैं. पर मेरे मातापिता ने मुझे पूरा सहयोग दिया तो मेरे अंदर एक हौसला जरूर था. मैं अपने मातापिता के सहयोग के चलते ही आज यहां तक पहुंच पाई हूं. बिना किसी अन्य इंसान की कोई मदद या एहसान लिए मैं अपने बलबूते पर यहां खड़ी हूं. फिर जब हम चंडीगढ़ से मुंबई रहने आ गए तो समझ में आया कि मुझे 'हीरोइन' नहीं 'ऐक्टर' बनना है. तब मैं हीरोइन की बात भूल कर ऐक्टिंग को ले कर गंभीर हो गई.

पंजाबी व दक्षिण भारत की कुछ फिल्में करने के बाद मुझे समझ में आया कि 'ऐक्टर' बनना भी कोई बड़ी बात नहीं है. सिर्फ एक 'अच्छा' इंसान बनना है. फिर सोचा कि जिंदगी में खुशियां चाहिए. फिर धीरेधीरे समझ में आया कि जिंदगी में खुशियां भी हर वक्त नहीं मिल सकतीं. अब जहां पर हूं, मुझे एक अच्छा इंसान बनना है और शांतिपूर्वक जिंदगी जीनी है. पिछले एकडेढ़ वर्ष से मैं अपनी जिंदगी में काफी सुकून से रह रही हूं.

पहले हीरोइन बनना था, फिर ऐक्टर बनने की बात समझ में आई. फिर अच्छा इंसान बनने की बात समझ में आई. यह किसी अनुभव के चलते?

मेरे संघर्ष और अनुभव ने मेरे अंदर धीरधीरे इस तरह की समझ विकसित की. मेरे अंदर जो समझ विकसित हुई उस का श्रेय मेरे डैड को जाता है जो कि पंजाब के जानेमाने लेखक व कवि हैं. उन की 10–11 किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं. मैं ने अपने डैड से सीखा कि हर अनुभव एक अच्छी सीख देता है. फिर कोशिश करना कि वही गलती दोबारा न दोहराई जाए.

देखिए, मेरी ही तरह हर इंसान संघर्ष करता है. हर इंसान अच्छे व बुरे अनुभव लेता है. कई लोग इन अनुभवों को नकारात्मकता में ले लेते हैं और उन से सीख ही नहीं पाते हैं. मैं उन में से हूं जो अपने अनुभवों से सीख लेते हैं. मैं ने अपने संघर्ष से सीखा. मैं ने अपने साथ हुए किसी भी बुरे अनुभव को दिल पर नहीं लिया, पर सीख कर एक नई राह पकड़ी. मैं यह दावा नहीं करती कि आगे मुझे बुरे अनुभव नहीं होंगे. मैं ने अपने मन की शांति की तलाश की.

पिछले एकडेढ़ वर्ष से तो कोरोना महामारी की वजह से लोग काफी परेशान हुए हैं?

एकदम सही. मगर मुझे समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ा. मैं बेवजह आंसू बहाने या किसी को कोसने में यकीन नहीं करती. मेरे पास 3 वक्त का भोजन था, सिर पर छत थी. मैं ने कुछ बचत कर रखी थी, इसलिए मुझे दूसरों की तरह समस्याएं नहीं हुईं. सो, मैं कोई शिकायत नहीं कर सकती.

मैं यदि पूरे विश्व में जिस तरह से लोग परेशान हो रहे थे, जिस तरह के संकट से जूझ रहे थे, उस की तुलना करूं तो मेरे सामने कोई समस्या नहीं थी. माना कि मेरे परिवार के कुछ सदस्य कोरोना से बीमार हुए और ठीक हो गए. मेरी दादी 15 दिन अस्पताल में थीं, ठीक हो कर वापस आ गईं. तो वहीं कितने लोगों ने अपने प्रियजनों को खोया.

कोरोना के वक्त मुझे यह सोचने का मौका मिला कि क्या हमें इस बात को ले कर रोना चाहिए कि ऐसा क्यों नहीं है, हमारे पास यह क्यों नहीं है? अथवा शांति में रहना चाहिए. मैं खुश हूं कि मुझे अच्छे ढंग से रखा गया. हम चाहें तो हम अपनी जिंदगी में मुसीबतें ढूंढ़ सकते हैं. मुझे अपनी जिंदगी से कोई शिकायत नहीं है. मेरे पास जो है, जैसा है, वह ठीक है. फिलहाल मैं अपनी जिंदगी में खुश हूं. जिंदगी अच्छे से चल रही है.

आप के डैडी लेखक हैं, कवि हैं. आप की मां शिक्षाविद हैं. कुछ सीख उन्होंने आप को दी. कुछ सीख आप ने अपने डैडी की किताबें पढ़ कर ली होगी?

शर्मनाक बात यह है कि मैं ने अपने डैडी की एक भी किताब नहीं पढ़ी है. लेकिन वे जब लिखते हैं, तब पढ़ कर सुनाते रहते हैं. मैं ने कुछ चीजें उन के मुंह से सुनी जरूर हैं मगर मैं ने उन की प्रकाशित किताब कभी नहीं पढ़ी.

मेरे डैडी भी इसे मेरी सब से बड़ी कमी मानते हैं. उन का मानना है कि हर इंसान को किताबें पढ़नी चाहिए. फिलहाल मैं ने किताबें पढ़ना शुरू किया है. कुछ दिनों पहले ही मैं ने पहली किताब 'मिडनाइट चिल्ड्रन' पढ़ कर समाप्त की है और अब मैं ने अपने पिता की लिखी हुई किताब पढ़ना शुरू की है. मैं ने सुना था कि आप किताबों के पास नहीं जाते, किताबें आप के पास आती हैं. तो अब किताबें मेरे पास आ रही हैं. किताबें मुझे चुन रही हैं.

मुझे सुनने का बहुत शौक है. मेरे डैडी जो कविता या कहानी लिखते थे, वह मुझे सुनाते थे. तो मुझे कुछ सीखने को मिलता था. मसलन, वे कहानी सुनाते थे, पर उस कहानी में वे किनकिन चीजों को देख रहे थे, किनकिन चीजों के बारे में बात कर रहे थे, उन से मुझे काफीकुछ सीखने को मिला. मेरे डैडी कहानी सुनाते हुए कहानी की गहराई पर भी रोशनी डालते थे. उन के जो पौइंट औफ व्यू सुनती थी वे मेरे पौइंट औफ व्यू भी बनते गए.

कहानी सुन कर या किताबें पढ़ कर जो पौइंट औफ व्यू बनते हैं, अभिनय करते समय किसी किरदार को निभाते वक्त किस तरह मददगार साबित होते हैं?

मेरे डैड हमेशा कहते थे कि हर बात पर सवाल करो, किसी पर यों ही यकीन मत करो, तो जब मैं अपने किरदारों में घुसने की कोशिश करती हूं तो पटकथा में जो लिखा होता है उस पर सवाल करती हूं. जब मेरे सारे सवालों के जवाब मिल जाते हैं तो मुझे मेरा किरदार भी मिल जाता है.

आप की फिटनैस का राज क्या है?

हर दिन वाकिंग करती हूं. दौड़ लगाती हूं. मैं ने दूध पीना बंद कर दिया है. कोलोन थेरैपी करना शुरू कर दिया है. इस से पेट साफ होता है और बीमारियां दूर भागती हैं. मैं सुबह उठते ही 4 गिलास गरम पानी पीती हूं. इस से मेरा वजन भी कम हुआ. मैं चाहती हूं कि हर इंसान कोलोन थेरैपी के बारे में जाने और स्वस्थ रहे. ●

औनलाइन गेम्स का भयावह जंजाल

लेख • सुरेशचंद्र रोहरा

कोरोनाकाल में सबकुछ औनलाइन होने से बच्चों में औनलाइन गेम खेलने की लत भी बढ़ गई है, इस कारण कई तरह की दिक्कतें सामने आने लगी हैं. ऐसे में मातापिता को खासा आगाह होने की जरूरत है.

औनलाइन गेम्स आज एक बड़ी चिंता का विषय बन गया है. परिणामस्वरूप देश के उच्चतम न्यायालय अर्थात सुप्रीम कोर्ट ने भी इस पर संज्ञान लेते हुए केंद्र सरकार को आदेश दिए हैं.

आज नौनिहालों में फैलता औनलाइन गेम्स का भयावह प्रकोप उन के जीवन के लिए स्याह पक्ष बन चुका है. यह एक राष्ट्रीय चिंता का विषय बन कर सामने है.

इस से अगर नजात न पाई गई तो भावी पीढ़ी पर इस का जो भयावह असर देखने को मिलेगा उस के लिए हमें तैयार रहना होगा. हमारे लिए यह चिंता का विषय है कि किस तरह नौनिहालों को इस जंजाल से बचाया जाए.

दरअसल, कोविड–19 महामारी ने बच्चों सहित घर के सभी सदस्यों को घर पर ही एक प्रकार से बंधक बना दिया है. बच्चों की पढ़ाई भी औनलाइन ही हो रही है. औनलाइन अध्ययन भले ही बच्चों के लिए वर्तमान समय के अनुसार विवशता ही है लेकिन यह विवशता धीरेधीरे बच्चों के लिए घातक सिद्ध हो रही है.

कई बच्चे औनलाइन गेम के आदी होते जा रहे हैं. वे अपने अभिभावकों से औनलाइन अध्ययन के नाम से मोबाइल लेते हैं पर उन्हें जैसे ही समय मिलता है वे औनलाइन गेम्स खेलना आरंभ कर देते हैं.

दरअसल, निरंतर मोबाइल स्क्रीन में नजरें टिकाने से आंखों पर बुरा प्रभाव तो पड़ता ही है, साथ ही, बच्चे औनलाइन गेम्स के आदी हो रहे हैं. इस से बच्चे मानसिक रूप से विकलांग हो रहे हैं.

आएदिन अपने आसपास और समाचारपत्रों में इस के दुष्प्रभावों के बारे में पढ़ते रहते हैं. यहां तक कि औनलाइन गेम इतना घातक है कि कई बच्चों में अपराध का भाव भी पैदा हो जाता है और वे इतने गुस्सैल हो जाते हैं कि कुछ भी अपराध कर जाते हैं.

अंचल के शिक्षाविद प्राचार्य डा. संजय गुप्ता के मुताबिक, सर्वप्रथम तो यह हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है कि बच्चा हमारा है तो उस के भविष्य का निर्धारण भी हम ही करेंगे.

वर्तमान परिपेक्ष्य में हमारे पास अध्ययन के लिए औनलाइन विकल्प है पर प्रत्येक मातापिता को स्वयं सक्रिय रह कर समयानुसार बच्चे की पढ़ाई की मौनिटरिंग तो करनी ही चाहिए.

बच्चों के मनोविज्ञान के जानेमाने शिक्षक घनश्याम तिवारी के मुताबिक, बच्चों को यदि हम पूरी स्वतंत्रता देंगे तो उन का बालमन भटकेगा ही. उन को भटकाव से बचाने के लिए हमें चाहिए कि बच्चा केवल सीखने व जानकारी हासिल करने के लिए ही मोबाइल का उपयोग करे. हमारी नजर उन के हर क्रियाकलाप पर होनी चाहिए.

डाक्टर जी आर पंजवानी कहते हैं, ''औनलाइन गेम्स में हमें केवल दुष्प्रभाव ही नजर आएंगे, लाभ कुछ भी नहीं, यह सच भी है. निरंतर मोबाइल के उपयोग से बच्चा इस का आदी तो होगा ही, साथ ही, वह मानसिक रूप से भी तनाव महसूस करेगा.

''यदि बच्चे को औनलाइन गेम्स की लत लग गई तो उस के व्यवहार में हमें अप्रत्याशित परिवर्तन नजर आते हैं, जैसे उस के व्यवहार में हमें चिड़चिड़ापन, क्रोध, स्मरण शक्ति की कमी, एकाग्रता में कमी व अंतर अशांत इत्यादि.

''वे (बच्चे) 100 प्रतिशत मानसिक रोगी बन जाते हैं. धीरेधीरे उन का स्वास्थ्य भी गिरने लगता है. तात्पर्य यह है कि औनलाइन गेम्स मैंटल हैल्थ के लिए खतरा हैं. लगातार वीडियो गेम्स या औनलाइन गेम्स खेल कर बच्चे अपना महत्त्वपूर्ण समय नष्ट कर देते हैं जबकि उस समय में वे बहुतकुछ सीख सकते थे एवं पारिवारिक जनों के साथ मधुर पल बिता कर उन की सीख व सलाह ले सकते थे.''

बच्चों के लिए स्लो पौयजन के समान

अध्ययन में यह बात बारंबार सामने आई है कि औनलाइन गेम्स बच्चों के लिए बेहद हानिकारक हैं. उन के स्वास्थ्य, उन के चिंतन, उन के विकास आदि हर दृष्टि से औनलाइन गेम्स के भयावह परिणाम अध्ययन में सामने आ चुके हैं.

हकीकत यह भी है कि अत्यधिक औनलाइन गेम्स की लत जानलेवा भी साबित हो सकती है. हमें हर संभव तरीके से इस से अपनी भावी पीढ़ी को बचाना है. औनलाइन गेम्स स्लो पौयजन की तरह होते हैं. हमें पता भी नहीं चलता कि कब हमें इन की लत लग जाती है और अंतिम परिणाम दुखद होता है.

औनलाइन गेम हमें मनोरंजन का साधन तो लगता है, पर बहुत जल्दी इस की लत में तबदील होने से बच्चे के भविष्य पर प्रतिकूल प्रभाव होते हैं. हमें हर हाल में अपने बच्चों को इस से बचाना होगा.

तकनीकी का जाल वरदान भी है और अभिशाप भी. मानवीय स्वभाव है वह गलत दिशा की ओर जल्दी भागता है. वही हाल इस कोरोनाकाल में औनलाइन शिक्षा के लिए वरदान बने मोबाइल अब छात्रों के लिए लत बन गए हैं.

हर समय हाथ में मोबाइल होना एवं क्लास की जगह औनलाइन गेम बालमन पर हावी हो रहा है. तकनीकी ने हमें बहुत सी सहूलियतें दी हैं, लेकिन सदुपयोग न होने से उन का नुकसान भी उठाना पड़ रहा है.

औनलाइन गेम्स के कारण बच्चों में मानसिक स्वास्थ्य की समस्याएं खड़ी हो गई हैं. अतिआवश्यक है कि हम अपने बच्चों पर निगरानी रखें और उन की काउंसलिंग कर उन्हें उन की जिम्मेदारी व शिक्षा के महत्त्व से अवगत कराएं. ऐसे औनलाइन गेम्स खेलें, जिन से उन में गणना करने की क्षमता, तर्क करने की क्षमता बढ़े.

कहने का तात्पर्य यह है कि बच्चों को तकनीकी से दूर नहीं करना है बल्कि उस का उपयोग सतर्कता के साथ होना चाहिए. औनलाइन गेम्स के बारे में शीघ्र राष्ट्रीय नीति भी अमल में आनी चाहिए जिस से हमारी भावी पीढ़ी सुरक्षित रहे.

सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद पूरा मामला देश की केंद्रीय सरकार के पाले में है. ऐसे में देश के बौद्धिक वर्ग, शिक्षाविदों, चिकित्सकों इत्यादि को सरकार को सलाह दे कर के कुछ ऐसे रास्ते निकालने होंगे, जिन से भावी पीढ़ी पर मंडराता यह संकट खत्म हो जाए. ●

निया शर्मा के साथ अभिनय करते दिखे मौडल यावर मिर्जा

'दबंग', 'बौडीगार्ड', 'रेडी', 'दबंग 2', 'फुगली', 'प्रेम रतन धन पायो', 'मस्तीजादे', 'मित्रों', 'राधे' जैसी फिल्मों के नृत्यनिर्देशक मुदस्सर खान के नए म्यूजिक वीडियो 'सात समुंदर पार' से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शोहरत बटोर चुके मौडल यावर मिर्जा ने अभिनय की शुरुआत की है.

इस म्यूजिक वीडियो में यावर मिर्जा के साथ टीवी अदाकारा निया शर्मा नजर आ रही हैं, जो 'एक हजारों में मेरी बहना', 'काली : एक अग्निपरीक्षा', 'जमाई राजा' जैसे सीरियलों और विक्रम भट्ट की ईरोटिक रोमांचक वैब सीरीज 'ट्विस्टेड' में अभिनय कर शोहरत बटोर चुकी हैं.

मध्य प्रदेश के एक छोटे शहर से ताल्लुक रखने वाले यावर मिर्जा कहते हैं, ''मैं हमेशा से अभिनय को कैरियर बनाने के अलावा बौलीवुड का हिस्सा बनना चाहता था. मुझे हमेशा मौडलिंग में सराहना मिली, पर जब मैं मुंबई आया, तो मैं ने अभिनय करने का अवसर पाने के लिए औडिशन देने के साथ ही अपने शरीर को उपयुक्त बनाने के लिए लगातार काम करता रहा.

''कड़ी मेहनत का फल तब मिला जब मुझे टीवी स्टार निया शर्मा के साथ म्यूजिक वीडियो 'सात समुंदर पार' में हीरो बन कर अभिनय करने का अवसर मिला. इस गाने में हम दोनों की कैमेस्ट्री और एनर्जी कमाल की है.'' बता दें, यह गाना मशहूर नृत्य निर्देशक मुदस्सर खान ने निर्देशित किया है, जबकि इस का निर्माण टीवाईएफ प्रोडक्शन फिल्म्स और सहनिर्माण रुचिका माहेश्वरी ने किया है.

‘शेरशाह’ फेम हिमांशु मल्होत्रा नहीं निभाएंगे बोल्ड सीन

2004 में ‘जी सिनेस्टार की खोज’ का हिस्सा बनने व फिल्म ‘मिस्टर हिमांशु दीक्षित’ से अभिनय कैरियर की शुरुआत करने के बाद एक दर्जन से अधिक सीरियलों और ‘वजह तुम हो’, ‘हम चार’ जैसी फिल्मों में अभिनय कर अभिनेता हिमांशु मल्होत्रा अपनी एक अलग पहचान बना चुके हैं.

मगर हालिया प्रदर्शित फिल्म ‘शेरशाह’ में मेजर राजीव कपूर का किरदार निभा कर उन्हें जबरदस्त शोहरत मिली. अब वे फिर टीवी सीरियल ‘चिक्कू की मम्मी दूर के’ कर रहे हैं. तमाम कलाकार वैब सीरीज में अभिनय कर शोहरत बटोर रहे हैं, मगर हिमांशु मल्होत्रा ने वैब सीरीज से दूरी बना रखी है क्योंकि वे खुद को बोल्ड सीन्स को निभाने में सहज नहीं महसूस करते.

हिमांशु मल्होत्रा कहते हैं, ‘‘मुझे वैब सीरीज में अभिनय करने से परहेज नहीं है. मेरे पास वैब सीरीज के औफर आते हैं. मगर मैं ने अस्वीकार कर दिए. सच यह है कि मैं बोल्ड सीन्स से दूरी बना कर रखना पसंद करता हूं. मैं नाम नहीं लेना चाहता मगर हकीकत यह है कि बोल्ड सीन्स और अंतरंग सीन्स की वजह से मुझे कुछ वैब शृंखलाओं को छोड़ना पड़ा.

‘‘मैं व्यक्तिगत रूप से ऐसे सीन्स को अपने अभिनय से संवारने को ले कर सहज नहीं हूं. भविष्य में एक कलाकार के रूप में मेरे विचार या मेरी सोच में बदलाव आ जाए तो कुछ नहीं कह सकता. वैसे, मैं कलाकार के तौर पर अधिक से अधिक वैब सीरीज में अभिनय करना चाहता हूं.’’

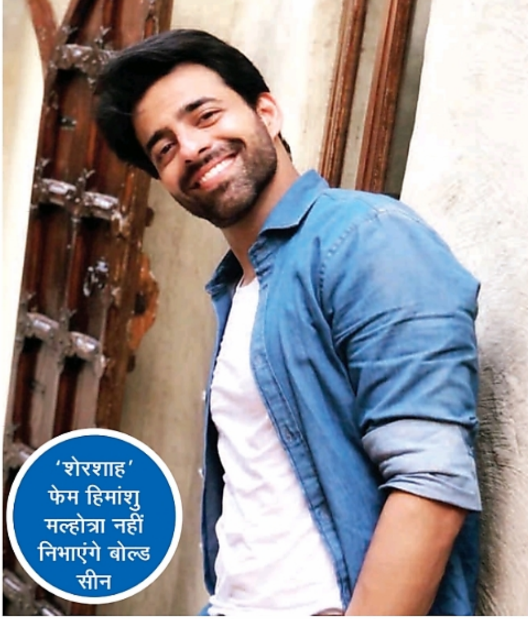

अभिनेत्री पायल घोष समेत कई महिलाएं सम्मानित हुईं

मशहूर फिल्म अभिनेता कल्याणजी जाना और दादासाहब फाल्के आइकन अवार्ड आयोजन समिति द्वारा मुंबई के रंग शारदा औडिटोरियम मुंबई में ‘नारी शक्ति आइकन अचीवर अवार्ड 2021’ का आयोजन किया गया, जहां अपनेअपने क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए कई महिलाओं को सम्मानित किया गया.

यह सम्मान समारोह देश की महान महिला रानी लक्ष्मीबाई, सावित्रीबाई फुले, इंदिरा गांधी, कल्पना चावला, मदर टैरेसा जैसी वीरांगनाओं से प्रेरित है. अवार्ड समारोह में अभिनेत्री पायल घोष, शीला शर्मा, एकता जैन, सुप्रिया के अलावा ‘आफ्टरनून वौयस’ की संपादक वैदेही तमन, मंजू लोढ़ा, समाजसेविका डाक्टर अर्चना जैन, शशि शर्मा और कई अन्य महिलाओं को सम्मानित किया गया.

NAARI SHAKTI
ICON ACHIEVER AWARD 202
Ekta Jain

इस के बाद अभिनेता कल्याणजी जाना ने कहा, ‘‘महिलाएं समाज की अभिन्न अंग हैं और उन्हें सम्मानित करना गर्व की बात है. हमारे देश में महिलाओं का स्थान सर्वोच्च है. ऐसे में उन के द्वारा किए गए कार्यों को प्रोत्साहित करने के लिए इस अवार्ड का आयोजन किया गया.

‘‘अभी देश ने महामारी का दौर झेला है, जिस में महिला डाक्टर से ले कर एक सफाईकर्मी तक ने अपनी जान पर खेल कर लोगों को बचाने का साहस दिखाया. तो वहीं ओलिंपिक हो या दूसरे अन्य क्षेत्र, महिलाओं ने यह साबित किया कि वे किसी से कम नहीं हैं. ऐसे में यह ‘नारी शक्ति आइकन अचीवर अवार्ड 2021’ उन के लिए एक छोटा सा सम्मान है.’’

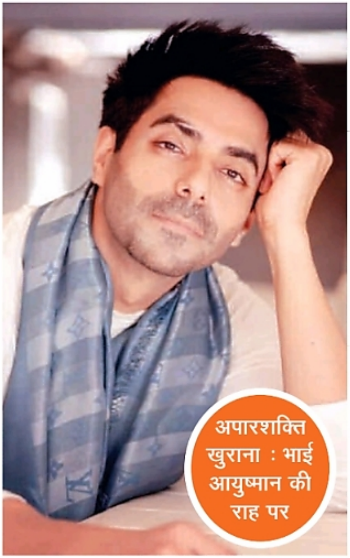

अपारशक्ति खुराना : भाई आयुष्मान की राह पर

बौलीवुड के चर्चित अभिनेता आयुष्मान खुराना के छोटे भाई अपारशक्ति खुराना मूलतया क्रिकेटर थे. एक वक्त वह था जब वे हरियाणा अंडर–19 क्रिकेट टीम के कप्तान थे. पर फिर वे भी अपने बड़े भाई के पदचिह्नों पर चलते हुए पहले रेडियो जौकी और टैलीविजन होस्ट बने. इस के बाद 2016 में उन्हें नितेश तिवारी की खेलप्रधान फिल्म 'दंगल' में अभिनय करने का अवसर मिल गया. इस फिल्म में आमिर खान भी थे. फिल्म को सफलता मिली और अपारशक्ति खुराना भी चर्चा में आ गए. उस के बाद वे 'बद्रीनाथ की दुलहनिया' (2017), 'स्त्री' (2018), 'लुकाछिपी' (2019) तथा 'पति पत्नी और वो' (2019) सहित तकरीबन 12 व्यावसायिक फिल्मों में सहायक भूमिकाएं निभाते हुए नजर आए. 2018 में उन्होंने वैब सीरीज 'धत्त तेरे की' भी की.

लेकिन अब पहली बार वे अभिनेता से निर्माता बने डीनो मोरिया निर्मित और सतराम रमानी निर्देशित फिल्म 'हैलमेट' में प्रनूतन बहल के साथ नायक बन कर आ रहे हैं. फिल्म में मुख्य भूमिका निभाने का अवसर पाने के लिए भी अपारशक्ति खुराना को अपने बड़े भाई आयुष्मान खुराना के ही पदचिह्नों पर चलना पड़ा है.

जी हां, आयुष्मान खुराना ने समाज में टैबू समझे जाने वाले 'वीर्यदान' विषय पर बनी फिल्म 'विक्की डोनर' से सफलता पाई थी और तब से आयुष्मान ने ज्यादातार उसी तरह के विषयों पर बनी फिल्में कीं. अब अपारशक्ति खुराना भी समाज में टैबू समझे जाने वाले 'कंडोम' पर बनी फिल्म 'हैलमेट' में मुख्य हीरो बन कर आ रहे हैं.

अपारशक्ति कहते हैं, ''हमारे भारत देश में आज भी 'कंडोम' पर बात करना शर्मनाक माना जाता है. पर हम ने अपनी हास्य फिल्म 'हैलमेट' में इस विषय पर मनोरंजक तरीके से बात की है. यह फिल्म देश की जमीनी हकीकत पर एक व्यंग्य है, जहां कंडोम खरीदते और बात करते वक्त लोगों को अजीब लगता है. फिल्म बिना उपदेश के संदेश को मजाकिया तरीके से उजागर करती है.''

प्रतिमा कानन : एक अंडर–रेटेड कलाकार

20 वर्ष तक राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की रैपेटरी में थिएटर करते रहने के बाद 1997 में प्रदर्शित फिल्म 'सिक्स्थ सैंस' में अभिनय कर बौलीवुड में कदम रखने वाली सशक्त अदाकारा प्रतिमा कानन ने बाद में 'दुश्मन', 'गौड मदर', 'शूल', 'फिजा', 'राज', 'पिंजर' से ले कर 'दबंग 3' तक 30 से अधिक फिल्में व कई सीरियलों में अभिनय कर अपना जादू बिखेरा.

अभिनेत्री प्रतिमा कानन इस वक्त 'दबंग' टीवी के सीरियल 'नथ : जेवर या जंजीर' में ठकुराइन का किरदार निभाती नजर आ रही हैं. हर फिल्म व सीरियल में उन के अभिनय को पसंद किया गया. फिर भी फिल्म या टीवी इंडस्ट्री ने उन्हें वह तवज्जुह नहीं दी जोकि देनी चाहिए थी.

इस पर प्रतिमा कानन कहती हैं, ''मेरे पास आप के इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं है क्योंकि यह बात मैं खुद भी नहीं समझ पाई. मैं खुद सोचती रहती हूं कि मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा है. हो सकता है इस की वजह यह हो कि मेरे अंदर पीआरशिप करने का गुण नहीं है.'' सीरियल 'नथ : जेवर या जंजीर' में नथउतराई की पक्षधर अभिनेत्री प्रतिमा कानन इस प्रथा के सख्त खिलाफ हैं. वे कहती हैं, ''एक औरत होने के नाते कहीं यह प्रथा हमारे देश में अस्तित्व में है, यह जान कर ही मेरे रौंगटे खड़े हो गए थे.

''यदि यह कुप्रथा आज भी देश के किसी हिस्से में विद्यमान है तो इस के विनाश के लिए कठोर से कठोर कदम उठाए जाने चाहिए. यदि इस प्रथा के खिलाफ कोई मुहिम शुरू होती है तो उस मुहिम का साथ देने के लिए मैं हमेशा तैयार हूं. मैं इस तरह की मुहिम में पहली पंक्ति में खड़ी हो कर 'नथउतराई' प्रथा की मुखालफत करूंगी.''

फिल्म व वैब सीरीज सहित विभिन्न प्लेटफौर्मों पर अपने बहुमुखी व सहज अभिनय शैली की पहचान के साथ ही मनोरंजन उद्योग में भी अपने लिए एक अलग जगह बना लेने वाले अभिनेता पंकज त्रिपाठी को भारत में यथार्थवादी, सम्मोहक और शक्तिशाली कंटैंट आधारित सिनेमा की नई लहर का अगुआकार भी माना जाता है.

अब तक उन की झोली में कई पुरस्कार आ चुके हैं. अब सिनेमा के माध्यम से विविधता का जश्न मनाने वाले इंडियन फिल्म फैस्टिवल औफ मेलबर्न ने 20 अगस्त को पंकज त्रिपाठी को 'डाइवर्सिटी इन सिनेमा' पुरस्कार से सम्मानित किया. यह पुरस्कार उन कलाकारों के लिए है जिन्होंने अपनी विभिन्न भूमिकाओं के माध्यम से उद्योग में एक पक्की छाप छोड़ने के अलावा अविश्वसनीय बहुमुखी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है. इस पुरस्कार से पंकज त्रिपाठी से पहले फ्रीडा पिंटो, फवाद खान व ओनीर को नवाजा जा चुका है.

पुरस्कार के संदर्भ में बोलते हुए पंकज त्रिपाठी कहते हैं, ''मेरा इरादा अपनी क्षमताओं के अनुसार सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना है. मैं बहुत आभारी हूं कि मेरे अभिनय को दर्शकों द्वारा सराहा गया. मैं इस पुरस्कार को प्राप्त करने के लिए वास्तव में सम्मानित और समानरूप से विनम्र हूं और यह मुझे बहुत खुश करता है कि इस तरह के प्रतिष्ठित फिल्म समारोह ने मेरे काम को मान्यता दी है.''

अभिनेता पंकज त्रिपाठी अपनी ऐक्टिंग डाइवर्सिटी के लिए सम्मानित

गुणवत्ता वाला काम ही स्थिरता दे सकता है : अली फजल

इन दिनों अली फजल फिल्मों और वैब सीरीज में अभिनय करते हुए जम कर शोहरत बटोर रहे हैं. मगर वे काफी चुनिंदा व गुणवत्ता वाला काम ही कर रहे हैं. जबकि एक वक्त वह था जब वे अनापशनाप फिल्में कर रहे थे. पर बाद में उन्हें इस का पछतावा हुआ.

अली फजल कहते हैं, ''पहले मैं ज्यादा से ज्यादा फिल्मों में अभिनय कर पैसा कमाने की होड़ का हिस्सा था, पर फिर मुझे यह पाप लगने लगा और एक ठोस निर्णय के साथ मैं ने गुणवत्ता वाली फिल्में व वैब सीरीज करनी शुरू कीं. मैं अन्य कलाकारों को कोई सलाह नहीं देना चाहता. यदि कुछ वर्षों पहले मुझ से पूछा जाता तो मैं गुणवत्ता के बजाय ज्यादा से ज्यादा काम करने पर जोर देता.

''गुणवत्ता वाला काम करने की जिम्मेदारी का अहसास हर कलाकार को एक मुकाम पर जा कर आता है, जैसा मुझे हुआ. मेरी समझ में आया कि गुणवत्ता वाला काम ही हमें लंबे समय तक स्थिरता दे सकता है. अब तो फिल्म, टीवी, वैब सीरीज, लघु फिल्में सहित कई प्लेटफौर्म हो गए हैं और अब हर प्लेटफौर्म पर गुणवत्ता वाला काम किया जा रहा है.''

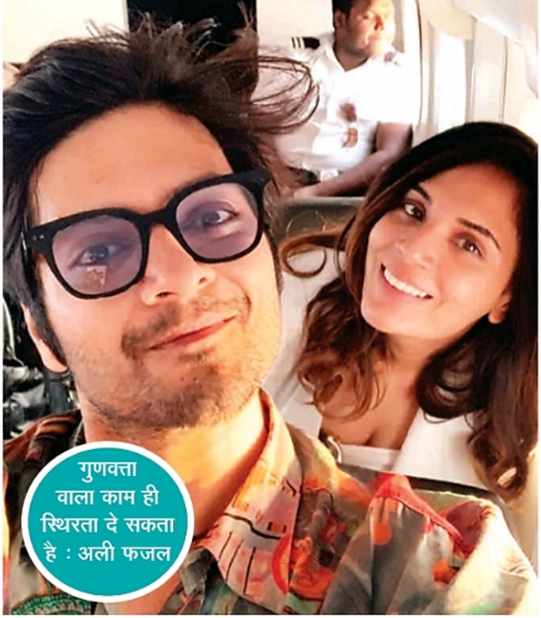

क्यों चर्चा में हैं शादाब सिद्दीकी और सलमान अली खान

'लव इन स्लम' व 'व्हेयर इज नजीब' जैसी लघु फिल्मों तथा 'फख्र से कहो हम मुसलमान हैं', 'राह का तेरी मुसाफिर' व 'पल पल' जैसे करीबन 11 से अधिक म्यूजिक वीडियो के निर्देशक शादाब सिद्दीकी इन दिनों एक बार फिर चर्चा में हैं. इस बार उन की चर्चा की वजह नया म्यूजिक वीडियो 'खुदा के बाद' है.

गायक सलमान अली द्वारा स्वरबद्ध यह गीत यूट्यूब पर इस कदर वायरल हुआ कि इस को महज 24 घंटे के अंदर 28 लाख से अधिक व्यूज मिल गए. एलिगेंट आई प्रोडक्शन एवं परफैक्ट टाइम पिक्चर द्वारा निर्मित गीत 'खुदा के बाद...' के म्यूजिक वीडियो में भविन भानुशाली, वैष्णवीराव और जो खान हैं. इस गाने की खासीयत यह है कि इस में सलमान अली की मदहोश कर देने वाली आवाज के साथ ही प्यार, इश्क व तड़प का तड़का भी है.

म्यूजिक वीडियो 'खुदा के बाद' में एक खूबसूरत कपल की कहानी है. इस में लड़की को गलतफहमी हो जाती है, जिस के चलते वह अपने प्रेमी पर शक करने लगती है. इस शक से परेशान हो कर वह अपने प्रेमी पर हाथ उठाने के साथ ही प्रेमी से दूरी बना लेती है.

प्रेमीप्रेमिका दोनों बिछुड़ जाने के बाद बेचैन व परेशान रहने लगते हैं. दोनों एकदूसरे के लिए तड़पते रहते हैं. तभी दोनों कपल के बिछुड़ने के बाद अचानक से कुछ ऐसा होता है कि लड़की को अपनी गलती पर पछताना पड़ता है. इस के बाद क्या होता है, यह तो गाने में ही पता चलेगा.

भूमि को लीक से हट कर फिल्में करना पसंद

'दम लगा के हईशा', 'टौयलेट एक प्रेम कथा', 'सांड़ की आंख', 'शुभ मंगल सावधान' जैसी लीक से हट कर विषयों पर बनी फिल्मों में अभिनय करती आ रहीं अभिनेत्री भूमि पेडणेकर का दावा है कि सिनेमा से जुड़ने से पहले ही उन्होंने तय कर लिया था कि उन्हें सिर्फ लीक से हट कर फिल्में करनी हैं.

वे कहती हैं, ''मैं आम मसाला फिल्में कभी नहीं करना चाहती थी. मैं खुशी महसूस करती हूं कि जिन फिल्मकारों ने कंटैंट के आधार पर सिनेमा में बदलाव लाने की सोची, उन्हें एहसास हुआ कि मैं उन की फिल्मों का हिस्सा बनने के लायक हूं. इस ने मुझे खुशी देने के साथ ही मेरे अंदर आत्मविश्वास पैदा किया.

''मैं सदा लीक से हट कर सिनेमा ही करना चाहती थी. मैं ने कैरियर की शुरुआत से ही अलग तरह के कंटैंट वाली फिल्में कीं. मैं ने समाज में हौआ समझे जाने वाले विषय पर आधारित फिल्में कीं. मैं चाहती हूं कि फिल्मकारों के साथसाथ दर्शक भी कहें कि भूमि किसी भी किरदार को करने से पीछे नहीं रह सकती.''

–शांतिस्वरूप त्रिपाठी ●

लेख • सुनील शर्मा

ITALIA
QATAR

टोक्यो ओलिंपिक

खेल को अर्श और फर्श पर ले जाने वाले 2 खिलाड़ी

टोक्यो ओलिंपिक में इस बार कई किस्से ऐसे रहे जिन्हें कई वर्षों तक याद रखा जाएगा. उन में से दो किस्से ऐसे रहे जिन्होंने खिलाड़ी को अर्श और फर्श पर पहुंचाया है.

इस बार के ओलिंपिक खेलों में 2 अनोखी घटनाएं देखने को मिलीं. पहली घटना में एक खिलाड़ी ने वह कारनामा किया कि उस की दुनियाजहान में खूब वाहवाही हुई, जबकि दूसरी घटना में एक खिलाड़ी ने अपनी करतूत से खेल को शर्मसार कर दिया.

पहला मामला ऊंची कूद यानी हाई जंप से जुड़ा है. दरअसल, 30 साल के मुताज बरशीम और 29 साल के गियानमार्को टेंबरी ने हाई जंप के फाइनल में 2.37 मीटर जंप के साथ मुकाबला खत्म किया था. वे दोनों खिलाड़ी 3–3 बार 2.39 मीटर जंप की कोशिश में नाकाम रहे थे. इस टाई पर ओलिंपिक रैफरी ने दोनों को 'जंप औफ' रूल के बारे में बताया कि इस 'जंप औफ' में जो जीतेगा, गोल्ड मैडल उस का होगा.

रैफरी के प्रस्ताव के बाद मुताज बरशीम ने उन से पूछा कि अगर आगे मुकाबला न हो तो क्या उन दोनों को गोल्ड मिल सकता है?

इस पर रैफरी ने हामी भरी, तो यह सुनते ही मुताज बरशीम तुरंत गियानमार्को टेंबरी के पास गए और हाथ मिला कर गोल्ड मैडल की जीत का गोल्डन हैंडशेक किया.

इतना सुनते ही खुशी के मारे गियानमार्को टेंबरी ने मुताज बरशीम को गले से लगा लिया और तकरीबन उन पर कूद पड़े. इस के बाद उन दोनों ने पूरे मैदान का चक्कर लगाया.

यह वाकई एक ऐतिहासिक पल था जब

ओलिंपिक हाई जंप में इन 2 दोस्तों ने मैच टाईब्रेकर में ले जाने के बजाय गोल्ड मैडल साझा करने का सुनहरा रास्ता चुना.

गौरतलब है कि मुताज बरशीम और गियानमार्को टेंबरी दोनों अच्छे दोस्त हैं. मुताज बरशीम ने लंदन और रियो ओलिंपिक में सिल्वर मैडल जीता था. इस के अलावा वे साल 2017 और साल 2019 में 2 वर्ल्ड चैंपियनशिप का खिताब भी हासिल कर चुके हैं.

इटली के गियानमार्को टेंबरी के पैर में साल 2016 के रियो ओलिंपिक से पहले चोट लग गई थी. चोट के बाद वे खेलों में अच्छी वापसी चाहते थे और उन्हें अब गोल्ड मैडल मिल गया है. भावुक गियानमार्को टेंबरी ने बताया कि उन्होंने इस पल का कई बार सपना देखा, जो अब पूरा हुआ है.

खेलभावना की इस शानदार मिसाल के बाद उस मामले पर गौर करते हैं, जिस ने टोक्यो ओलिंपिक का मजा किरकिरा कर दिया.

हुआ यों कि मैराथन के दौरान अपने साथ दौड़ रहे धावकों से आगे निकलने के लिए एथलीट मोरहाद अमदौनी ने तमाम एथलीटों के लिए रखी पानी की बोतलों को गिरा दिया. उन की यह करतूत वहां मौजूद कैमरे में कैद हो गई.

टोक्यो में भीषण गरमी के बावजूद एथलीटों को किसी भी तरह की छूट नहीं दी गई थी, लेकिन उन के लिए आयोजकों ने ट्रैक के किनारे मेज पर पानी की बोतलें रखी थीं, ताकि एथलीट दौड़ते हुए ही पानी की बोतल उठा सकें और पिएं या फिर सिर पर उड़ेल लें, ताकि प्यास और गरमी से बचे रहें.

मोरहाद अमदौनी
FRANCE
müller
AMDOUNI

लेकिन मोरहाद अमदौनी ने पानी की बोतल उठाने की जगह बाकी बोतलों को जानबूझ कर गिरा दिया. शायद उस की मंशा थी कि कुछ खिलाड़ी गिरी बोतलों में उलझ कर पीछे रह जाएं. ऐसा कितना हुआ, यह तो पता नहीं, पर सोशल मीडिया पर यह वीडियो सामने आने के बाद इस खिलाड़ी की खूब किरकिरी हुई.

एक शख्स ने अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा, ''टोक्यो ओलिंपिक में सब से घटिया करतूत करने वाले इस फ्रांसीसी खिलाड़ी धावक मोरहाद अमदौनी को गोल्ड मैडल मिलना चाहिए, जिस ने जानबूझ कर अपने साथियों का पानी गिरा दिया.''

वैसे, फ्रांसीसी खिलाड़ी अमदौनी की इस घटिया हरकत से कोई खास फर्क नहीं पड़ा, क्योंकि वे खुद 2 घंटे, 14 मिनट और 33 सैकंड में रेस पूरी करने के बाद 17वें नंबर पर रहे, जबकि उन के पीछे नीदरलैंड्स के आब्दी नगेई थे, जिन्होंने 2 घंटे, 9 मिनट और 58 सैकंड के साथ अपनी रेस पूरी की और सिल्वर मैडल पर कब्जा जमाया.

केन्या के एलियुड किपचोगे ने 2 घंटे, 8 मिनट और 38 सैकंड के समय में ओलिंपिक पुरुष मैराथन का खिताब अपने पास ही बरकरार रखा. ●

टोक्यो पैरालिंपिक में चमके भाविना, निषाद और विनोद

भाविना पटेल

निषाद कुमार

विनोद कुमार

ओलिंपिक खेलों में इस बार भारत ने कुल 7 मैडल जीते जो अपनेआप में रिकौर्ड है. उस के बाद टोक्यो में ही पैरालिंपिक गेम्स हुए, जिन में 29 अगस्त तक भारत 2 सिल्वर मैडल हासिल कर चुका था और एक कांसे का तमगा भी.

पुरुषों की हाई जंप में निषाद कुमार ने सिल्वर मैडल जीता. उन्होंने फाइनल मुकाबले में अपने व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ और एशियाई रिकौर्ड की बराबरी करने के साथ ही दूसरे प्रयास में 2.06 मीटर की जंप लगाई.

इस से पहले टेबल टैनिस में भाविना पटेल और दुनिया की नंबर वन खिलाड़ी चीन की झोउ यिंग के बीच गोल्ड मैडल मैच हुआ था, जिसे झोउ यिंग ने 3–0 से अपने नाम किया. इस के साथ ही भाविना पटेल ने सिल्वर मैडल अपने नाम किया.

अपना पहला ओलिंपिक खेल रहे विनोद कुमार ने 19.91 मीटर दूर डिस्कस फेंका और कांसे का तमगा जीता. यह एशियाई रिकौर्ड भी है. एफ 52 कैटेगरी में खेल रहे विनोद 41 साल के हैं. इस कैटेगरी में उन ऐथलीट्स को शामिल किया जाता है, जिन की मांसपेशियों में कमजोरी होती है. अंग की कमी, पैर की लंबाई असमान होती है. ऐसे खिलाड़ी ह्वीलचेयर पर बैठ कर प्रतिस्पर्धा करते हैं. गर्भाशय, रीढ़ की हड्डी की चोट जैसे खिलाड़ी भी इसी कैटेगरी में शामिल होते हैं.

–प्रतिनिधि ●

Small Screen

राम कपूर की जगह लेंगे नकुल

'बड़े अच्छे लगते हैं 2' शो में नकुल मेहता की अहम भूमिका है. इस से पहले वाले सीजन में टीवी के मशहूर कलाकार राम कपूर और साक्षी तंवर ने लीड भूमिका निभाई थी, जिन्हें सीजन 2 मे नकुल मेहता और दिशा परमार ने रिप्लेस किया है. दिशा इस से पहले 'प्यार का दर्द है मीठामीठा प्याराप्यारा' में काम कर चुकी हैं. दोनों इस शो में राम और प्रिया की भूमिका में नजर आने वाले हैं.

एक इंटरव्यू में नकुल ने शो को ले कर कहा था कि ''यह शो उन पर एक बहुत बड़ा दायित्व है.'' दरअसल, सीजन 2 एक लव आधारित शो होगा जिस में दोनों को शादी के बाद प्यार होता है. यह मोटामोटी आज की कहानी होगी. शो में दोनों के उतारचढ़ाव दिखाए जाएंगे.

नकुल कहते हैं, ''अगर ईमानदारी से कहूं, अब तक बहुत अच्छा रहा है. मैं इस शो को ले कर बहुत उत्साहित हूं. मैं चाहता हूं कि मैं इस शो के साथ न्याय करूं. मुझे लगता है कि इस उम्र में इस भूमिका को निभाना मेरे ऊपर एक बड़ी जिम्मेदारी है.''

वे आगे अपने सह कलाकार दिशा परमार के बारे में बताते हैं, ''मैं उन्हें पिछले एक दशक से ज्यादा समय से जानता हूं. हमारी दोस्ती बहुत अच्छी है. हम एकदूसरे का सम्मान करते हैं. मैं ने पिछली बार उन के साथ 8 वर्ष पहले काम किया था. पहले दिन ही हमारी बौंडिंग अच्छी हो गई थी. हमारे अच्छे संबंध हैं.''

'न जाने किस नरक से गुजरी हैं शिल्पा'

बौलीवुड अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी इन दिनों काफी मुशकिल समय से गुजर रही हैं. शिल्पा के पति व बिजनैसमैन राज कुंद्रा पर एडल्ट वीडियो बनाने का आरोप लगा है और 19 अगस्त को उन्हें मुंबई पुलिस द्वारा गिरफ्तार भी कर लिया गया.

यह हमारे समाज की हकीकत है कि यदि पति कोई गलत काम करे तब भी उस का हरजाना पत्नी को ही भुगतना पड़ता है. सो, शिल्पा को राज कुंद्रा के चलते शर्मिंदा और ट्रोल होना पड़ा, जिस के चलते उन्होंने पब्लिक स्पेस से दूरी बना ली थी.

करीब एक महीने बाद शिल्पा शेट्टी ने 'सुपर डांस 4' के मंच पर जज के तौर पर अपनी वापसी की जहां वे भावुक हुई थीं. उन्होंने एक कंटैस्टैंट के परफौर्मैंस पर अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा, ''महिलाओं को अभी भी अपने पति के बाद अपने अधिकारों, आइडैंटिटी और बच्चों के लिए लड़ना पड़ता है.''

हाल ही में शो के दूसरे जज अनुराग बासु ने मीडिया वैबसाइट को दिए इंटरव्यू में शिल्पा की स्थिति को ले कर अपनी प्रतिक्रिया दी. वे शिल्पा को अपनी अच्छी दोस्त मानते हैं. उन्होंने कहा, ''मैं ने उन्हें एक वार्म दिया. सब ने उन्हें गले लगाया क्योंकि हम नहीं जानते वे किस नरक से गुजरी हैं. कई चीजें हुईं, इसलिए उन से इस बारे में पूछना ठीक नहीं लगा.''

बता दें कि शिल्पा चर्चित रिऐलिटी शो में वापसी कर चुकी हैं और ऐसा कर उन्होंने एक महिला होने के नाते बेहद हिम्मत दिखाई है.

रौशेल राव की वापसी

टीवी इंडस्ट्री में कौमेडी का सब से चर्चित शो 'द कपिल शर्मा शो' एक बार फिर से दर्शकों को गुदगुदाने आ चुका है. इस बार शो में पुराने किरदारों के साथ नए किरदारों का मिक्सचर बनाया गया है.

ऐसे ही इस बार शो में 'लौटरी' का किरदार निभाने वाली एंकर व ऐक्ट्रैस रौशेल राव की वापसी हुई है. हाल ही में उन्होंने शो में अपनी वापसी को ले कर एक इंटरव्यू दिया, जिस में उन्होंने शो और कपिल शर्मा को ले कर अपनी बातें रखीं, साथ ही वापसी पर अपनी एक्साइटमैंट भी जाहिर की.

रौशेल ने कहा, ''कपिल के साथ काम करना काफी चैलेंजिंग है. जब भी वे आसपास होते हैं तो मैं काफी घबरा जाती हूं. भले ही मैं कितनी भी तैयारी कर लूं, थोड़ीबहुत घबराहट मेरे अंदर रहती ही रहती है. मुझे पता रहता है कि मेरे पास मात्र 5 लाइनें हैं, जिन के लिए मैं काफी तैयारी भी करती हूं.''

''मैं बहुत रिहर्सल करती हूं, क्योंकि मैं कुछ भी बिगाड़ना नहीं चाहती. मैं ने उन से काफीकुछ सीखा भी है. वे बहुत अच्छे हैं और कई बार मेरे लिए कवरअप भी करते हैं. उन सभी को देखना मेरे लिए शानदार और प्रेरित करने वाला है.''

रौशेल कपिल शर्मा शो से पहले बिग बौस का भी हिस्सा रह चुकी हैं. लेकिन उन्हें शोहरत कपिल शर्मा शो से मिली. शो करने के चलते उन की पौपुलैरिटी इतनी थी कि उन्हें 'लौटरी' कह कर पुकारा जाने लगा था.

वे कहती हैं, ''शो को करने के बाद मुझे एहसास हुआ कि लोगों ने मुझे 'आईपीएल' और 'बिग बौस' वाली रौशेल की जगह 'द कपिल शर्मा शो' की लौटरी के रूप में पहचानना शुरू कर दिया. अब लोग मुझे केवल लौटरी ही बुलाते हैं.''

–प्रतिनिधि ●

ZEE LABORATORIES

करोड़ो लोगो का आज़माया

MYFAIR Cream

झुर्रियां काले घेरे छाईया

MYFAIR

रूप संवारे, त्वचा निखारे

- क्रीम
- साबुन
- फेस वाश
- सन स्क्रीन

सम्पूर्ण कॉस्मेटिक रेंज
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध
9896134500

A Product of
ZEE LABORATORIES LTD.

Online Shopping:
www.myfair.in

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाए

Multivitamin, Multiminerals & Antioxidant Soft Gelatin Capsules
MultipreX
Advanced Formula for Strong Immunity
ZEE DRUGS

MultipreX™

Advanced Formula For
Strong Immunity

कैप्सूल, सिरप,
ओरल ड्राप्स, पाउडर

Multivitamin, Multiminerals & Antioxidants

रोजाना सेवन करे
9896134500
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध

प्रतिरक्षा में सुधार, विटामिन और मिनरल की कमी को पूरा कर रोगों से बचाए

(REGISTERED) RNI 6502/60 DL(c)-14/1090/2021-23 WPP U(c) 149/18/2021-23 P.O. SRT Nagar, ND-55 Posting Dt. 14 to 20 Published on 20/08/2021, Pgs. 48

PARLE
20-20™
TASTE KA RICHNESS
TOTAL AWESOMENESS
PARLE 20-20 CASHEW COOKIES New Improved
PARLE 20-20 BUTTER COOKIES New Improved
BISCUITS